SAMPLETEST

25 Mar 2015 04:13 PM

Durgapur

Model: 10-Years-Prediction

Order No: 107537801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**25/03/2015**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**16:13:18 घंटे**
इष्ट	26:20:16 घटी
स्थान	**Durgapur**
देश	India

अक्षांश	23:39:18 पूर्व
रेखांश	87:11:23 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:18:46 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:32:03 घंटे
वेलान्तर	-00:06:07 घंटे
साम्पातिक काल	04:42:22 घंटे
सूर्योदय	05:41:11 घंटे
सूर्यास्त	17:53:56 घंटे
दिनमान	12:12:45 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	10:23:42 मीन
लग्न के अंश	18:12:20 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**रोहिणी - 3**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	आयुष्मान
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वी-वीरसिंह
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1937	चैत्र	4
पंजाबी	संवत : 2071	चैत्र	12
बंगाली	सन् : 1421	चैत्र	10
तमिल	संवत : 2071	पंगुनी	11
केरल	कोल्लम : 1190	मीनम	11
नेपाली	संवत : 2071	चैत्र	11
चैत्रादि	संवत : 2072	चैत्र	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2072	चैत्र	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 24:53:07
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 25:56:35 घंटे
जन्म योग _____: रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग ___: प्रीति
योग समाप्ति काल _____: 13:23:13 घंटे
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण ___: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 13:10:21 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 35:29:52
भभोग _____: 59:48:04
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 4 वर्ष 0 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

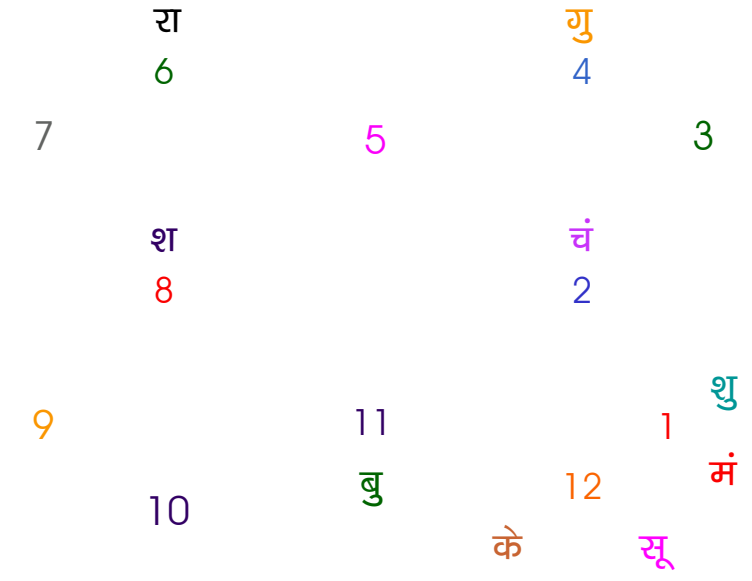

चन्द्र कुंडली

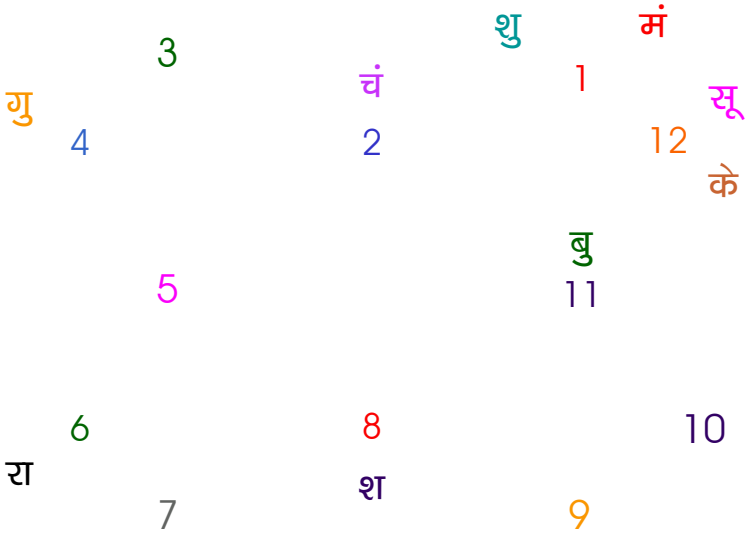

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

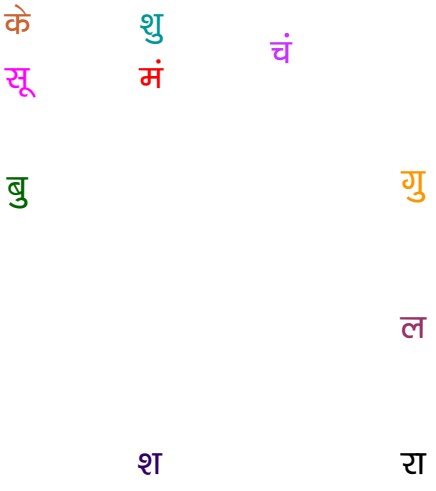

लग्न कुंडली

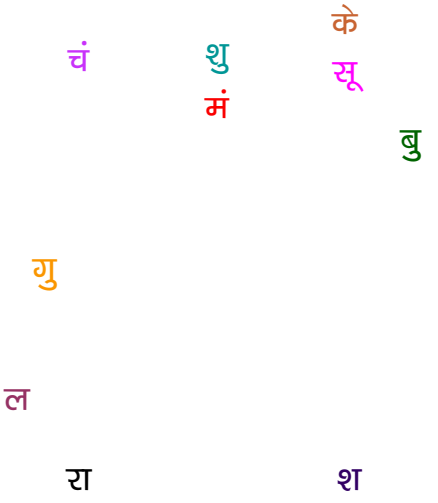

विंशोत्तरी
चन्द्र 4वर्ष 0मा 9दि

चन्द्र

25/03/2015

04/04/2129

चन्द्र	03/04/2019
मंगल	03/04/2026
राहु	03/04/2044
गुरु	03/04/2060
शनि	03/04/2079
बुध	03/04/2096
केतु	04/04/2103
शुक्र	04/04/2123
सूर्य	04/04/2129

योगिनी
सिद्धा 2वर्ष 9मा 24दि

संकटा

17/01/2018

17/01/2026

संकटा	29/10/2019
मंगला	18/01/2020
पिंगला	28/06/2020
धान्या	27/02/2021
भ्रामरी	17/01/2022
भद्रिका	27/02/2023
उल्का	28/06/2024
सिद्धा	17/01/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	18:12:20	327:54:05	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	---
सूर्य			मीन	10:23:42	00:59:29	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			वृष	17:58:01	13:20:09	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
मंगल			मेष	01:17:22	00:44:47	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मूलत्रिकोण
बुध		अ	कुंभ	25:45:59	01:44:41	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
गुरु	व		कर्क	18:50:24	00:02:41	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	उच्च राशि
शुक्र			मेष	15:34:20	01:11:50	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	सम राशि
शनि	व		वृश्चि	10:45:38	00:01:05	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
राहु			कन्या	15:56:13	00:00:31	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
केतु			मीन	15:56:13	00:00:31	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मूलत्रिकोण
हर्ष			मीन	21:41:37	00:03:23	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	---
नेप			कुंभ	14:12:03	00:02:06	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	---
प्लूटो			धनु	21:20:37	00:00:42	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			वृष	18:01:07	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:04:14

लग्न-चलित

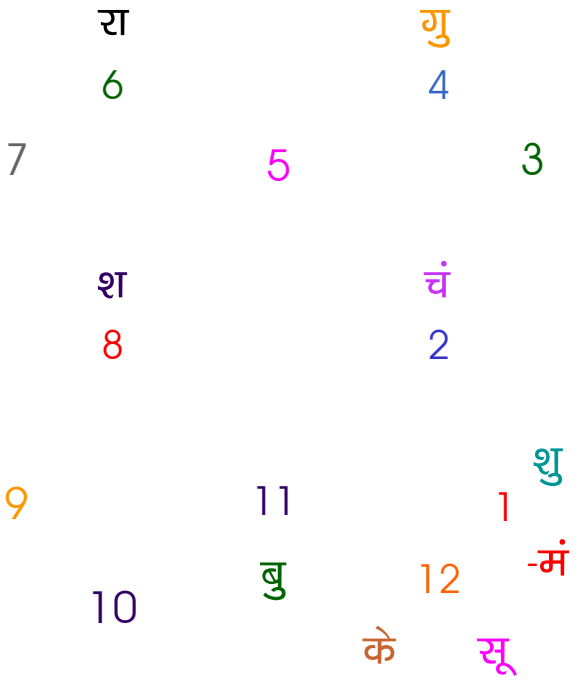

चन्द्र कुंडली

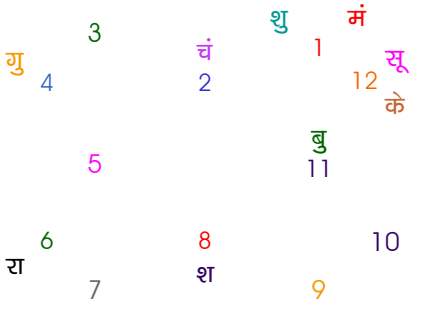

नवमांश कुंडली

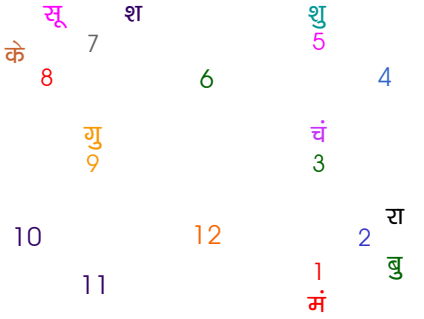

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	03:10:28	सिंह	18:12:20
2	कन्या	03:10:28	कन्या	18:08:35
3	तुला	03:06:43	तुला	18:04:51
4	वृश्चिक	03:02:59	वृश्चिक	18:01:07
5	धनु	03:02:59	धनु	18:04:51
6	मकर	03:06:43	मकर	18:08:35
7	कुम्भ	03:10:28	कुम्भ	18:12:20
8	मीन	03:10:28	मीन	18:08:35
9	मेष	03:06:43	मेष	18:04:51
10	वृष	03:02:59	वृष	18:01:07
11	मिथुन	03:02:59	मिथुन	18:04:51
12	कर्क	03:06:43	कर्क	18:08:35

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	18:12:20
2	कन्या	16:10:00
3	तुला	16:41:26
4	वृश्चिक	18:01:07
5	धनु	18:56:11
6	मकर	19:08:28
7	कुम्भ	18:12:20
8	मीन	16:10:00
9	मेष	16:41:26
10	वृष	18:01:07
11	मिथुन	18:56:11
12	कर्क	19:08:28

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

भाव कुंडली

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	वृद्ध	मुदित	सभा	8.36	55 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	कौतुक	16.50	25 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	बाल	स्वस्थ	उपवेशन	6.48	42 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	विकल	सभा	0.00	45 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार	दीप्त	गमन	19.39	43 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा	शान्त	कौतुक	3.59	24 %
शनि	पुत्र	आयु	वृद्ध	खल	सभा	1.77	57 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	स्वस्थ	नेत्रपाणि	0.00	14 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	स्वस्थ	गमन	0.00	14 %
कुल						56.08	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

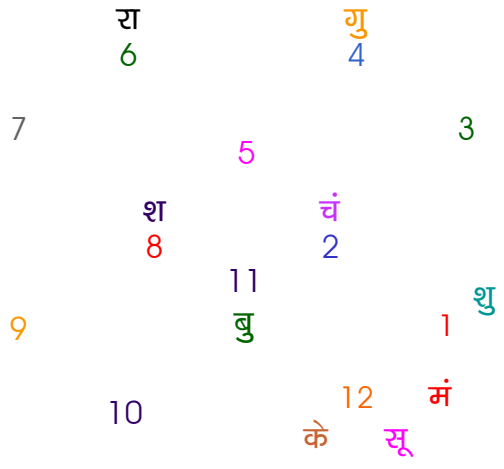

लग्न-चलित

सुदर्शन चक्र

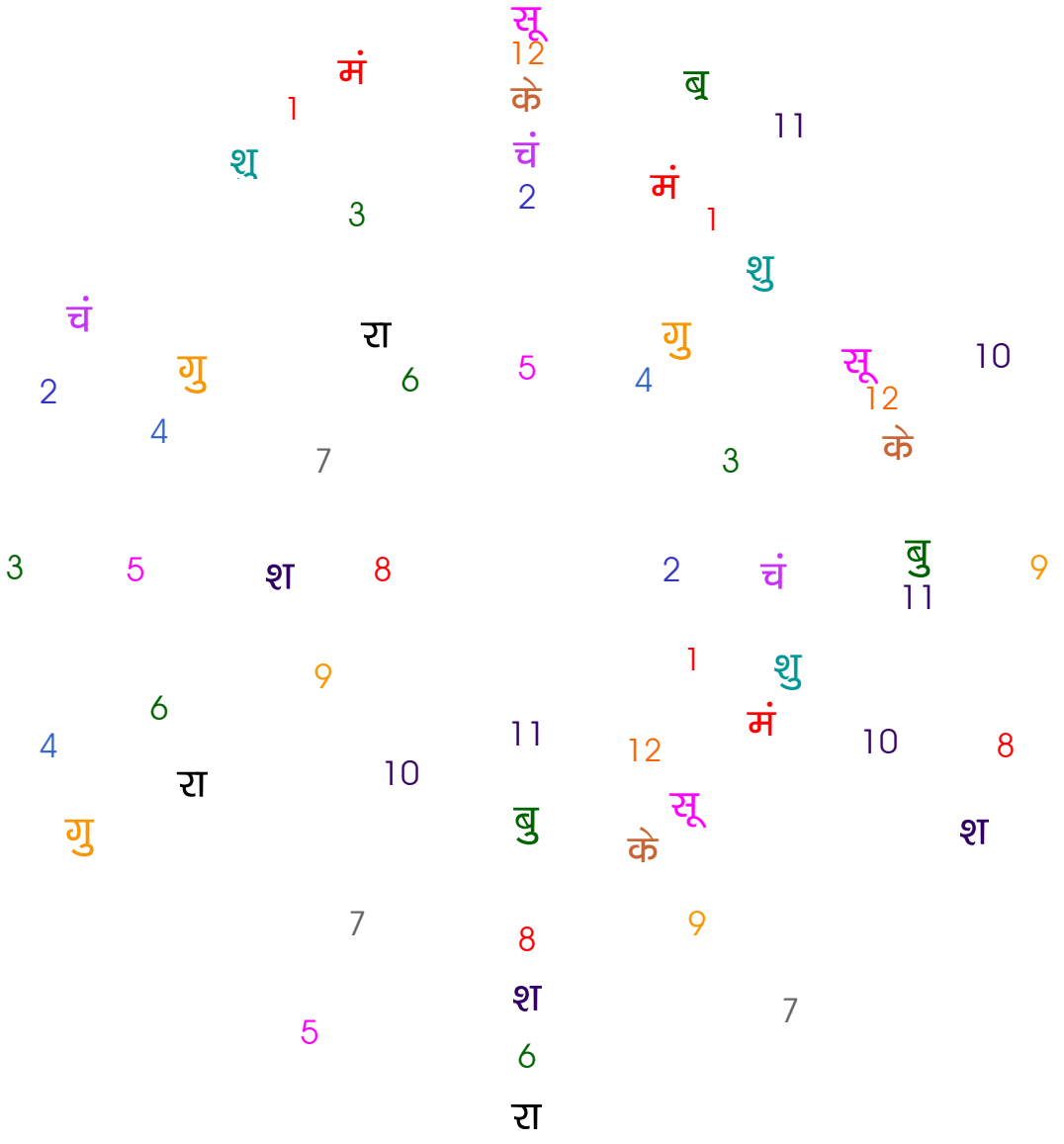

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 0 मास 9 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	10:23:42	गुरु	शनि	सूर्य	चंद्र
चंद्र		वृष	17:58:01	शुक्र	चंद्र	बुध	बुध
मंगल		मेष	01:17:22	मंगलकेतु	शुक्र	चंद्र	
बुध		कुंभ	25:45:59	शनि	गुरु	बुध	शनि
गुरु	व	कर्क	18:50:24	चंद्र	बुध	केतु	मंगल
शुक्र		मेष	15:34:20	मंगलशुक्र	सूर्य	सूर्य	
शनि	व	वृश्चि	10:45:38	मंगलशनि	सूर्य	बुध	
राहु		कन्या	15:56:13	बुध	चंद्र	शनि	शनि
केतु		मीन	15:56:13	गुरु	शनि	गुरु	शुक्र
हर्ष		मीन	21:41:37	गुरु	बुध	सूर्य	राहु
नेप		कुंभ	14:12:03	शनि	राहु	बुध	शनि
प्लूटो		धनु	21:20:37	गुरु	शुक्र	गुरु	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	18:12:20	सूर्य	शुक्र	राहु	राहु
2	कन्या	16:09:36	बुध	चंद्र	शनि	बुध
3	तुला	16:41:00	शुक्र	राहु	शुक्र	शनि
4	वृश्चि	18:00:56	मंगलबुध		बुध	गुरु
5	धनु	18:56:09	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
6	मक	19:08:25	शनि	चंद्र	बुध	गुरु
7	कुंभ	18:12:20	शनि	राहु	चंद्र	मंगल
8	मीन	16:09:36	गुरु	शनि	गुरु	चंद्र
9	मेष	16:41:00	मंगलशुक्र		चंद्र	गुरु
10	वृष	18:00:56	शुक्र	चंद्र	बुध	बुध
11	मिथु	18:56:09	बुध	राहु	चंद्र	केतु
12	कर्क	19:08:25	चंद्र	बुध	केतु	शनि

के.पी. अयनांश : 23:57:52

फॉरच्युना : तुला 25:46:38

लग्न कुंडली

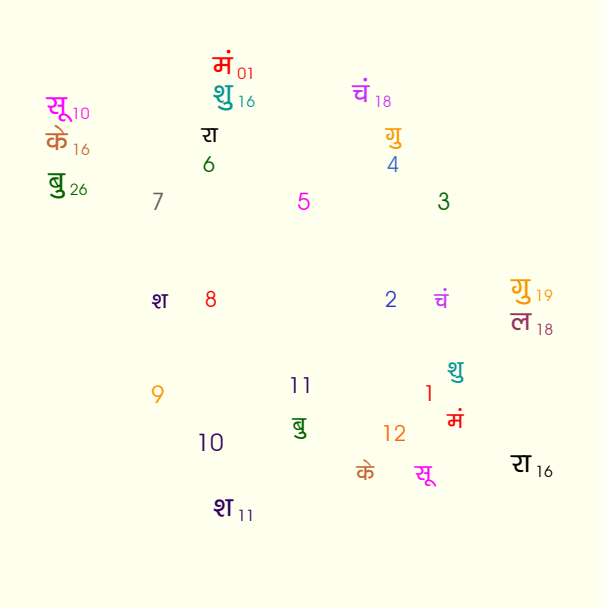

भाव कुंडली

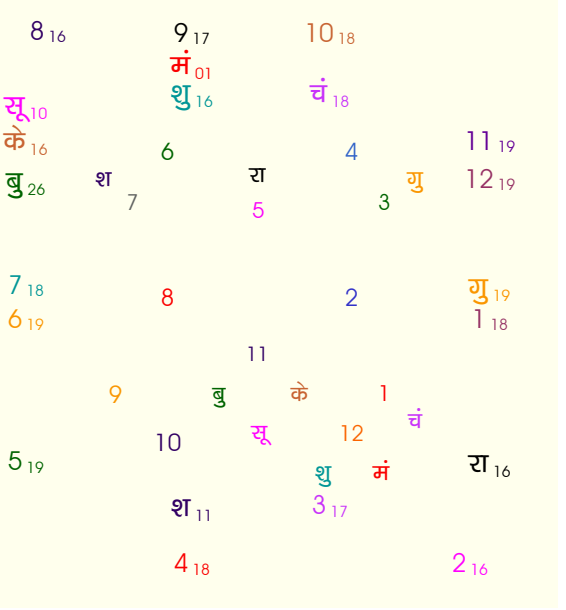

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- राहु,
2	बुध- गुरु-
3	सूर्य, शुक्र, शनि+ केतु,
4	मंगल-
5	बुध- गुरु-
6	सूर्य- शनि, केतु-
7	सूर्य+ मंगल, बुध, गुरु, शनि, केतु+
8	मंगल, बुध- गुरु- शुक्र+
9	चंद्र+ मंगल- राहु,
10	शुक्र,
11	बुध+ गुरु+
12	चंद्र, राहु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 3, 6- 7+
चंद्र	9+ 12,
मंगल	4- 7, 8, 9-
बुध	2- 5- 7, 8- 11+
गुरु	2- 5- 7, 8- 11+
शुक्र	3, 8+ 10,
शनि	3+ 6, 7,
राहु	1, 9, 12-
केतु	3, 6- 7+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	बुध

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	रा	--	सू
2	--	--	गु	बु
3	सू श के	श	शु	शु
4	--	--	--	मं
5	--	--	बु	गु
6	--	--	सू श के	श
7	मं गु	सू बु के	सू श के	श
8	शु	मं शु	बु	गु
9	चं रा	चं	--	मं
10	--	--	शु	शु
11	बु	गु	गु	बु
12	--	--	चं रा	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1	---	मीन	7
चंद्र	12	2,6,10	वृष	9
मंगल	4,9	---	मेष	8
बुध	2,11	4,12	कुम्भ	7
गुरु	5,8	---	कर्क	11
शुक्र	3,10	1,5,9	मेष	8
शनि	6,7	8	वृश्चिक	3
राहु	---	3,7,11	कन्या	1
केतु	---	---	मीन	7

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	6,7	8	3	1	---	7
चंद्र	12	2,6,10	9	2,11	4,12	7
मंगल	---	---	7	3,10	1,5,9	8
बुध	5,8	---	11	2,11	4,12	7
गुरु	2,11	4,12	7	---	---	7
शुक्र	3,10	1,5,9	8	1	---	7
शनि	6,7	8	3	1	---	7
राहु	12	2,6,10	9	6,7	8	3
केतु	6,7	8	3	5,8	---	11

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

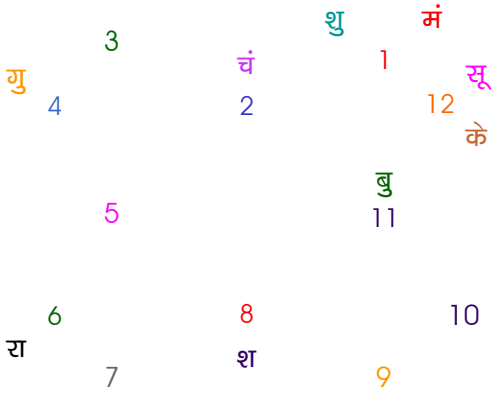

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

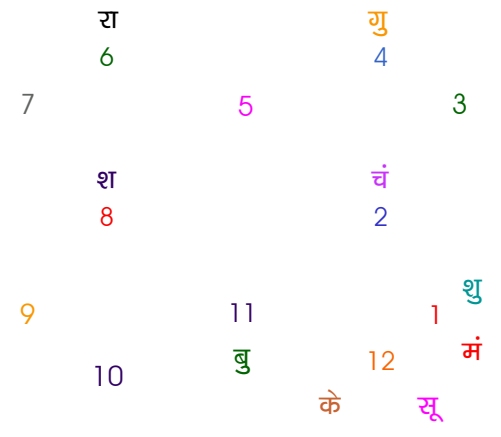

देह विचारः

होरा कुंडली

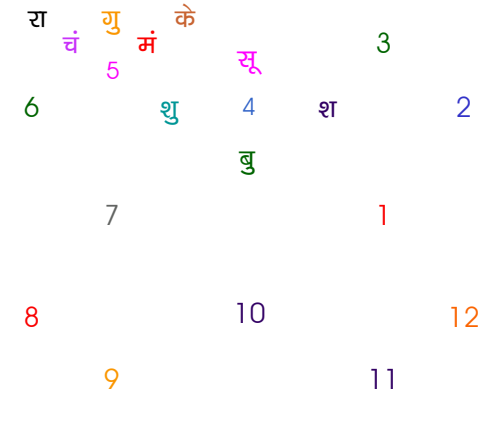

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

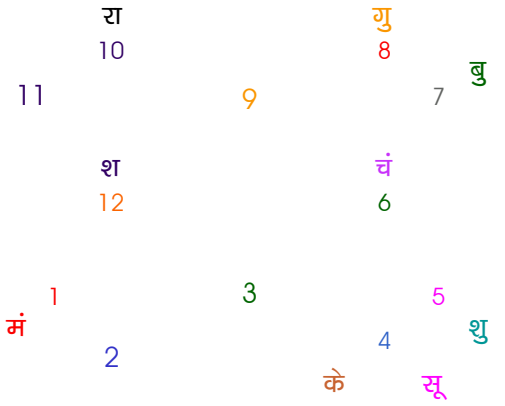

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

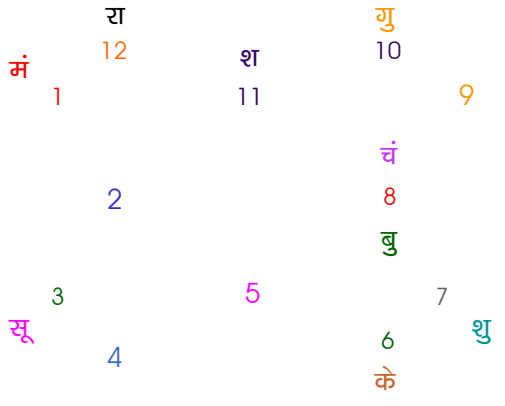

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

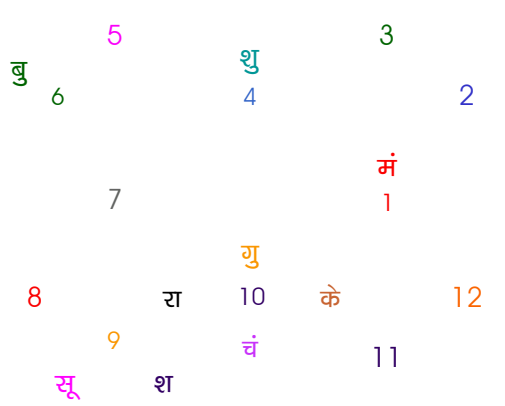

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

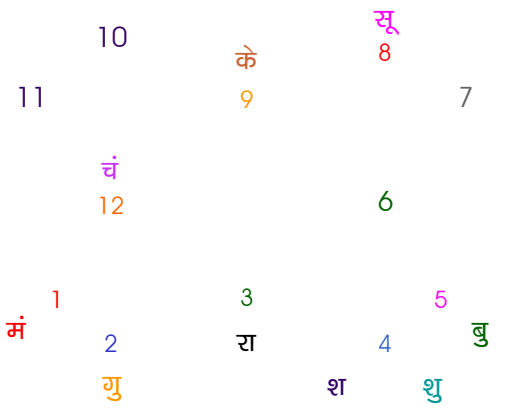

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

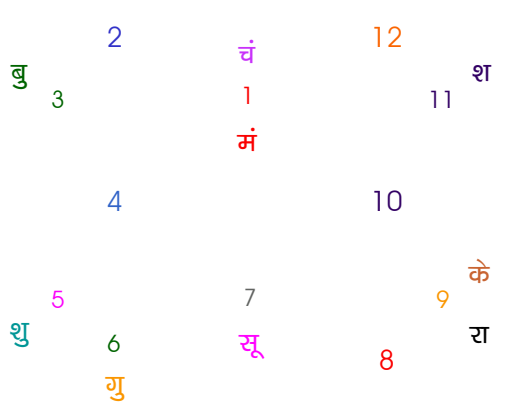

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

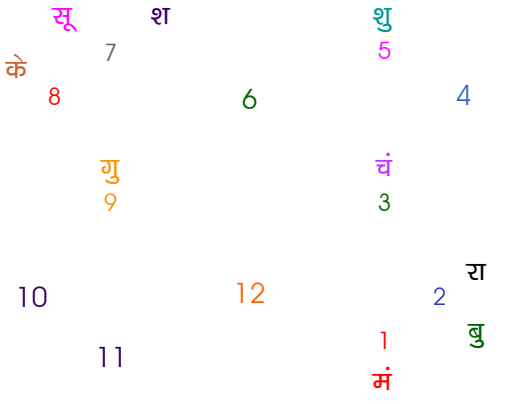

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

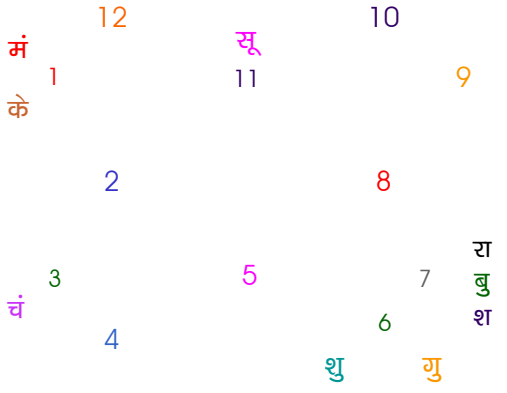

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

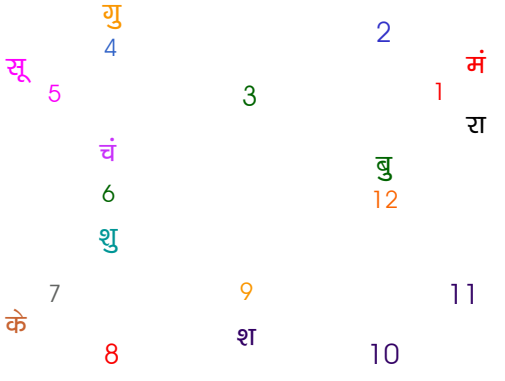

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

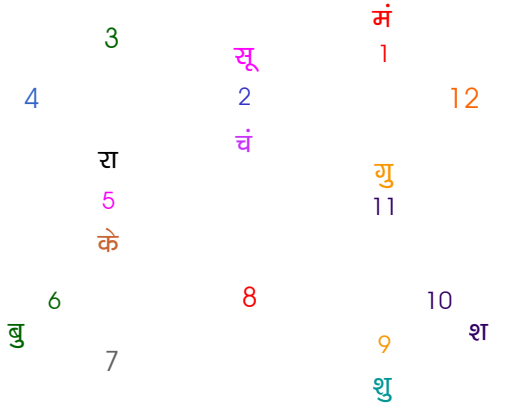

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

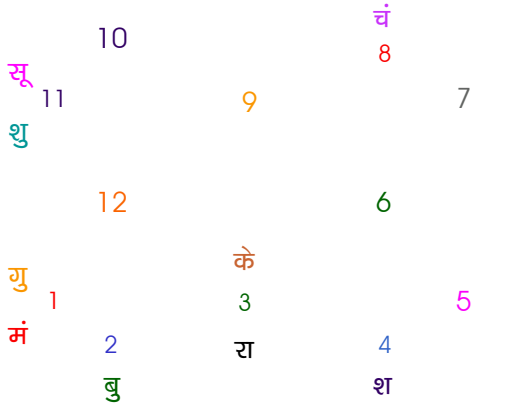

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

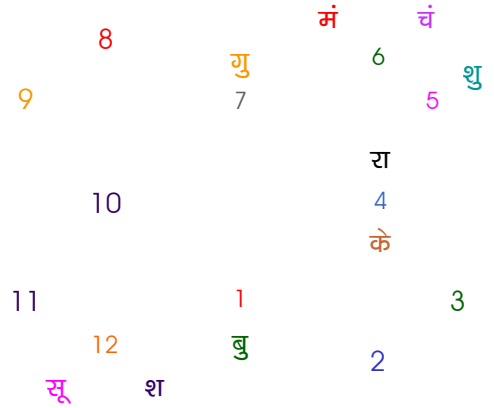

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

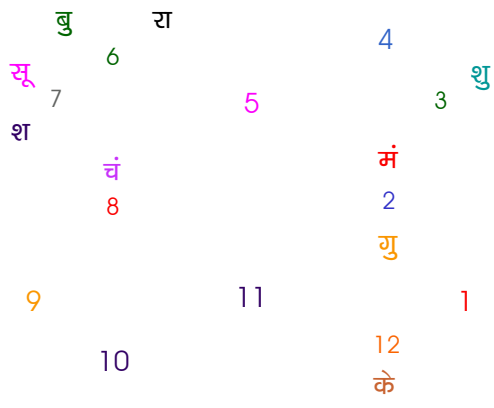

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

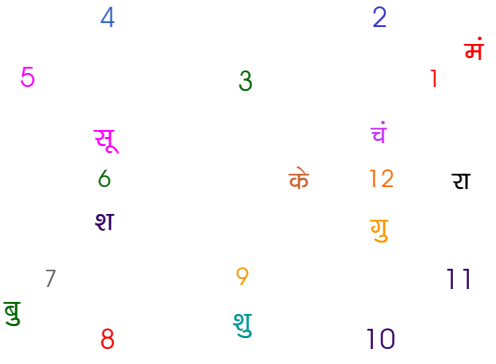

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

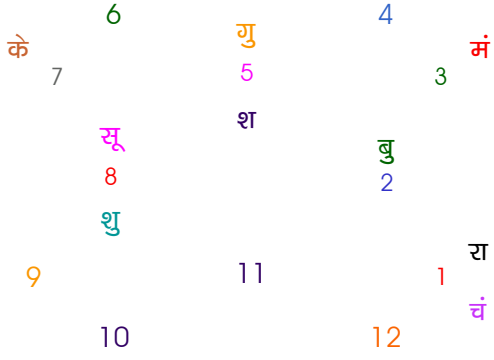

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	मीन	वृष	मेष	कुंभ	कर्क	मेष	वृश्चि	कन्या	मीन
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	धनु	कर्क	कन्या	मेष	तुला	वृश्चि	सिंह	मीन	मक	कर्क
चतुर्थांश	कुंभ	मिथु	वृश्चि	मेष	वृश्चि	मक	तुला	कुंभ	मीन	कन्या
सप्तमांश	धनु	वृश्चि	मीन	मेष	सिंह	वृष	कर्क	कर्क	मिथु	धनु
नवमांश	कन्या	तुला	मिथु	मेष	वृष	धनु	सिंह	तुला	वृष	वृश्चि
दशमांश	कुंभ	कुंभ	मिथु	मेष	तुला	कन्या	कन्या	तुला	तुला	मेष
द्वादशांश	मीन	कर्क	धनु	मेष	धनु	कुंभ	तुला	मीन	मीन	कन्या
षोडशांश	वृष	वृष	वृष	मेष	कन्या	कुंभ	धनु	मक	सिंह	सिंह
विंशांश	धनु	कुंभ	वृश्चि	मेष	वृष	मेष	कुंभ	कर्क	मिथु	मिथु
चतुर्विंशांश	तुला	मीन	कन्या	कन्या	मेष	तुला	सिंह	मीन	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	सिंह	तुला	वृश्चि	वृष	कन्या	वृष	मिथु	तुला	कन्या	मीन
त्रिंशांश	मिथु	कन्या	मीन	मेष	तुला	मीन	धनु	कन्या	मीन	मीन
खवेदांश	मेष	वृश्चि	कन्या	वृष	कुंभ	वृश्चि	धनु	धनु	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	वृश्चि	मीन	तुला	वृष	तुला	सिंह	मीन	धनु	वृश्चि	वृश्चि
षष्ट्यंश	सिंह	वृश्चि	मेष	मिथु	वृष	सिंह	वृश्चि	सिंह	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
मंगल	5 छत्र	6 कुण्डल	8 ब्रहमलोक	10 उच्चश्रवा
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
शनि	1 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
राहु	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.45	16.65	19.80	15.20	16.70	10.35	7.50	10.95	10.95
सप्तवर्ग	14.05	16.43	19.80	15.35	15.65	10.50	7.28	10.33	10.53
दशवर्ग	14.40	15.90	17.35	16.28	12.48	10.90	8.15	8.68	11.93
षोडशवर्ग	13.13	15.98	16.68	16.83	13.63	10.78	8.83	8.03	12.00

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	50	55	39	6	55	54	53
सप्तवर्गज बल	120	158	218	116	124	79	43
ओजयुग्मक बल	15	15	30	15	15	0	15
केन्द्र बल	30	60	15	60	15	15	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	0	15
कुल स्थान बल	215	288	316	198	209	148	186
कुल दिग्बल	37	0	44	3	50	11	28
नतोन्नत बल	38	22	22	60	38	38	22
पक्ष बल	37	75	37	23	23	23	37
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	65	1	43	35	52	49	57
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	140	99	102	163	232	110	222
कुल चेष्टाबल	0	0	8	3	44	35	41
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	0	-12	12	-2	-16	11	-7
कुल षट्बल	453	425	500	390	554	357	479
रूप षट्बल	7.5	7.1	8.3	6.5	9.2	6.0	8.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.2	1.7	0.9	1.4	1.1	1.6
संबंधित पद	3	5	1	7	4	6	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	39.73	35.20	17.62	4.22	49.50	43.57	46.78
कष्ट फल	16.77	13.67	33.13	55.38	8.53	12.37	11.40

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	453	390	357	500	554	479	479	554	500	357	390	425
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	19	35	70	26	21	36	31	25	52	16	10	-10
कुल भाव बल	502	475	467	556	586	555	510	599	602	433	439	435
रूप भाव बल	8.4	7.9	7.8	9.3	9.8	9.2	8.5	10.0	10.0	7.2	7.3	7.3
संबंधित पद	7	8	9	4	3	5	6	2	1	12	10	11

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

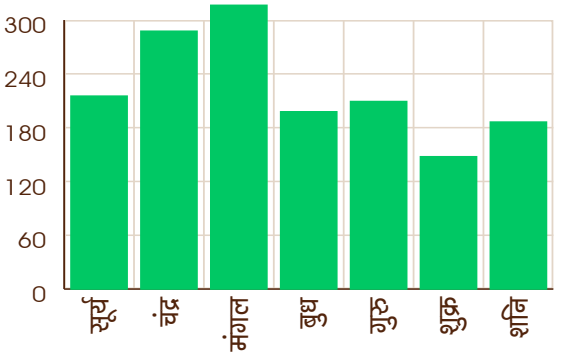

दिग्बल

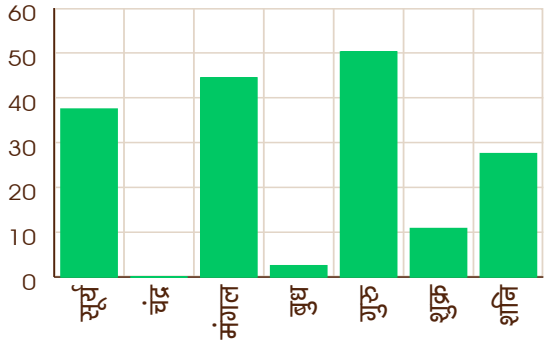

कालबल

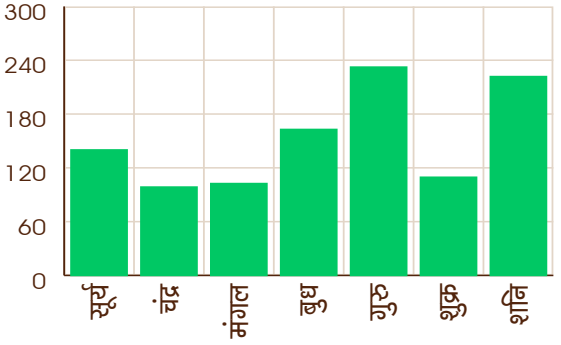

चेष्टाबल

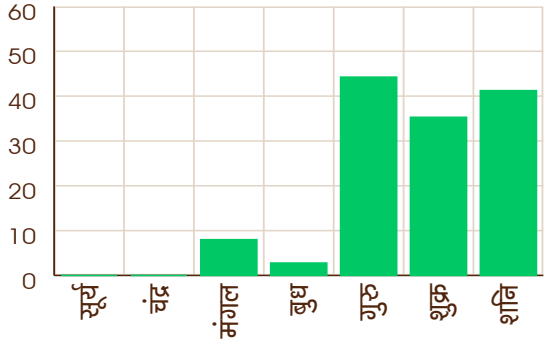

नैसर्गिक बल

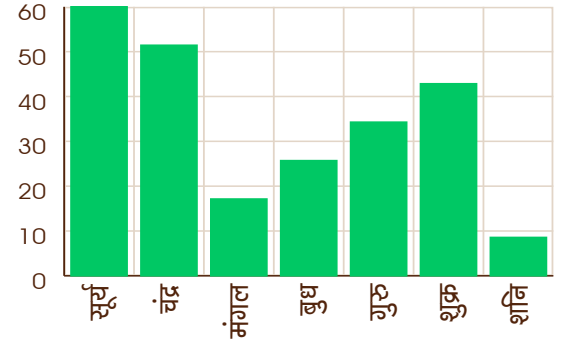

दृग्बल

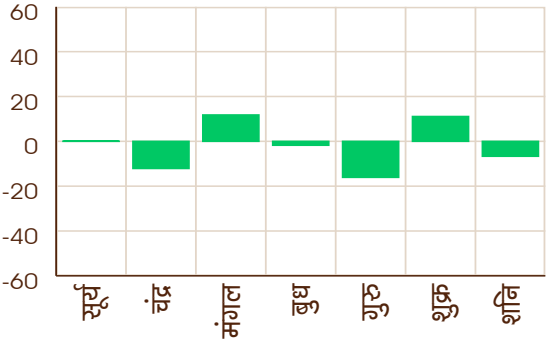

रूप षट्बल

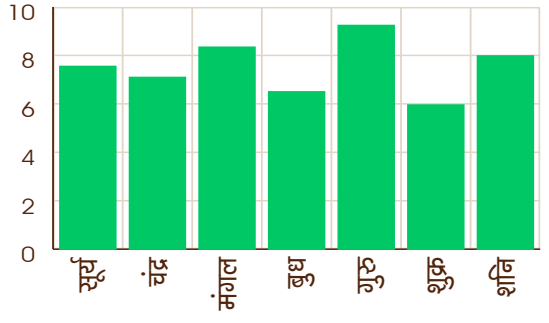

न्यूनतम षट्बल

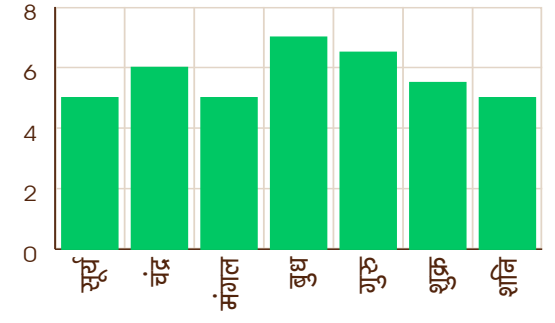

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

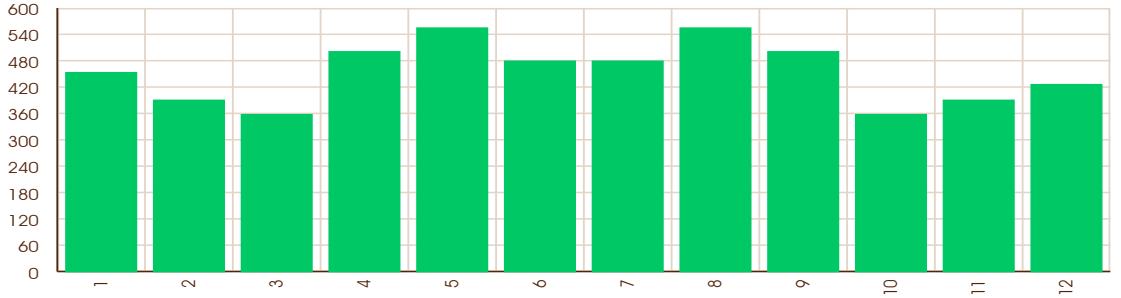

भावदिग्बल

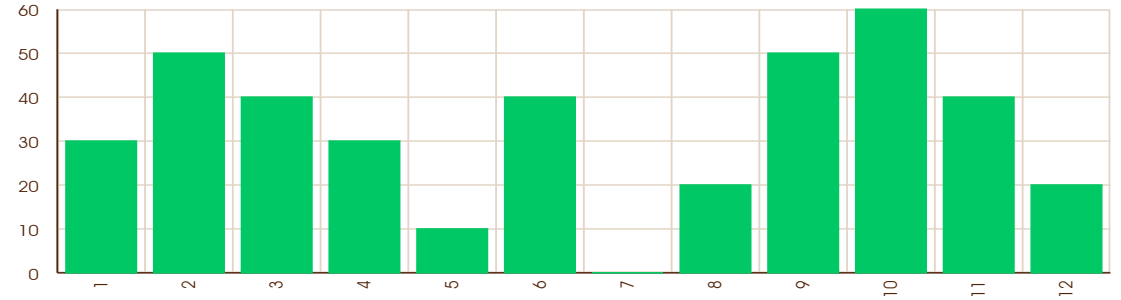

भावदृष्टि बल

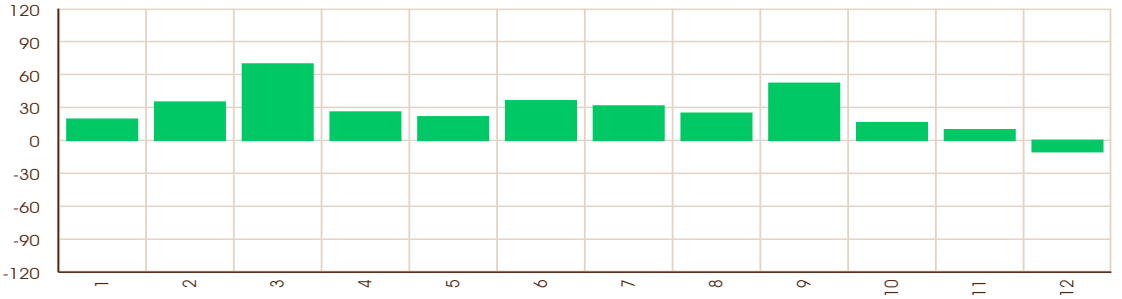

भाव बल

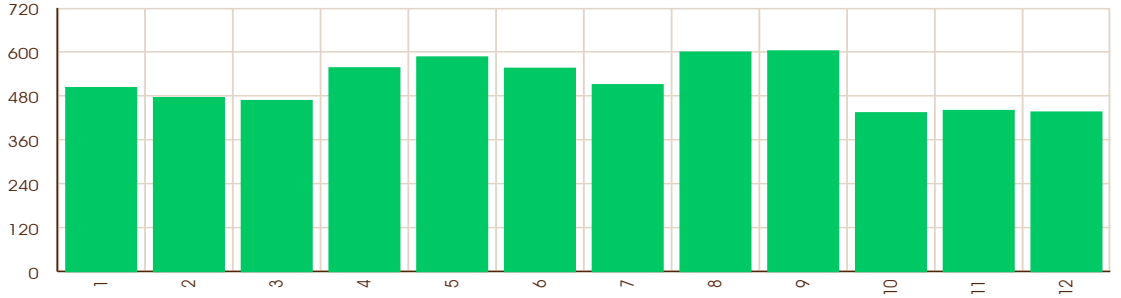

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

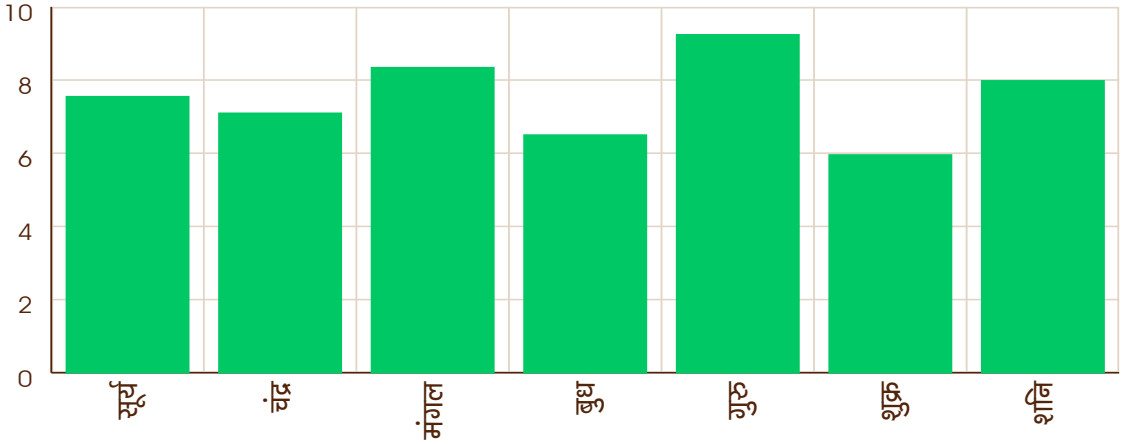

इष्ट - कष्ट फल

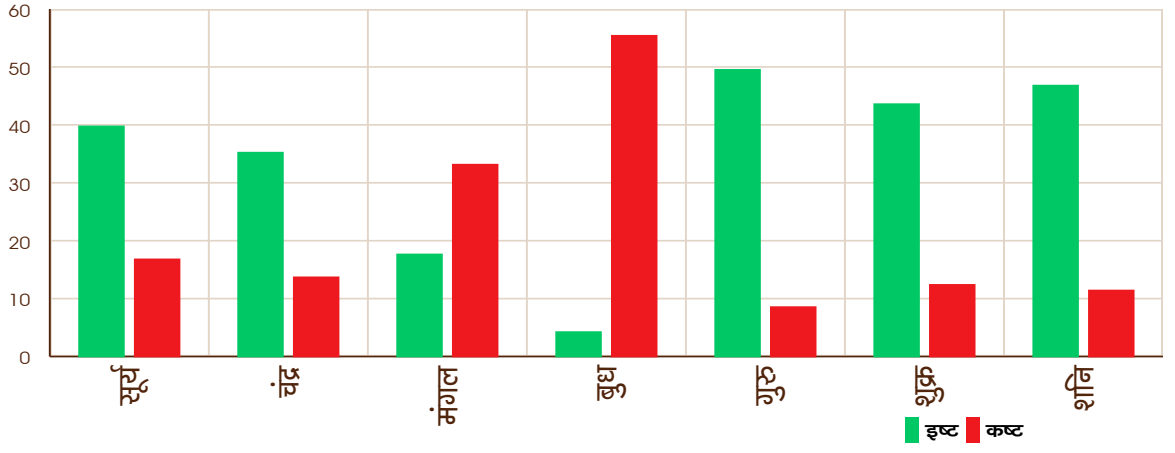

रूप भाव बल

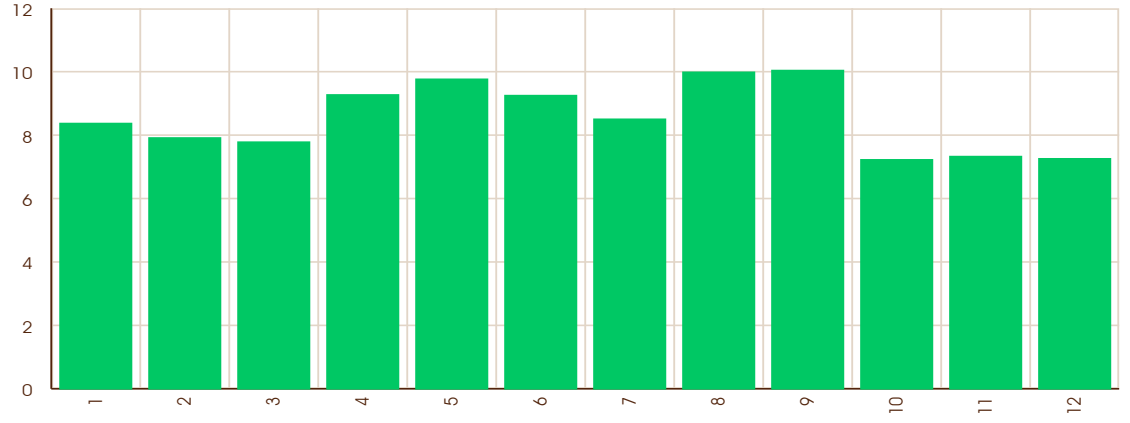

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	18:12:20	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
गुलिक	गु	मिथु	19:33:46	--	--	आर्द्रा	4	6
काल	का	कर्क	09:25:12	--	--	पुष्य	2	8
मृत्यु	मृ	सिंह	20:15:50	--	--	पू०फाल्गुनी	3	11
यमघंटक	यम	वृष	05:22:25	--	--	कृतिका	3	3
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मेष	09:05:49	--	--	अश्विनी	3	1
धूम	धू	कर्क	23:43:42	--	--	आश्लेषा	3	9
व्यतिपात	व्य	धनु	06:16:18	--	--	मूल	2	19
परिवेश	परि	मिथु	06:16:18	उच्च	--	मृगशिरा	4	5
इन्द्रचाप	इ	मक	23:43:42	--	--	धनिष्ठा	1	23
उपकेतु	उप	कुंभ	10:23:42	उच्च	--	शतभिषा	2	24

प्राणपद	:	मेष	20:55:06	कारकाँश लग्न	:	वृष	21:53:54
भाव लग्न	:	सिंह	18:25:16	होरा लग्न	:	मक	26:26:50
घटी लग्न	:	वृष	20:31:33	वर्णद लग्न	:	मिथु	14:39:10

उपग्रह कुंडली

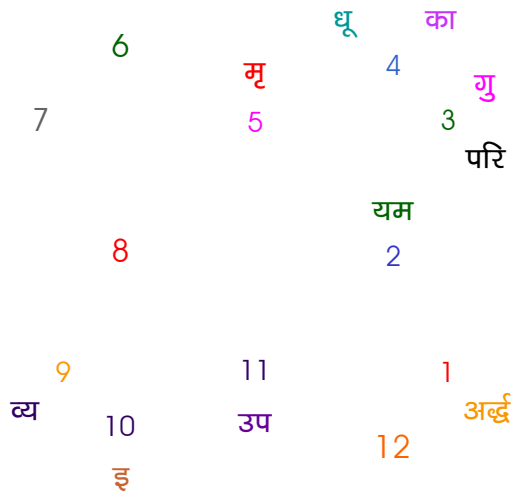

आरूढ़ कुंडली

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	4	3	4	4	5	1	3	6	6	5	4	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	6	5	3	4	4	5	2	4	6	5	2	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	3	5	4	5	3	2	3	3	3	3	3	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	7	2	3	5	6	5	5	2	3	6	6	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	3	3	5	5	5	4	7	5	4	5	6	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
कुल	5	3	6	4	5	4	3	3	5	4	5	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	3	3	5	2	5	2	2	4	2	2	5	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	3	4	4	5	6	3	4	5	4	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	4	2	2	5	4	3	3	5	2	5	39
गुरु	5	6	4	3	3	5	5	5	4	7	5	4	56
मंगल	3	5	4	5	3	2	3	3	3	3	3	2	39
सूर्य	3	4	4	5	1	3	6	6	5	4	3	4	48
शुक्र	5	3	6	4	5	4	3	3	5	4	5	5	52
बुध	3	5	6	5	5	2	3	6	6	4	7	2	54
चंद्र	3	6	5	3	4	4	5	2	4	6	5	2	49
लग्न	4	5	4	4	4	3	3	4	4	5	6	3	49
बिन्दु	28	36	37	31	27	28	32	32	34	38	36	27	386
रेखा	36	28	27	33	37	36	32	32	30	26	28	37	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	0	0	3	2	1	1	3	0	3	15
गुरु	2	1	0	0	0	0	1	2	1	2	1	1	11
मंगल	0	3	1	3	0	0	0	1	0	1	0	0	9
सूर्य	2	1	1	1	0	0	3	2	4	1	0	0	15
शुक्र	0	0	3	1	0	1	0	0	0	1	2	2	10
बुध	0	3	3	3	2	0	0	4	3	2	4	0	24
चंद्र	0	2	0	1	1	0	0	0	1	2	0	0	7
लग्न	0	2	1	1	0	0	0	1	0	2	3	0	10
रेखा	4	12	11	10	3	4	6	11	10	14	10	6	101

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	0	0	2	2	1	0	3	0	3	13
गुरु	2	1	0	0	0	0	0	2	0	1	1	1	8
मंगल	0	3	1	3	0	0	0	1	0	1	0	0	9
सूर्य	2	1	1	1	0	0	1	2	4	1	0	0	13
शुक्र	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	2	2	7
बुध	0	3	3	3	2	0	0	4	3	0	4	0	22
चंद्र	0	2	0	1	1	0	0	0	1	2	0	0	7
लग्न	0	2	1	1	0	0	0	1	0	0	3	0	8
रेखा	4	12	9	10	3	3	3	11	8	8	10	6	87

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	73	100	53	63	189	68	63	99
ग्रह पिंड	40	55	20	50	85	55	30	20
शोध्य पिंड	113	155	73	113	274	123	93	119

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

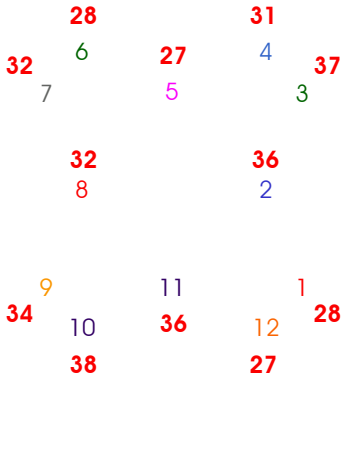

सूर्य का अष्टकवर्ग

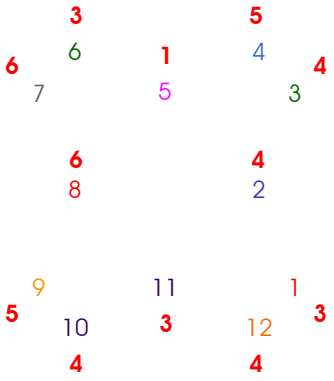

चंद्र का अष्टकवर्ग

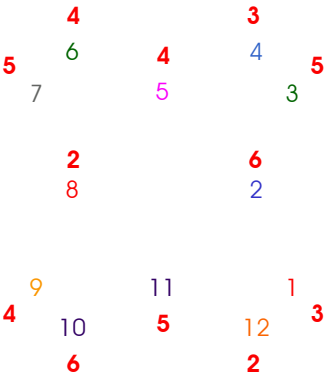

मंगल का अष्टकवर्ग

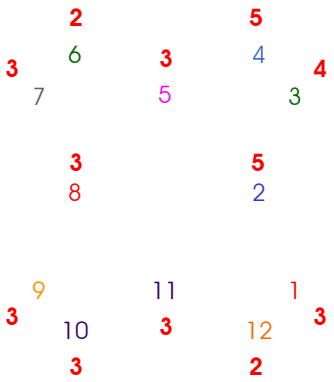

बुध का अष्टकवर्ग

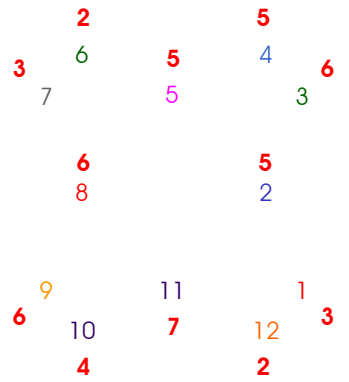

गुरू का अष्टकवर्ग

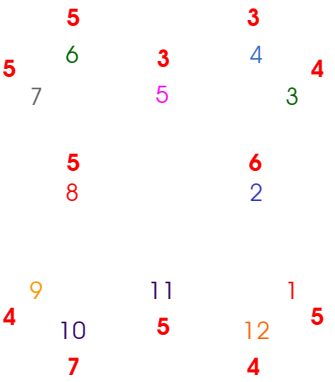

शुक्र का अष्टकवर्ग

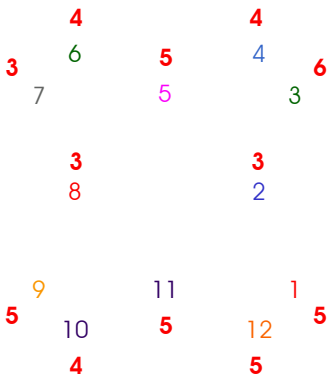

शनि का अष्टकवर्ग

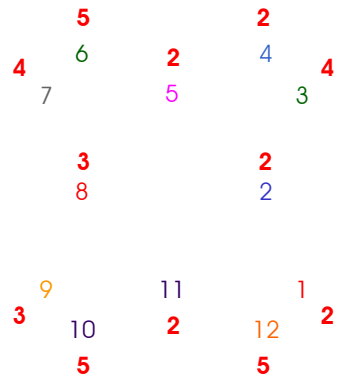

लग्न का अष्टकवर्ग

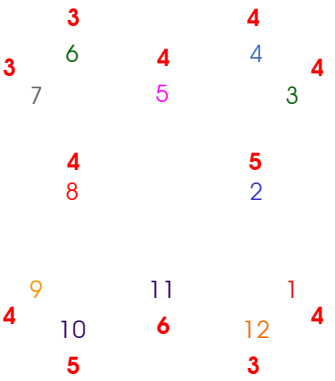

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

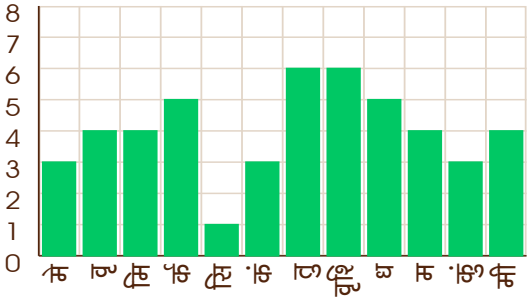

चन्द्र

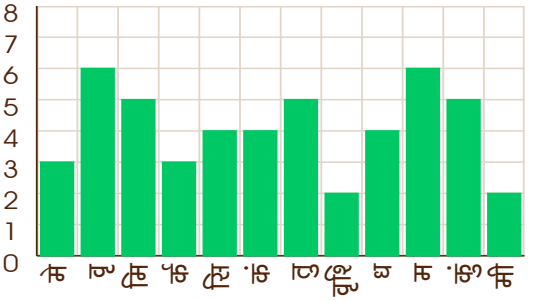

मंगल

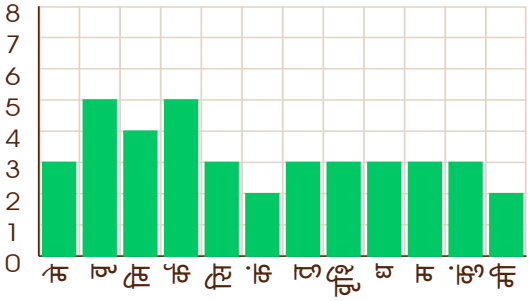

बुध

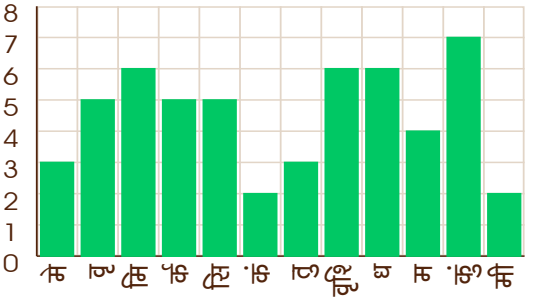

गुरु

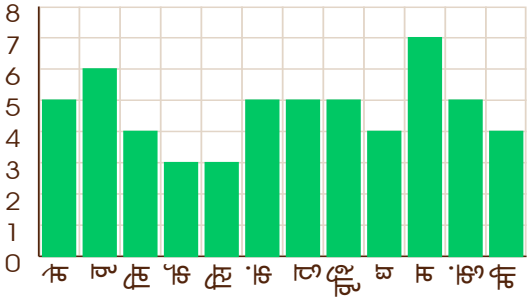

शुक्र

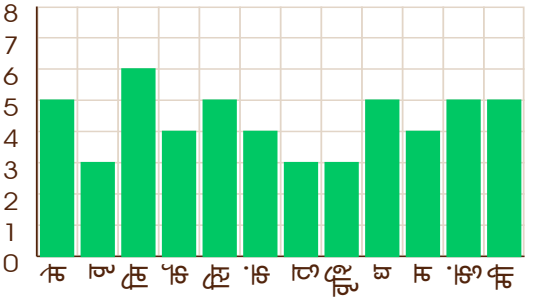

शनि

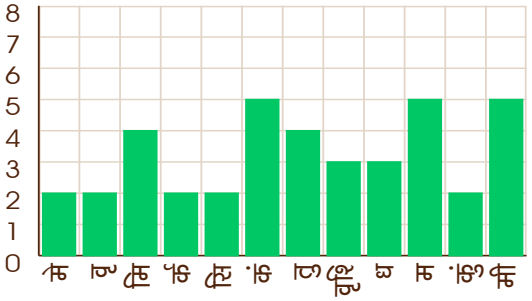

लग्न

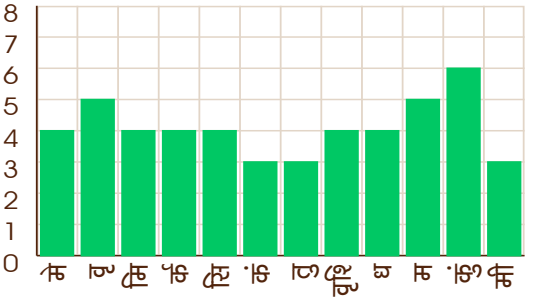

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

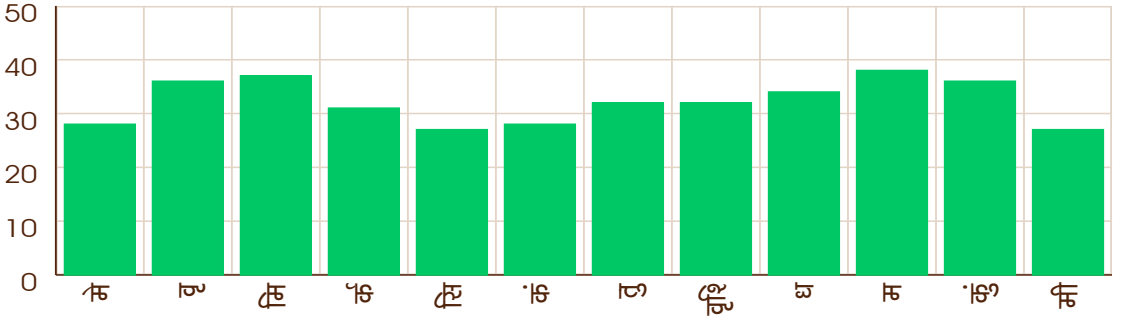

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

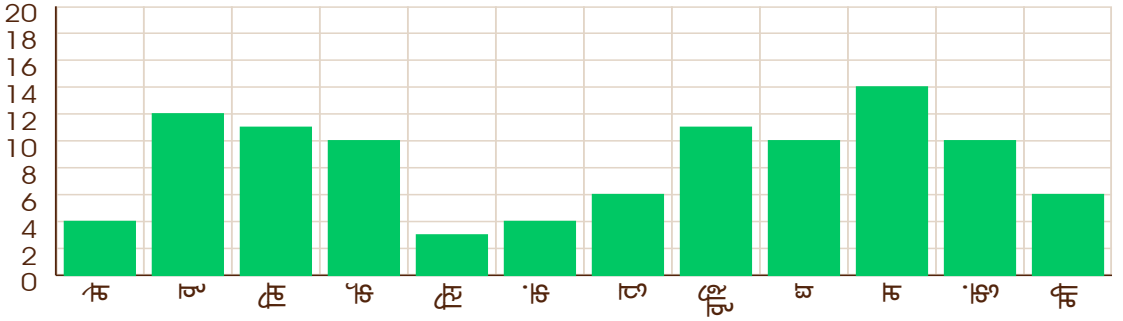

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

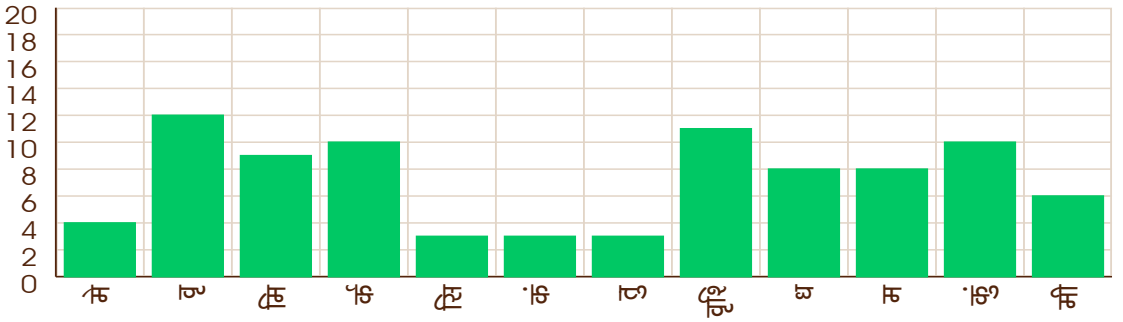

शोध्य पिंड

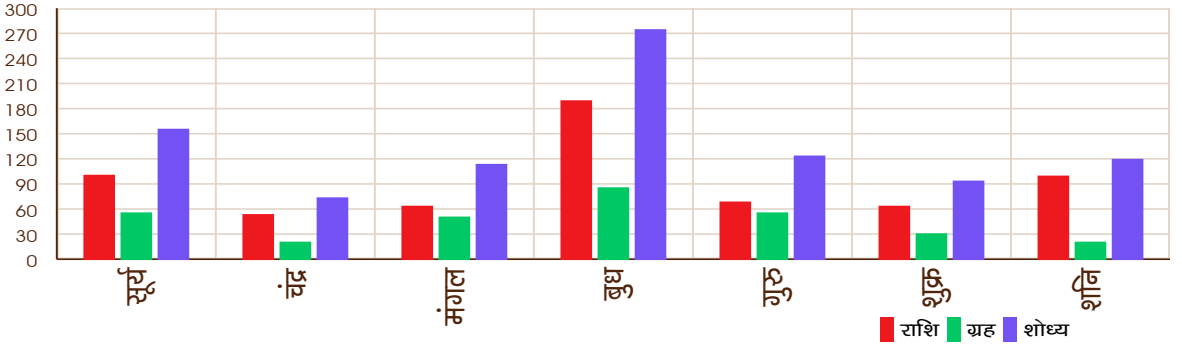

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 0 मास 9 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
25/03/2015		03/04/2019		03/04/2026		03/04/2044		03/04/2060	
03/04/2019		03/04/2026		03/04/2044		03/04/2060		03/04/2079	
	00/00/0000	मंगल	30/08/2019	राहु	14/12/2028	गुरु	22/05/2046	शनि	06/04/2063
	00/00/0000	राहु	17/09/2020	गुरु	10/05/2031	शनि	02/12/2048	बुध	14/12/2065
	00/00/0000	गुरु	24/08/2021	शनि	16/03/2034	बुध	10/03/2051	केतु	23/01/2067
	00/00/0000	शनि	03/10/2022	बुध	02/10/2036	केतु	14/02/2052	शुक्र	25/03/2070
	25/03/2015	बुध	30/09/2023	केतु	21/10/2037	शुक्र	15/10/2054	सूर्य	07/03/2071
बुध	03/07/2016	केतु	26/02/2024	शुक्र	20/10/2040	सूर्य	03/08/2055	चंद्र	05/10/2072
केतु	01/02/2017	शुक्र	27/04/2025	सूर्य	14/09/2041	चंद्र	02/12/2056	मंगल	14/11/2073
शुक्र	03/10/2018	सूर्य	02/09/2025	चंद्र	16/03/2043	मंगल	08/11/2057	राहु	20/09/2076
सूर्य	03/04/2019	चंद्र	03/04/2026	मंगल	03/04/2044	राहु	03/04/2060	गुरु	03/04/2079

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
03/04/2079		03/04/2096		04/04/2103		04/04/2123		04/04/2129	
03/04/2096		04/04/2103		04/04/2123		04/04/2129		00/00/0000	
बुध	30/08/2081	केतु	30/08/2096	शुक्र	04/08/2106	सूर्य	23/07/2123	चंद्र	02/02/2130
केतु	27/08/2082	शुक्र	30/10/2097	सूर्य	04/08/2107	चंद्र	21/01/2124	मंगल	03/09/2130
शुक्र	27/06/2085	सूर्य	07/03/2098	चंद्र	04/04/2109	मंगल	28/05/2124	राहु	04/03/2132
सूर्य	03/05/2086	चंद्र	06/10/2098	मंगल	04/06/2110	राहु	22/04/2125	गुरु	04/07/2133
चंद्र	03/10/2087	मंगल	04/03/2099	राहु	04/06/2113	गुरु	08/02/2126	शनि	02/02/2135
मंगल	29/09/2088	राहु	22/03/2100	गुरु	03/02/2116	शनि	21/01/2127	बुध	26/03/2135
राहु	18/04/2091	गुरु	26/02/2101	शनि	04/04/2119	बुध	28/11/2127		00/00/0000
गुरु	24/07/2093	शनि	07/04/2102	बुध	02/02/2122	केतु	04/04/2128		00/00/0000
शनि	03/04/2096	बुध	04/04/2103	केतु	04/04/2123	शुक्र	04/04/2129		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 4 वर्ष 0 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
25/03/2015		03/07/2016		01/02/2017		03/10/2018		03/04/2019	
03/07/2016		01/02/2017		03/10/2018		03/04/2019		30/08/2019	
बुध	16/04/2015	केतु	15/07/2016	शुक्र	13/05/2017	सूर्य	12/10/2018	मंगल	12/04/2019
केतु	16/05/2015	शुक्र	20/08/2016	सूर्य	13/06/2017	चंद्र	27/10/2018	राहु	04/05/2019
शुक्र	10/08/2015	सूर्य	30/08/2016	चंद्र	03/08/2017	मंगल	07/11/2018	गुरु	24/05/2019
सूर्य	05/09/2015	चंद्र	17/09/2016	मंगल	07/09/2017	राहु	04/12/2018	शनि	17/06/2019
चंद्र	18/10/2015	मंगल	30/09/2016	राहु	07/12/2017	गुरु	28/12/2018	बुध	08/07/2019
मंगल	17/11/2015	राहु	01/11/2016	गुरु	26/02/2018	शनि	26/01/2019	केतु	17/07/2019
राहु	03/02/2016	गुरु	29/11/2016	शनि	03/06/2018	बुध	21/02/2019	शुक्र	11/08/2019
गुरु	12/04/2016	शनि	02/01/2017	बुध	28/08/2018	केतु	04/03/2019	सूर्य	18/08/2019
शनि	03/07/2016	बुध	01/02/2017	केतु	03/10/2018	शुक्र	03/04/2019	चंद्र	30/08/2019

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
30/08/2019		17/09/2020		24/08/2021		03/10/2022		30/09/2023	
17/09/2020		24/08/2021		03/10/2022		30/09/2023		26/02/2024	
राहु	27/10/2019	गुरु	01/11/2020	शनि	27/10/2021	बुध	23/11/2022	केतु	09/10/2023
गुरु	17/12/2019	शनि	25/12/2020	बुध	23/12/2021	केतु	14/12/2022	शुक्र	02/11/2023
शनि	16/02/2020	बुध	12/02/2021	केतु	16/01/2022	शुक्र	12/02/2023	सूर्य	10/11/2023
बुध	10/04/2020	केतु	04/03/2021	शुक्र	24/03/2022	सूर्य	03/03/2023	चंद्र	22/11/2023
केतु	02/05/2020	शुक्र	29/04/2021	सूर्य	14/04/2022	चंद्र	02/04/2023	मंगल	01/12/2023
शुक्र	05/07/2020	सूर्य	16/05/2021	चंद्र	17/05/2022	मंगल	23/04/2023	राहु	23/12/2023
सूर्य	25/07/2020	चंद्र	14/06/2021	मंगल	10/06/2022	राहु	16/06/2023	गुरु	12/01/2024
चंद्र	26/08/2020	मंगल	04/07/2021	राहु	10/08/2022	गुरु	03/08/2023	शनि	05/02/2024
मंगल	17/09/2020	राहु	24/08/2021	गुरु	03/10/2022	शनि	30/09/2023	बुध	26/02/2024

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
26/02/2024		27/04/2025		02/09/2025		03/04/2026		14/12/2028	
27/04/2025		02/09/2025		03/04/2026		14/12/2028		10/05/2031	
शुक्र	07/05/2024	सूर्य	03/05/2025	चंद्र	20/09/2025	राहु	29/08/2026	गुरु	10/04/2029
सूर्य	28/05/2024	चंद्र	14/05/2025	मंगल	02/10/2025	गुरु	07/01/2027	शनि	27/08/2029
चंद्र	03/07/2024	मंगल	22/05/2025	राहु	03/11/2025	शनि	13/06/2027	बुध	29/12/2029
मंगल	28/07/2024	राहु	10/06/2025	गुरु	01/12/2025	बुध	30/10/2027	केतु	18/02/2030
राहु	30/09/2024	गुरु	27/06/2025	शनि	04/01/2026	केतु	27/12/2027	शुक्र	14/07/2030
गुरु	25/11/2024	शनि	17/07/2025	बुध	03/02/2026	शुक्र	08/06/2028	सूर्य	27/08/2030
शनि	01/02/2025	बुध	04/08/2025	केतु	16/02/2026	सूर्य	27/07/2028	चंद्र	08/11/2030
बुध	02/04/2025	केतु	12/08/2025	शुक्र	23/03/2026	चंद्र	18/10/2028	मंगल	29/12/2030
केतु	27/04/2025	शुक्र	02/09/2025	सूर्य	03/04/2026	मंगल	14/12/2028	राहु	10/05/2031

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
10/05/2031		16/03/2034		02/10/2036		21/10/2037		20/10/2040	
16/03/2034		02/10/2036		21/10/2037		20/10/2040		14/09/2041	
शनि	22/10/2031	बुध	26/07/2034	केतु	25/10/2036	शुक्र	21/04/2038	सूर्य	06/11/2040
बुध	17/03/2032	केतु	18/09/2034	शुक्र	27/12/2036	सूर्य	15/06/2038	चंद्र	03/12/2040
केतु	17/05/2032	शुक्र	20/02/2035	सूर्य	16/01/2037	चंद्र	14/09/2038	मंगल	22/12/2040
शुक्र	06/11/2032	सूर्य	08/04/2035	चंद्र	17/02/2037	मंगल	17/11/2038	राहु	10/02/2041
सूर्य	28/12/2032	चंद्र	24/06/2035	मंगल	11/03/2037	राहु	01/05/2039	गुरु	26/03/2041
चंद्र	25/03/2033	मंगल	18/08/2035	राहु	07/05/2037	गुरु	24/09/2039	शनि	17/05/2041
मंगल	25/05/2033	राहु	04/01/2036	गुरु	28/06/2037	शनि	15/03/2040	बुध	02/07/2041
राहु	28/10/2033	गुरु	08/05/2036	शनि	27/08/2037	बुध	17/08/2040	केतु	21/07/2041
गुरु	16/03/2034	शनि	02/10/2036	बुध	21/10/2037	केतु	20/10/2040	शुक्र	14/09/2041

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
14/09/2041		16/03/2043		03/04/2044		22/05/2046		02/12/2048	
16/03/2043		03/04/2044		22/05/2046		02/12/2048		10/03/2051	
चंद्र	30/10/2041	मंगल	07/04/2043	गुरु	15/07/2044	शनि	15/10/2046	बुध	29/03/2049
मंगल	01/12/2041	राहु	04/06/2043	शनि	16/11/2044	बुध	23/02/2047	केतु	17/05/2049
राहु	21/02/2042	गुरु	25/07/2043	बुध	06/03/2045	केतु	18/04/2047	शुक्र	02/10/2049
गुरु	05/05/2042	शनि	24/09/2043	केतु	21/04/2045	शुक्र	19/09/2047	सूर्य	12/11/2049
शनि	31/07/2042	बुध	17/11/2043	शुक्र	28/08/2045	सूर्य	05/11/2047	चंद्र	20/01/2050
बुध	16/10/2042	केतु	09/12/2043	सूर्य	06/10/2045	चंद्र	21/01/2048	मंगल	09/03/2050
केतु	17/11/2042	शुक्र	11/02/2044	चंद्र	10/12/2045	मंगल	15/03/2048	राहु	11/07/2050
शुक्र	17/02/2043	सूर्य	02/03/2044	मंगल	25/01/2046	राहु	01/08/2048	गुरु	30/10/2050
सूर्य	16/03/2043	चंद्र	03/04/2044	राहु	22/05/2046	गुरु	02/12/2048	शनि	10/03/2051

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
10/03/2051		14/02/2052		15/10/2054		03/08/2055		02/12/2056	
14/02/2052		15/10/2054		03/08/2055		02/12/2056		08/11/2057	
केतु	30/03/2051	शुक्र	25/07/2052	सूर्य	29/10/2054	चंद्र	13/09/2055	मंगल	22/12/2056
शुक्र	26/05/2051	सूर्य	12/09/2052	चंद्र	23/11/2054	मंगल	11/10/2055	राहु	11/02/2057
सूर्य	12/06/2051	चंद्र	02/12/2052	मंगल	10/12/2054	राहु	23/12/2055	गुरु	28/03/2057
चंद्र	10/07/2051	मंगल	28/01/2053	राहु	23/01/2055	गुरु	26/02/2056	शनि	21/05/2057
मंगल	30/07/2051	राहु	23/06/2053	गुरु	03/03/2055	शनि	13/05/2056	बुध	09/07/2057
राहु	19/09/2051	गुरु	31/10/2053	शनि	18/04/2055	बुध	21/07/2056	केतु	29/07/2057
गुरु	04/11/2051	शनि	03/04/2054	बुध	29/05/2055	केतु	18/08/2056	शुक्र	23/09/2057
शनि	28/12/2051	बुध	19/08/2054	केतु	15/06/2055	शुक्र	08/11/2056	सूर्य	10/10/2057
बुध	14/02/2052	केतु	15/10/2054	शुक्र	03/08/2055	सूर्य	02/12/2056	चंद्र	08/11/2057

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
08/11/2057		03/04/2060		06/04/2063		14/12/2065		23/01/2067	
03/04/2060		06/04/2063		14/12/2065		23/01/2067		25/03/2070	
राहु	19/03/2058	शनि	23/09/2060	बुध	24/08/2063	केतु	07/01/2066	शुक्र	04/08/2067
गुरु	14/07/2058	बुध	26/02/2061	केतु	20/10/2063	शुक्र	16/03/2066	सूर्य	01/10/2067
शनि	30/11/2058	केतु	01/05/2061	शुक्र	01/04/2064	सूर्य	05/04/2066	चंद्र	05/01/2068
बुध	03/04/2059	शुक्र	31/10/2061	सूर्य	20/05/2064	चंद्र	08/05/2066	मंगल	13/03/2068
केतु	24/05/2059	सूर्य	25/12/2061	चंद्र	10/08/2064	मंगल	01/06/2066	राहु	02/09/2068
शुक्र	17/10/2059	चंद्र	27/03/2062	मंगल	06/10/2064	राहु	01/08/2066	गुरु	03/02/2069
सूर्य	30/11/2059	मंगल	30/05/2062	राहु	03/03/2065	गुरु	24/09/2066	शनि	06/08/2069
चंद्र	11/02/2060	राहु	11/11/2062	गुरु	12/07/2065	शनि	27/11/2066	बुध	16/01/2070
मंगल	03/04/2060	गुरु	06/04/2063	शनि	14/12/2065	बुध	23/01/2067	केतु	25/03/2070

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
25/03/2070		07/03/2071		05/10/2072		14/11/2073		20/09/2076	
07/03/2071		05/10/2072		14/11/2073		20/09/2076		03/04/2079	
सूर्य	11/04/2070	चंद्र	24/04/2071	मंगल	29/10/2072	राहु	19/04/2074	गुरु	21/01/2077
चंद्र	10/05/2070	मंगल	28/05/2071	राहु	29/12/2072	गुरु	05/09/2074	शनि	17/06/2077
मंगल	30/05/2070	राहु	23/08/2071	गुरु	20/02/2073	शनि	17/02/2075	बुध	26/10/2077
राहु	21/07/2070	गुरु	08/11/2071	शनि	26/04/2073	बुध	14/07/2075	केतु	19/12/2077
गुरु	06/09/2070	शनि	07/02/2072	बुध	22/06/2073	केतु	13/09/2075	शुक्र	22/05/2078
शनि	31/10/2070	बुध	29/04/2072	केतु	16/07/2073	शुक्र	04/03/2076	सूर्य	07/07/2078
बुध	19/12/2070	केतु	02/06/2072	शुक्र	21/09/2073	सूर्य	25/04/2076	चंद्र	22/09/2078
केतु	08/01/2071	शुक्र	06/09/2072	सूर्य	11/10/2073	चंद्र	21/07/2076	मंगल	15/11/2078
शुक्र	07/03/2071	सूर्य	05/10/2072	चंद्र	14/11/2073	मंगल	20/09/2076	राहु	03/04/2079

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
03/04/2079		30/08/2081		27/08/2082		27/06/2085		03/05/2086	
30/08/2081		27/08/2082		27/06/2085		03/05/2086		03/10/2087	
बुध	06/08/2079	केतु	20/09/2081	शुक्र	16/02/2083	सूर्य	13/07/2085	चंद्र	16/06/2086
केतु	26/09/2079	शुक्र	19/11/2081	सूर्य	08/04/2083	चंद्र	07/08/2085	मंगल	16/07/2086
शुक्र	20/02/2080	सूर्य	08/12/2081	चंद्र	04/07/2083	मंगल	25/08/2085	राहु	01/10/2086
सूर्य	04/04/2080	चंद्र	07/01/2082	मंगल	02/09/2083	राहु	11/10/2085	गुरु	09/12/2086
चंद्र	16/06/2080	मंगल	28/01/2082	राहु	04/02/2084	गुरु	21/11/2085	शनि	01/03/2087
मंगल	06/08/2080	राहु	23/03/2082	गुरु	21/06/2084	शनि	10/01/2086	बुध	14/05/2087
राहु	16/12/2080	गुरु	10/05/2082	शनि	02/12/2084	बुध	23/02/2086	केतु	13/06/2087
गुरु	13/04/2081	शनि	07/07/2082	बुध	28/04/2085	केतु	13/03/2086	शुक्र	07/09/2087
शनि	30/08/2081	बुध	27/08/2082	केतु	27/06/2085	शुक्र	03/05/2086	सूर्य	03/10/2087

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
03/10/2087		29/09/2088		18/04/2091		24/07/2093		03/04/2096	
29/09/2088		18/04/2091		24/07/2093		03/04/2096		30/08/2096	
मंगल	24/10/2087	राहु	16/02/2089	गुरु	07/08/2091	शनि	27/12/2093	केतु	11/04/2096
राहु	17/12/2087	गुरु	20/06/2089	शनि	16/12/2091	बुध	15/05/2094	शुक्र	06/05/2096
गुरु	04/02/2088	शनि	14/11/2089	बुध	11/04/2092	केतु	12/07/2094	सूर्य	14/05/2096
शनि	01/04/2088	बुध	26/03/2090	केतु	30/05/2092	शुक्र	23/12/2094	चंद्र	26/05/2096
बुध	22/05/2088	केतु	20/05/2090	शुक्र	15/10/2092	सूर्य	10/02/2095	मंगल	04/06/2096
केतु	12/06/2088	शुक्र	22/10/2090	सूर्य	25/11/2092	चंद्र	03/05/2095	राहु	26/06/2096
शुक्र	12/08/2088	सूर्य	08/12/2090	चंद्र	02/02/2093	मंगल	29/06/2095	गुरु	16/07/2096
सूर्य	30/08/2088	चंद्र	23/02/2091	मंगल	22/03/2093	राहु	23/11/2095	शनि	09/08/2096
चंद्र	29/09/2088	मंगल	18/04/2091	राहु	24/07/2093	गुरु	03/04/2096	बुध	30/08/2096

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
30/08/2096		30/10/2097		07/03/2098		06/10/2098		04/03/2099	
30/10/2097		07/03/2098		06/10/2098		04/03/2099		22/03/2100	
शुक्र	09/11/2096	सूर्य	05/11/2097	चंद्र	24/03/2098	मंगल	14/10/2098	राहु	30/04/2099
सूर्य	30/11/2096	चंद्र	16/11/2097	मंगल	06/04/2098	राहु	06/11/2098	गुरु	20/06/2099
चंद्र	04/01/2097	मंगल	23/11/2097	राहु	08/05/2098	गुरु	26/11/2098	शनि	20/08/2099
मंगल	29/01/2097	राहु	12/12/2097	गुरु	05/06/2098	शनि	19/12/2098	बुध	14/10/2099
राहु	03/04/2097	गुरु	29/12/2097	शनि	09/07/2098	बुध	09/01/2099	केतु	05/11/2099
गुरु	30/05/2097	शनि	19/01/2098	बुध	08/08/2098	केतु	18/01/2099	शुक्र	08/01/2100
शनि	06/08/2097	बुध	06/02/2098	केतु	21/08/2098	शुक्र	12/02/2099	सूर्य	27/01/2100
बुध	05/10/2097	केतु	13/02/2098	शुक्र	25/09/2098	सूर्य	19/02/2099	चंद्र	28/02/2100
केतु	30/10/2097	शुक्र	07/03/2098	सूर्य	06/10/2098	चंद्र	04/03/2099	मंगल	22/03/2100

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
22/03/2100		26/02/2101		07/04/2102		04/04/2103		04/08/2106	
26/02/2101		07/04/2102		04/04/2103		04/08/2106		04/08/2107	
गुरु	07/05/2100	शनि	01/05/2101	बुध	28/05/2102	शुक्र	24/10/2103	सूर्य	22/08/2106
शनि	30/06/2100	बुध	28/06/2101	केतु	18/06/2102	सूर्य	24/12/2103	चंद्र	21/09/2106
बुध	17/08/2100	केतु	21/07/2101	शुक्र	18/08/2102	चंद्र	04/04/2104	मंगल	13/10/2106
केतु	06/09/2100	शुक्र	27/09/2101	सूर्य	05/09/2102	मंगल	14/06/2104	राहु	07/12/2106
शुक्र	02/11/2100	सूर्य	17/10/2101	चंद्र	05/10/2102	राहु	13/12/2104	गुरु	24/01/2107
सूर्य	19/11/2100	चंद्र	20/11/2101	मंगल	26/10/2102	गुरु	24/05/2105	शनि	23/03/2107
चंद्र	17/12/2100	मंगल	13/12/2101	राहु	20/12/2102	शनि	03/12/2105	बुध	14/05/2107
मंगल	06/01/2101	राहु	12/02/2102	गुरु	06/02/2103	बुध	25/05/2106	केतु	04/06/2107
राहु	26/02/2101	गुरु	07/04/2102	शनि	04/04/2103	केतु	04/08/2106	शुक्र	04/08/2107

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
04/08/2107		04/04/2109		04/06/2110		04/06/2113		03/02/2116	
04/04/2109		04/06/2110		04/06/2113		03/02/2116		04/04/2119	
चंद्र	24/09/2107	मंगल	29/04/2109	राहु	15/11/2110	गुरु	11/10/2113	शनि	04/08/2116
मंगल	29/10/2107	राहु	02/07/2109	गुरु	10/04/2111	शनि	15/03/2114	बुध	15/01/2117
राहु	29/01/2108	गुरु	27/08/2109	शनि	01/10/2111	बुध	31/07/2114	केतु	23/03/2117
गुरु	19/04/2108	शनि	03/11/2109	बुध	04/03/2112	केतु	26/09/2114	शुक्र	02/10/2117
शनि	24/07/2108	बुध	02/01/2110	केतु	07/05/2112	शुक्र	07/03/2115	सूर्य	29/11/2117
बुध	18/10/2108	केतु	27/01/2110	शुक्र	06/11/2112	सूर्य	25/04/2115	चंद्र	05/03/2118
केतु	23/11/2108	शुक्र	08/04/2110	सूर्य	30/12/2112	चंद्र	15/07/2115	मंगल	12/05/2118
शुक्र	04/03/2109	सूर्य	29/04/2110	चंद्र	01/04/2113	मंगल	10/09/2115	राहु	01/11/2118
सूर्य	04/04/2109	चंद्र	04/06/2110	मंगल	04/06/2113	राहु	03/02/2116	गुरु	04/04/2119

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
04/04/2119		02/02/2122		04/04/2123		23/07/2123		21/01/2124	
02/02/2122		04/04/2123		23/07/2123		21/01/2124		28/05/2124	
बुध	29/08/2119	केतु	27/02/2122	सूर्य	10/04/2123	चंद्र	07/08/2123	मंगल	29/01/2124
केतु	28/10/2119	शुक्र	09/05/2122	चंद्र	19/04/2123	मंगल	18/08/2123	राहु	17/02/2124
शुक्र	18/04/2120	सूर्य	30/05/2122	मंगल	25/04/2123	राहु	14/09/2123	गुरु	05/03/2124
सूर्य	08/06/2120	चंद्र	05/07/2122	राहु	12/05/2123	गुरु	08/10/2123	शनि	25/03/2124
चंद्र	03/09/2120	मंगल	30/07/2122	गुरु	26/05/2123	शनि	06/11/2123	बुध	12/04/2124
मंगल	02/11/2120	राहु	02/10/2122	शनि	13/06/2123	बुध	02/12/2123	केतु	20/04/2124
राहु	06/04/2121	गुरु	27/11/2122	बुध	28/06/2123	केतु	13/12/2123	शुक्र	11/05/2124
गुरु	22/08/2121	शनि	03/02/2123	केतु	05/07/2123	शुक्र	12/01/2124	सूर्य	18/05/2124
शनि	02/02/2122	बुध	04/04/2123	शुक्र	23/07/2123	सूर्य	21/01/2124	चंद्र	28/05/2124

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
28/05/2124		22/04/2125		08/02/2126		21/01/2127		28/11/2127	
22/04/2125		08/02/2126		21/01/2127		28/11/2127		04/04/2128	
राहु	17/07/2124	गुरु	31/05/2125	शनि	04/04/2126	बुध	06/03/2127	केतु	05/12/2127
गुरु	29/08/2124	शनि	16/07/2125	बुध	23/05/2126	केतु	24/03/2127	शुक्र	26/12/2127
शनि	20/10/2124	बुध	27/08/2125	केतु	13/06/2126	शुक्र	15/05/2127	सूर्य	02/01/2128
बुध	06/12/2124	केतु	13/09/2125	शुक्र	09/08/2126	सूर्य	31/05/2127	चंद्र	12/01/2128
केतु	25/12/2124	शुक्र	31/10/2125	सूर्य	27/08/2126	चंद्र	25/06/2127	मंगल	20/01/2128
शुक्र	18/02/2125	सूर्य	15/11/2125	चंद्र	25/09/2126	मंगल	14/07/2127	राहु	08/02/2128
सूर्य	06/03/2125	चंद्र	09/12/2125	मंगल	15/10/2126	राहु	29/08/2127	गुरु	25/02/2128
चंद्र	03/04/2125	मंगल	26/12/2125	राहु	06/12/2126	गुरु	10/10/2127	शनि	16/03/2128
मंगल	22/04/2125	राहु	08/02/2126	गुरु	21/01/2127	शनि	28/11/2127	बुध	04/04/2128

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - सूर्य - केतु	
21/02/2019 15:55	
04/03/2019 07:35	
केतु	22/02/2019 06:50
शुक्र	24/02/2019 01:27
सूर्य	24/02/2019 14:14
चंद्र	25/02/2019 11:32
मंगल	26/02/2019 02:27
राहु	27/02/2019 16:48
गुरु	01/03/2019 02:53
शनि	02/03/2019 19:22
बुध	04/03/2019 07:35

चंद्र - सूर्य - शुक्र	
04/03/2019 07:35	
03/04/2019 18:05	
शुक्र	09/03/2019 09:20
सूर्य	10/03/2019 21:52
चंद्र	13/03/2019 10:44
मंगल	15/03/2019 05:21
राहु	19/03/2019 18:56
गुरु	23/03/2019 20:20
शनि	28/03/2019 15:59
बुध	01/04/2019 23:29
केतु	03/04/2019 18:05

मंगल - मंगल - मंगल	
03/04/2019 18:05	
12/04/2019 10:53	
मंगल	04/04/2019 06:16
राहु	05/04/2019 13:35
गुरु	06/04/2019 17:26
शनि	08/04/2019 02:29
बुध	09/04/2019 08:04
केतु	09/04/2019 20:15
शुक्र	11/04/2019 07:03
सूर्य	11/04/2019 17:29
चंद्र	12/04/2019 10:53

मंगल - मंगल - राहु	
12/04/2019 10:53	
04/05/2019 19:49	
राहु	15/04/2019 19:26
गुरु	18/04/2019 19:01
शनि	22/04/2019 08:02
बुध	25/04/2019 12:06
केतु	26/04/2019 19:25
शुक्र	30/04/2019 12:54
सूर्य	01/05/2019 15:45
चंद्र	03/05/2019 12:29
मंगल	04/05/2019 19:49

मंगल - मंगल - गुरु	
04/05/2019 19:49	
24/05/2019 17:04	
गुरु	07/05/2019 11:27
शनि	10/05/2019 15:01
बुध	13/05/2019 10:37
केतु	14/05/2019 14:28
शुक्र	17/05/2019 22:00
सूर्य	18/05/2019 21:52
चंद्र	20/05/2019 13:38
मंगल	21/05/2019 17:29
राहु	24/05/2019 17:04

मंगल - मंगल - शनि	
24/05/2019 17:04	
17/06/2019 07:49	
शनि	28/05/2019 10:48
बुध	31/05/2019 19:06
केतु	02/06/2019 04:09
शुक्र	06/06/2019 02:37
सूर्य	07/06/2019 06:57
चंद्र	09/06/2019 06:11
मंगल	10/06/2019 15:14
राहु	14/06/2019 04:15
गुरु	17/06/2019 07:49

मंगल - मंगल - बुध	
17/06/2019 07:49	
08/07/2019 10:54	
बुध	20/06/2019 07:39
केतु	21/06/2019 13:14
शुक्र	25/06/2019 01:45
सूर्य	26/06/2019 03:06
चंद्र	27/06/2019 21:22
मंगल	29/06/2019 02:56
राहु	02/07/2019 07:00
गुरु	05/07/2019 02:37
शनि	08/07/2019 10:54

मंगल - मंगल - केतु	
08/07/2019 10:54	
17/07/2019 03:42	
केतु	08/07/2019 23:05
शुक्र	10/07/2019 09:53
सूर्य	10/07/2019 20:19
चंद्र	11/07/2019 13:43
मंगल	12/07/2019 01:54
राहु	13/07/2019 09:13
गुरु	14/07/2019 13:04
शनि	15/07/2019 22:08
बुध	17/07/2019 03:42

मंगल - मंगल - शुक्र	
17/07/2019 03:42	
11/08/2019 00:17	
शुक्र	21/07/2019 07:08
सूर्य	22/07/2019 12:58
चंद्र	24/07/2019 14:41
मंगल	26/07/2019 01:29
राहु	29/07/2019 18:58
गुरु	02/08/2019 02:30
शनि	06/08/2019 00:58
बुध	09/08/2019 13:29
केतु	11/08/2019 00:17

मंगल - मंगल - सूर्य	
11/08/2019 00:17	
18/08/2019 11:15	
सूर्य	11/08/2019 09:14
चंद्र	12/08/2019 00:09
मंगल	12/08/2019 10:35
राहु	13/08/2019 13:26
गुरु	14/08/2019 13:18
शनि	15/08/2019 17:38
बुध	16/08/2019 18:59
केतु	17/08/2019 05:25
शुक्र	18/08/2019 11:15

मंगल - मंगल - चंद्र	
18/08/2019 11:15	
30/08/2019 21:32	
चंद्र	19/08/2019 12:07
मंगल	20/08/2019 05:31
राहु	22/08/2019 02:15
गुरु	23/08/2019 18:01
शनि	25/08/2019 17:15
बुध	27/08/2019 11:31
केतु	28/08/2019 04:55
शुक्र	30/08/2019 06:38
सूर्य	30/08/2019 21:32

मंगल - राहु - राहु	
30/08/2019 21:32	
27/10/2019 10:11	
राहु	08/09/2019 12:38
गुरु	16/09/2019 04:43
शनि	25/09/2019 07:20
बुध	03/10/2019 10:55
केतु	06/10/2019 19:27
शुक्र	16/10/2019 09:34
सूर्य	19/10/2019 06:36
चंद्र	24/10/2019 01:39
मंगल	27/10/2019 10:11

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - गुरु	
27/10/2019 10:11	
17/12/2019 13:26	
गुरु	03/11/2019 05:49
शनि	11/11/2019 08:08
बुध	18/11/2019 13:59
केतु	21/11/2019 13:35
शुक्र	30/11/2019 02:07
सूर्य	02/12/2019 15:29
चंद्र	06/12/2019 21:45
मंगल	09/12/2019 21:20
राहु	17/12/2019 13:26

मंगल - राहु - शनि	
17/12/2019 13:26	
16/02/2020 06:46	
शनि	27/12/2019 04:10
बुध	04/01/2020 18:38
केतु	08/01/2020 07:38
शुक्र	18/01/2020 10:32
सूर्य	21/01/2020 11:24
चंद्र	26/01/2020 12:51
मंगल	30/01/2020 01:51
राहु	08/02/2020 04:28
गुरु	16/02/2020 06:46

मंगल - राहु - बुध	
16/02/2020 06:46	
10/04/2020 14:43	
बुध	23/02/2020 23:30
केतु	27/02/2020 03:34
शुक्र	07/03/2020 04:53
सूर्य	09/03/2020 22:05
चंद्र	14/03/2020 10:45
मंगल	17/03/2020 14:48
राहु	25/03/2020 18:24
गुरु	02/04/2020 00:15
शनि	10/04/2020 14:43

मंगल - राहु - केतु	
10/04/2020 14:43	
02/05/2020 23:38	
केतु	11/04/2020 22:02
शुक्र	15/04/2020 15:31
सूर्य	16/04/2020 18:22
चंद्र	18/04/2020 15:07
मंगल	19/04/2020 22:26
राहु	23/04/2020 06:58
गुरु	26/04/2020 06:33
शनि	29/04/2020 19:34
बुध	02/05/2020 23:38

मंगल - राहु - शुक्र	
02/05/2020 23:38	
05/07/2020 21:41	
शुक्र	13/05/2020 15:18
सूर्य	16/05/2020 20:01
चंद्र	22/05/2020 03:51
मंगल	25/05/2020 21:20
राहु	04/06/2020 11:26
गुरु	12/06/2020 23:59
शनि	23/06/2020 02:52
बुध	02/07/2020 04:12
केतु	05/07/2020 21:41

मंगल - राहु - सूर्य	
05/07/2020 21:41	
25/07/2020 01:54	
सूर्य	06/07/2020 20:42
चंद्र	08/07/2020 11:03
मंगल	09/07/2020 13:53
राहु	12/07/2020 10:55
गुरु	15/07/2020 00:17
शनि	18/07/2020 01:09
बुध	20/07/2020 18:21
केतु	21/07/2020 21:12
शुक्र	25/07/2020 01:54

मंगल - राहु - चंद्र	
25/07/2020 01:54	
26/08/2020 00:55	
चंद्र	27/07/2020 17:49
मंगल	29/07/2020 14:34
राहु	03/08/2020 09:37
गुरु	07/08/2020 15:53
शनि	12/08/2020 17:20
बुध	17/08/2020 05:59
केतु	19/08/2020 02:44
शुक्र	24/08/2020 10:34
सूर्य	26/08/2020 00:55

मंगल - राहु - मंगल	
26/08/2020 00:55	
17/09/2020 09:50	
मंगल	27/08/2020 08:15
राहु	30/08/2020 16:47
गुरु	02/09/2020 16:22
शनि	06/09/2020 05:23
बुध	09/09/2020 09:27
केतु	10/09/2020 16:46
शुक्र	14/09/2020 10:15
सूर्य	15/09/2020 13:06
चंद्र	17/09/2020 09:50

मंगल - गुरु - गुरु	
17/09/2020 09:50	
01/11/2020 20:43	
गुरु	23/09/2020 11:17
शनि	30/09/2020 16:01
बुध	07/10/2020 02:33
केतु	09/10/2020 18:11
शुक्र	17/10/2020 08:00
सूर्य	19/10/2020 14:33
चंद्र	23/10/2020 09:27
मंगल	26/10/2020 01:05
राहु	01/11/2020 20:43

मंगल - गुरु - शनि	
01/11/2020 20:43	
25/12/2020 20:08	
शनि	10/11/2020 09:50
बुध	18/11/2020 01:21
केतु	21/11/2020 04:55
शुक्र	30/11/2020 04:49
सूर्य	02/12/2020 21:35
चंद्र	07/12/2020 09:32
मंगल	10/12/2020 13:06
राहु	18/12/2020 15:25
गुरु	25/12/2020 20:08

मंगल - गुरु - बुध	
25/12/2020 20:08	
12/02/2021 03:12	
बुध	01/01/2021 16:20
केतु	04/01/2021 11:57
शुक्र	12/01/2021 13:08
सूर्य	14/01/2021 23:05
चंद्र	18/01/2021 23:40
मंगल	21/01/2021 19:17
राहु	29/01/2021 01:08
गुरु	04/02/2021 11:41
शनि	12/02/2021 03:12

मंगल - गुरु - केतु	
12/02/2021 03:12	
04/03/2021 00:28	
केतु	13/02/2021 07:02
शुक्र	16/02/2021 14:35
सूर्य	17/02/2021 14:27
चंद्र	19/02/2021 06:13
मंगल	20/02/2021 10:04
राहु	23/02/2021 09:39
गुरु	26/02/2021 01:17
शनि	01/03/2021 04:51
बुध	04/03/2021 00:28

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - गुरु - शुक्र	
04/03/2021 00:28	
29/04/2021 20:04	
शुक्र	13/03/2021 11:44
सूर्य	16/03/2021 07:54
चंद्र	21/03/2021 01:32
मंगल	24/03/2021 09:05
राहु	01/04/2021 21:37
गुरु	09/04/2021 11:26
शनि	18/04/2021 11:20
बुध	26/04/2021 12:31
केतु	29/04/2021 20:04

मंगल - गुरु - सूर्य	
29/04/2021 20:04	
16/05/2021 21:08	
सूर्य	30/04/2021 16:31
चंद्र	02/05/2021 02:36
मंगल	03/05/2021 02:28
राहु	05/05/2021 15:50
गुरु	07/05/2021 22:22
शनि	10/05/2021 15:09
बुध	13/05/2021 01:06
केतु	14/05/2021 00:58
शुक्र	16/05/2021 21:08

मंगल - गुरु - चंद्र	
16/05/2021 21:08	
14/06/2021 06:56	
चंद्र	19/05/2021 05:57
मंगल	20/05/2021 21:44
राहु	25/05/2021 04:00
गुरु	28/05/2021 22:54
शनि	02/06/2021 10:51
बुध	06/06/2021 11:27
केतु	08/06/2021 03:13
शुक्र	12/06/2021 20:51
सूर्य	14/06/2021 06:56

मंगल - गुरु - मंगल	
14/06/2021 06:56	
04/07/2021 04:12	
मंगल	15/06/2021 10:47
राहु	18/06/2021 10:22
गुरु	21/06/2021 02:00
शनि	24/06/2021 05:34
बुध	27/06/2021 01:11
केतु	28/06/2021 05:01
शुक्र	01/07/2021 12:34
सूर्य	02/07/2021 12:26
चंद्र	04/07/2021 04:12

मंगल - गुरु - राहु	
04/07/2021 04:12	
24/08/2021 07:26	
राहु	11/07/2021 20:17
गुरु	18/07/2021 15:55
शनि	26/07/2021 18:14
बुध	03/08/2021 00:05
केतु	05/08/2021 23:41
शुक्र	14/08/2021 12:13
सूर्य	17/08/2021 01:35
चंद्र	21/08/2021 07:51
मंगल	24/08/2021 07:26

मंगल - शनि - शनि	
24/08/2021 07:26	
27/10/2021 09:45	
शनि	03/09/2021 11:00
बुध	12/09/2021 12:56
केतु	16/09/2021 06:40
शुक्र	26/09/2021 23:03
सूर्य	30/09/2021 03:58
चंद्र	05/10/2021 12:10
मंगल	09/10/2021 05:54
राहु	18/10/2021 20:39
गुरु	27/10/2021 09:45

मंगल - शनि - बुध	
27/10/2021 09:45	
23/12/2021 18:08	
बुध	04/11/2021 12:44
केतु	07/11/2021 21:02
शुक्र	17/11/2021 10:26
सूर्य	20/11/2021 07:15
चंद्र	25/11/2021 01:57
मंगल	28/11/2021 10:14
राहु	07/12/2021 00:41
गुरु	14/12/2021 16:12
शनि	23/12/2021 18:08

मंगल - शनि - केतु	
23/12/2021 18:08	
16/01/2022 08:53	
केतु	25/12/2021 03:12
शुक्र	29/12/2021 01:39
सूर्य	30/12/2021 05:59
चंद्र	01/01/2022 05:13
मंगल	02/01/2022 14:17
राहु	06/01/2022 03:17
गुरु	09/01/2022 06:51
शनि	13/01/2022 00:36
बुध	16/01/2022 08:53

मंगल - शनि - शुक्र	
16/01/2022 08:53	
24/03/2022 20:09	
शुक्र	27/01/2022 14:46
सूर्य	30/01/2022 23:43
चंद्र	05/02/2022 14:40
मंगल	09/02/2022 13:07
राहु	19/02/2022 16:01
गुरु	28/02/2022 15:55
शनि	11/03/2022 08:18
बुध	20/03/2022 21:42
केतु	24/03/2022 20:09

मंगल - शनि - सूर्य	
24/03/2022 20:09	
14/04/2022 01:56	
सूर्य	25/03/2022 20:27
चंद्र	27/03/2022 12:56
मंगल	28/03/2022 17:16
राहु	31/03/2022 18:08
गुरु	03/04/2022 10:54
शनि	06/04/2022 15:49
बुध	09/04/2022 12:38
केतु	10/04/2022 16:59
शुक्र	14/04/2022 01:56

मंगल - शनि - चंद्र	
14/04/2022 01:56	
17/05/2022 19:35	
चंद्र	16/04/2022 21:25
मंगल	18/04/2022 20:38
राहु	23/04/2022 22:05
गुरु	28/04/2022 10:02
शनि	03/05/2022 18:14
बुध	08/05/2022 12:56
केतु	10/05/2022 12:09
शुक्र	16/05/2022 03:06
सूर्य	17/05/2022 19:35

मंगल - शनि - मंगल	
17/05/2022 19:35	
10/06/2022 10:19	
मंगल	19/05/2022 04:38
राहु	22/05/2022 17:39
गुरु	25/05/2022 21:13
शनि	29/05/2022 14:57
बुध	01/06/2022 23:14
केतु	03/06/2022 08:18
शुक्र	07/06/2022 06:45
सूर्य	08/06/2022 11:06
चंद्र	10/06/2022 10:19

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शनि - राहु	
10/06/2022 10:19	
10/08/2022 03:40	
राहु	19/06/2022 12:55
गुरु	27/06/2022 15:14
शनि	07/07/2022 05:59
बुध	15/07/2022 20:27
केतु	19/07/2022 09:27
शुक्र	29/07/2022 12:21
सूर्य	01/08/2022 13:13
चंद्र	06/08/2022 14:39
मंगल	10/08/2022 03:40

मंगल - शनि - गुरु	
10/08/2022 03:40	
03/10/2022 03:05	
गुरु	17/08/2022 08:24
शनि	25/08/2022 21:30
बुध	02/09/2022 13:01
केतु	05/09/2022 16:35
शुक्र	14/09/2022 16:29
सूर्य	17/09/2022 09:16
चंद्र	21/09/2022 21:13
मंगल	25/09/2022 00:47
राहु	03/10/2022 03:05

मंगल - बुध - बुध	
03/10/2022 03:05	
23/11/2022 10:35	
बुध	10/10/2022 09:33
केतु	13/10/2022 09:23
शुक्र	21/10/2022 22:38
सूर्य	24/10/2022 12:13
चंद्र	28/10/2022 18:50
मंगल	31/10/2022 18:41
राहु	08/11/2022 11:24
गुरु	15/11/2022 07:36
शनि	23/11/2022 10:35

मंगल - बुध - केतु	
23/11/2022 10:35	
14/12/2022 13:41	
केतु	24/11/2022 16:10
शुक्र	28/11/2022 04:41
सूर्य	29/11/2022 06:02
चंद्र	01/12/2022 00:18
मंगल	02/12/2022 05:53
राहु	05/12/2022 09:57
गुरु	08/12/2022 05:33
शनि	11/12/2022 13:51
बुध	14/12/2022 13:41

मंगल - बुध - शुक्र	
14/12/2022 13:41	
12/02/2023 22:30	
शुक्र	24/12/2022 15:09
सूर्य	27/12/2022 15:36
चंद्र	01/01/2023 16:20
मंगल	05/01/2023 04:51
राहु	14/01/2023 06:10
गुरु	22/01/2023 07:21
शनि	31/01/2023 20:44
बुध	09/02/2023 09:59
केतु	12/02/2023 22:30

मंगल - बुध - सूर्य	
12/02/2023 22:30	
03/03/2023 01:09	
सूर्य	13/02/2023 20:14
चंद्र	15/02/2023 08:27
मंगल	16/02/2023 09:49
राहु	19/02/2023 03:01
गुरु	21/02/2023 12:58
शनि	24/02/2023 09:47
बुध	26/02/2023 23:21
केतु	28/02/2023 00:43
शुक्र	03/03/2023 01:09

मंगल - बुध - चंद्र	
03/03/2023 01:09	
02/04/2023 05:34	
चंद्र	05/03/2023 13:31
मंगल	07/03/2023 07:47
राहु	11/03/2023 20:26
गुरु	15/03/2023 21:02
शनि	20/03/2023 15:44
बुध	24/03/2023 22:21
केतु	26/03/2023 16:37
शुक्र	31/03/2023 17:21
सूर्य	02/04/2023 05:34

मंगल - बुध - मंगल	
02/04/2023 05:34	
23/04/2023 08:39	
मंगल	03/04/2023 11:09
राहु	06/04/2023 15:13
गुरु	09/04/2023 10:49
शनि	12/04/2023 19:07
बुध	15/04/2023 18:57
केतु	17/04/2023 00:32
शुक्र	20/04/2023 13:03
सूर्य	21/04/2023 14:24
चंद्र	23/04/2023 08:39

मंगल - बुध - राहु	
23/04/2023 08:39	
16/06/2023 16:36	
राहु	01/05/2023 12:15
गुरु	08/05/2023 18:06
शनि	17/05/2023 08:34
बुध	25/05/2023 01:17
केतु	28/05/2023 05:21
शुक्र	06/06/2023 06:40
सूर्य	08/06/2023 23:52
चंद्र	13/06/2023 12:32
मंगल	16/06/2023 16:36

मंगल - बुध - गुरु	
16/06/2023 16:36	
03/08/2023 23:39	
गुरु	23/06/2023 03:08
शनि	30/06/2023 18:39
बुध	07/07/2023 14:51
केतु	10/07/2023 10:28
शुक्र	18/07/2023 11:39
सूर्य	20/07/2023 21:36
चंद्र	24/07/2023 22:11
मंगल	27/07/2023 17:48
राहु	03/08/2023 23:39

मंगल - बुध - शनि	
03/08/2023 23:39	
30/09/2023 08:02	
शनि	13/08/2023 01:35
बुध	21/08/2023 04:34
केतु	24/08/2023 12:52
शुक्र	03/09/2023 02:15
सूर्य	05/09/2023 23:05
चंद्र	10/09/2023 17:47
मंगल	14/09/2023 02:04
राहु	22/09/2023 16:31
गुरु	30/09/2023 08:02

मंगल - केतु - केतु	
30/09/2023 08:02	
09/10/2023 00:50	
केतु	30/09/2023 20:13
शुक्र	02/10/2023 07:01
सूर्य	02/10/2023 17:28
चंद्र	03/10/2023 10:52
मंगल	03/10/2023 23:02
राहु	05/10/2023 06:22
गुरु	06/10/2023 10:12
शनि	07/10/2023 19:16
बुध	09/10/2023 00:50

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - सूर्य - केतु - बुध	
02/03/2019 19:22	
04/03/2019 07:35	
बुध	03/03/2019 00:30
केतु	03/03/2019 02:37
शुक्र	03/03/2019 08:39
सूर्य	03/03/2019 10:28
चंद्र	03/03/2019 13:29
मंगल	03/03/2019 15:36
राहु	03/03/2019 21:02
गुरु	04/03/2019 01:51
शनि	04/03/2019 07:35

चंद्र - सूर्य - शुक्र - शुक्र	
04/03/2019 07:35	
09/03/2019 09:20	
शुक्र	05/03/2019 03:53
सूर्य	05/03/2019 09:58
चंद्र	05/03/2019 20:07
मंगल	06/03/2019 03:13
राहु	06/03/2019 21:29
गुरु	07/03/2019 13:43
शनि	08/03/2019 08:59
बुध	09/03/2019 02:14
केतु	09/03/2019 09:20

चंद्र - सूर्य - शुक्र - सूर्य	
09/03/2019 09:20	
10/03/2019 21:52	
सूर्य	09/03/2019 11:10
चंद्र	09/03/2019 14:13
मंगल	09/03/2019 16:20
राहु	09/03/2019 21:49
गुरु	10/03/2019 02:41
शनि	10/03/2019 08:28
बुध	10/03/2019 13:39
केतु	10/03/2019 15:47
शुक्र	10/03/2019 21:52

चंद्र - सूर्य - शुक्र - चंद्र	
10/03/2019 21:52	
13/03/2019 10:44	
चंद्र	11/03/2019 02:56
मंगल	11/03/2019 06:29
राहु	11/03/2019 15:37
गुरु	11/03/2019 23:44
शनि	12/03/2019 09:23
बुध	12/03/2019 18:00
केतु	12/03/2019 21:33
शुक्र	13/03/2019 07:42
सूर्य	13/03/2019 10:44

चंद्र - सूर्य - शुक्र - मंगल	
13/03/2019 10:44	
15/03/2019 05:21	
मंगल	13/03/2019 13:14
राहु	13/03/2019 19:37
गुरु	14/03/2019 01:18
शनि	14/03/2019 08:03
बुध	14/03/2019 14:05
केतु	14/03/2019 16:34
शुक्र	14/03/2019 23:40
सूर्य	15/03/2019 01:48
चंद्र	15/03/2019 05:21

चंद्र - सूर्य - शुक्र - राहु	
15/03/2019 05:21	
19/03/2019 18:56	
राहु	15/03/2019 21:47
गुरु	16/03/2019 12:24
शनि	17/03/2019 05:45
बुध	17/03/2019 21:16
केतु	18/03/2019 03:40
शुक्र	18/03/2019 21:56
सूर्य	19/03/2019 03:24
चंद्र	19/03/2019 12:32
मंगल	19/03/2019 18:56

चंद्र - सूर्य - शुक्र - गुरु	
19/03/2019 18:56	
23/03/2019 20:20	
गुरु	20/03/2019 07:55
शनि	20/03/2019 23:20
बुध	21/03/2019 13:08
केतु	21/03/2019 18:49
शुक्र	22/03/2019 11:03
सूर्य	22/03/2019 15:55
चंद्र	23/03/2019 00:02
मंगल	23/03/2019 05:43
राहु	23/03/2019 20:20

चंद्र - सूर्य - शुक्र - शनि	
23/03/2019 20:20	
28/03/2019 15:59	
शनि	24/03/2019 14:38
बुध	25/03/2019 07:02
केतु	25/03/2019 13:46
शुक्र	26/03/2019 09:03
सूर्य	26/03/2019 14:50
चंद्र	27/03/2019 00:28
मंगल	27/03/2019 07:13
राहु	28/03/2019 00:34
गुरु	28/03/2019 15:59

चंद्र - सूर्य - शुक्र - बुध	
28/03/2019 15:59	
01/04/2019 23:29	
बुध	29/03/2019 06:39
केतु	29/03/2019 12:41
शुक्र	30/03/2019 05:56
सूर्य	30/03/2019 11:07
चंद्र	30/03/2019 19:44
मंगल	31/03/2019 01:46
राहु	31/03/2019 17:18
गुरु	01/04/2019 07:06
शनि	01/04/2019 23:29

चंद्र - सूर्य - शुक्र - केतु	
01/04/2019 23:29	
03/04/2019 18:05	
केतु	02/04/2019 01:58
शुक्र	02/04/2019 09:04
सूर्य	02/04/2019 11:12
चंद्र	02/04/2019 14:45
मंगल	02/04/2019 17:14
राहु	02/04/2019 23:37
गुरु	03/04/2019 05:18
शनि	03/04/2019 12:03
बुध	03/04/2019 18:05

मंगल - मंगल - मंगल - मंगल	
03/04/2019 18:05	
04/04/2019 06:16	
मंगल	03/04/2019 18:48
राहु	03/04/2019 20:38
गुरु	03/04/2019 22:15
शनि	04/04/2019 00:11
बुध	04/04/2019 01:54
केतु	04/04/2019 02:37
शुक्र	04/04/2019 04:39
सूर्य	04/04/2019 05:15
चंद्र	04/04/2019 06:16

मंगल - मंगल - मंगल - राहु	
04/04/2019 06:16	
05/04/2019 13:35	
राहु	04/04/2019 10:58
गुरु	04/04/2019 15:09
शनि	04/04/2019 20:06
बुध	05/04/2019 00:32
केतु	05/04/2019 02:22
शुक्र	05/04/2019 07:35
सूर्य	05/04/2019 09:09
चंद्र	05/04/2019 11:46
मंगल	05/04/2019 13:35

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - मंगल - मंगल - गुरु	
05/04/2019 13:35	
06/04/2019 17:26	
गुरु	05/04/2019 17:18
शनि	05/04/2019 21:43
बुध	06/04/2019 01:39
केतु	06/04/2019 03:17
शुक्र	06/04/2019 07:55
सूर्य	06/04/2019 09:19
चंद्र	06/04/2019 11:38
मंगल	06/04/2019 13:15
राहु	06/04/2019 17:26

मंगल - मंगल - मंगल - शनि	
06/04/2019 17:26	
08/04/2019 02:29	
शनि	06/04/2019 22:40
बुध	07/04/2019 03:21
केतु	07/04/2019 05:17
शुक्र	07/04/2019 10:47
सूर्य	07/04/2019 12:26
चंद्र	07/04/2019 15:12
मंगल	07/04/2019 17:07
राहु	07/04/2019 22:05
गुरु	08/04/2019 02:29

मंगल - मंगल - मंगल - बुध	
08/04/2019 02:29	
09/04/2019 08:04	
बुध	08/04/2019 06:41
केतु	08/04/2019 08:24
शुक्र	08/04/2019 13:20
सूर्य	08/04/2019 14:49
चंद्र	08/04/2019 17:17
मंगल	08/04/2019 19:00
राहु	08/04/2019 23:27
गुरु	09/04/2019 03:23
शनि	09/04/2019 08:04

मंगल - मंगल - मंगल - केतु	
09/04/2019 08:04	
09/04/2019 20:15	
केतु	09/04/2019 08:47
शुक्र	09/04/2019 10:49
सूर्य	09/04/2019 11:25
चंद्र	09/04/2019 12:26
मंगल	09/04/2019 13:09
राहु	09/04/2019 14:58
गुरु	09/04/2019 16:36
शनि	09/04/2019 18:32
बुध	09/04/2019 20:15

मंगल - मंगल - मंगल - शुक्र	
09/04/2019 20:15	
11/04/2019 07:03	
शुक्र	10/04/2019 02:03
सूर्य	10/04/2019 03:47
चंद्र	10/04/2019 06:41
मंगल	10/04/2019 08:43
राहु	10/04/2019 13:56
गुरु	10/04/2019 18:35
शनि	11/04/2019 00:05
बुध	11/04/2019 05:01
केतु	11/04/2019 07:03

मंगल - मंगल - मंगल - सूर्य	
11/04/2019 07:03	
11/04/2019 17:29	
सूर्य	11/04/2019 07:34
चंद्र	11/04/2019 08:27
मंगल	11/04/2019 09:03
राहु	11/04/2019 10:37
गुरु	11/04/2019 12:01
शनि	11/04/2019 13:40
बुध	11/04/2019 15:09
केतु	11/04/2019 15:45
शुक्र	11/04/2019 17:29

मंगल - मंगल - मंगल - चंद्र	
11/04/2019 17:29	
12/04/2019 10:53	
चंद्र	11/04/2019 18:56
मंगल	11/04/2019 19:57
राहु	11/04/2019 22:34
गुरु	12/04/2019 00:53
शनि	12/04/2019 03:38
बुध	12/04/2019 06:06
केतु	12/04/2019 07:07
शुक्र	12/04/2019 10:01
सूर्य	12/04/2019 10:53

मंगल - मंगल - राहु - राहु	
12/04/2019 10:53	
15/04/2019 19:26	
राहु	12/04/2019 22:58
गुरु	13/04/2019 09:43
शनि	13/04/2019 22:28
बुध	14/04/2019 09:52
केतु	14/04/2019 14:34
शुक्र	15/04/2019 04:00
सूर्य	15/04/2019 08:01
चंद्र	15/04/2019 14:44
मंगल	15/04/2019 19:26

मंगल - मंगल - राहु - गुरु	
15/04/2019 19:26	
18/04/2019 19:01	
गुरु	16/04/2019 04:58
शनि	16/04/2019 16:19
बुध	17/04/2019 02:27
केतु	17/04/2019 06:38
शुक्र	17/04/2019 18:34
सूर्य	17/04/2019 22:08
चंद्र	18/04/2019 04:06
मंगल	18/04/2019 08:17
राहु	18/04/2019 19:01

मंगल - मंगल - राहु - शनि	
18/04/2019 19:01	
22/04/2019 08:02	
शनि	19/04/2019 08:29
बुध	19/04/2019 20:31
केतु	20/04/2019 01:29
शुक्र	20/04/2019 15:39
सूर्य	20/04/2019 19:54
चंद्र	21/04/2019 02:59
मंगल	21/04/2019 07:57
राहु	21/04/2019 20:42
गुरु	22/04/2019 08:02

मंगल - मंगल - राहु - बुध	
22/04/2019 08:02	
25/04/2019 12:06	
बुध	22/04/2019 18:48
केतु	22/04/2019 23:15
शुक्र	23/04/2019 11:55
सूर्य	23/04/2019 15:43
चंद्र	23/04/2019 22:04
मंगल	24/04/2019 02:30
राहु	24/04/2019 13:54
गुरु	25/04/2019 00:03
शनि	25/04/2019 12:06

मंगल - मंगल - राहु - केतु	
25/04/2019 12:06	
26/04/2019 19:25	
केतु	25/04/2019 13:55
शुक्र	25/04/2019 19:08
सूर्य	25/04/2019 20:42
चंद्र	25/04/2019 23:19
मंगल	26/04/2019 01:09
राहु	26/04/2019 05:50
गुरु	26/04/2019 10:01
शनि	26/04/2019 14:59
बुध	26/04/2019 19:25

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 9 मास 20 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
25/03/2015		**13/01/2018**		**12/01/2033**		**12/01/2041**		**13/01/2058**	
13/01/2018		**12/01/2033**		**12/01/2041**		**13/01/2058**		**13/01/2068**	
	00/00/0000	चंद्र	13/02/2020	मंगल	17/08/2033	बुध	17/09/2043	शनि	17/12/2058
	00/00/0000	मंगल	24/03/2021	बुध	20/11/2034	शनि	14/04/2045	गुरु	19/09/2060
	00/00/0000	बुध	04/08/2023	शनि	17/08/2035	गुरु	10/04/2048	राहु	30/10/2061
	00/00/0000	शनि	23/12/2024	गुरु	12/01/2037	राहु	01/03/2050	शुक्र	10/10/2063
	25/03/2015	गुरु	14/08/2027	राहु	03/12/2037	शुक्र	20/06/2053	सूर्य	30/04/2064
गुरु	14/03/2016	राहु	14/04/2029	शुक्र	24/06/2039	सूर्य	31/05/2054	चंद्र	20/09/2065
राहु	13/11/2016	शुक्र	14/03/2032	सूर्य	04/12/2039	चंद्र	10/10/2056	मंगल	17/06/2066
शुक्र	13/01/2018	सूर्य	12/01/2033	चंद्र	12/01/2041	मंगल	13/01/2058	बुध	13/01/2068

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
13/01/2068		**13/01/2087**		**13/01/2099**		**14/01/2120**	
13/01/2087		**13/01/2099**		**14/01/2120**		**00/00/0000**	
गुरु	18/05/2071	राहु	14/05/2088	शुक्र	13/02/2103	सूर्य	15/05/2120
राहु	27/06/2073	शुक्र	13/09/2090	सूर्य	15/04/2104	चंद्र	15/03/2121
शुक्र	08/03/2077	सूर्य	15/05/2091	चंद्र	16/03/2107	मंगल	25/08/2121
सूर्य	28/03/2078	चंद्र	12/01/2093	मंगल	04/10/2108	बुध	05/08/2122
चंद्र	16/11/2080	मंगल	03/12/2093	बुध	24/01/2112	शनि	24/02/2123
मंगल	14/04/2082	बुध	24/10/2095	शनि	04/01/2114	गुरु	26/03/2123
बुध	10/04/2085	शनि	03/12/2096	गुरु	14/09/2117		00/00/0000
शनि	13/01/2087	गुरु	13/01/2099	राहु	14/01/2120		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 2 वर्ष 9 मास 24 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
25/03/2015		**17/01/2018**		**17/01/2026**		**17/01/2027**		**17/01/2029**	
17/01/2018		**17/01/2026**		**17/01/2027**		**17/01/2029**		**18/01/2032**	
	00/00/0000	संक	29/10/2019	मंग	27/01/2026	पिंग	27/02/2027	धांय	18/04/2029
	00/00/0000	मंग	18/01/2020	पिंग	17/02/2026	धांय	29/04/2027	भ्राम	18/08/2029
	00/00/0000	पिंग	28/06/2020	धांय	19/03/2026	भ्राम	19/07/2027	भद्रि	17/01/2030
	00/00/0000	धांय	27/02/2021	भ्राम	29/04/2026	भद्रि	29/10/2027	उल्क	19/07/2030
	25/03/2015	भ्राम	17/01/2022	भद्रि	18/06/2026	उल्क	27/02/2028	सिद्ध	17/02/2031
भ्राम	28/11/2015	भद्रि	27/02/2023	उल्क	18/08/2026	सिद्ध	18/07/2028	संक	18/10/2031
भद्रि	17/11/2016	उल्क	28/06/2024	सिद्ध	28/10/2026	संक	28/12/2028	मंग	18/11/2031
उल्क	17/01/2018	सिद्ध	17/01/2026	संक	17/01/2027	मंग	17/01/2029	पिंग	18/01/2032

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
18/01/2032		**18/01/2036**		**17/01/2041**		**17/01/2047**		**17/01/2054**	
18/01/2036		**17/01/2041**		**17/01/2047**		**17/01/2054**		**17/01/2062**	
भ्राम	28/06/2032	भद्रि	27/09/2036	उल्क	17/01/2042	सिद्ध	29/05/2048	संक	29/10/2055
भद्रि	17/01/2033	उल्क	29/07/2037	सिद्ध	19/03/2043	संक	18/12/2049	मंग	18/01/2056
उल्क	17/09/2033	सिद्ध	19/07/2038	संक	18/07/2044	मंग	27/02/2050	पिंग	28/06/2056
सिद्ध	29/06/2034	संक	29/08/2039	मंग	17/09/2044	पिंग	19/07/2050	धांय	27/02/2057
संक	19/05/2035	मंग	18/10/2039	पिंग	17/01/2045	धांय	17/02/2051	भ्राम	17/01/2058
मंग	29/06/2035	पिंग	28/01/2040	धांय	19/07/2045	भ्राम	28/11/2051	भद्रि	27/02/2059
पिंग	18/09/2035	धांय	28/06/2040	भ्राम	19/03/2046	भद्रि	17/11/2052	उल्क	28/06/2060
धांय	18/01/2036	भ्राम	17/01/2041	भद्रि	17/01/2047	उल्क	17/01/2054	सिद्ध	17/01/2062

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष	
17/01/2062	
17/01/2063	
मंग	27/01/2062
पिंग	17/02/2062
धांय	19/03/2062
भ्राम	29/04/2062
भद्रि	18/06/2062
उल्क	18/08/2062
सिद्ध	28/10/2062
संक	17/01/2063

पिंगला 2 वर्ष	
17/01/2063	
17/01/2065	
पिंग	27/02/2063
धांय	29/04/2063
भ्राम	19/07/2063
भद्रि	29/10/2063
उल्क	27/02/2064
सिद्ध	18/07/2064
संक	28/12/2064
मंग	17/01/2065

धान्या 3 वर्ष	
17/01/2065	
18/01/2068	
धांय	18/04/2065
भ्राम	18/08/2065
भद्रि	17/01/2066
उल्क	19/07/2066
सिद्ध	17/02/2067
संक	18/10/2067
मंग	18/11/2067
पिंग	18/01/2068

भ्रामरी 4 वर्ष	
18/01/2068	
18/01/2072	
भ्राम	28/06/2068
भद्रि	17/01/2069
उल्क	17/09/2069
सिद्ध	29/06/2070
संक	19/05/2071
मंग	29/06/2071
पिंग	18/09/2071
धांय	18/01/2072

भद्रिका 5 वर्ष	
18/01/2072	
17/01/2077	
भद्रि	27/09/2072
उल्क	29/07/2073
सिद्ध	19/07/2074
संक	29/08/2075
मंग	18/10/2075
पिंग	28/01/2076
धांय	28/06/2076
भ्राम	17/01/2077

उल्का 6 वर्ष	
17/01/2077	
17/01/2083	
उल्क	17/01/2078
सिद्ध	19/03/2079
संक	18/07/2080
मंग	17/09/2080
पिंग	17/01/2081
धांय	19/07/2081
भ्राम	19/03/2082
भद्रि	17/01/2083

सिद्धा 7 वर्ष	
17/01/2083	
17/01/2090	
सिद्ध	29/05/2084
संक	18/12/2085
मंग	27/02/2086
पिंग	19/07/2086
धांय	17/02/2087
भ्राम	28/11/2087
भद्रि	17/11/2088
उल्क	17/01/2090

संकटा 8 वर्ष	
17/01/2090	
17/01/2098	
संक	29/10/2091
मंग	18/01/2092
पिंग	28/06/2092
धांय	27/02/2093
भ्राम	17/01/2094
भद्रि	27/02/2095
उल्क	28/06/2096
सिद्ध	17/01/2098

मंगला 1 वर्ष	
17/01/2098	
17/01/2099	
मंग	27/01/2098
पिंग	17/02/2098
धांय	19/03/2098
भ्राम	29/04/2098
भद्रि	18/06/2098
उल्क	18/08/2098
सिद्ध	28/10/2098
संक	17/01/2099

पिंगला 2 वर्ष	
17/01/2099	
18/01/2101	
पिंग	27/02/2099
धांय	29/04/2099
भ्राम	19/07/2099
भद्रि	29/10/2099
उल्क	27/02/2100
सिद्ध	19/07/2100
संक	29/12/2100
मंग	18/01/2101

धान्या 3 वर्ष	
18/01/2101	
19/01/2104	
धांय	19/04/2101
भ्राम	19/08/2101
भद्रि	18/01/2102
उल्क	20/07/2102
सिद्ध	18/02/2103
संक	19/10/2103
मंग	19/11/2103
पिंग	19/01/2104

भ्रामरी 4 वर्ष	
19/01/2104	
19/01/2108	
भ्राम	29/06/2104
भद्रि	18/01/2105
उल्क	18/09/2105
सिद्ध	30/06/2106
संक	20/05/2107
मंग	30/06/2107
पिंग	19/09/2107
धांय	19/01/2108

भद्रिका 5 वर्ष	
19/01/2108	
18/01/2113	
भद्रि	28/09/2108
उल्क	30/07/2109
सिद्ध	20/07/2110
संक	30/08/2111
मंग	19/10/2111
पिंग	29/01/2112
धांय	29/06/2112
भ्राम	18/01/2113

उल्का 6 वर्ष	
18/01/2113	
18/01/2119	
उल्क	18/01/2114
सिद्ध	20/03/2115
संक	19/07/2116
मंग	18/09/2116
पिंग	18/01/2117
धांय	20/07/2117
भ्राम	20/03/2118
भद्रि	18/01/2119

सिद्धा 7 वर्ष	
18/01/2119	
00/00/0000	
सिद्ध	30/05/2120
संक	19/12/2121
मंग	28/02/2122
पिंग	20/07/2122
धांय	18/02/2123
भ्राम	26/03/2123
	00/00/0000
	00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 1 वर्ष 10 मास 4 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : रोहिणी - 3 अपसव्य
देह : कुम्भ जीव : कन्या

कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
25/03/2015		**27/01/2017**		**27/01/2026**		**27/01/2042**		**27/01/2049**	
27/01/2017		**27/01/2026**		**27/01/2042**		**27/01/2049**		**28/01/2059**	
	00/00/0000	मिथु	10/01/2018	वृष	31/01/2029	मेष	26/08/2042	धनु	02/04/2050
	00/00/0000	वृष	21/09/2019	मेष	28/05/2030	धनु	23/06/2043	मक	21/09/2050
	00/00/0000	मेष	18/06/2020	धनु	14/04/2032	मक	21/10/2043	कुंभ	12/03/2051
	00/00/0000	धनु	09/07/2021	मक	14/01/2033	कुंभ	18/02/2044	कन्या	01/04/2052
	00/00/0000	मक	11/12/2021	कुंभ	16/10/2033	कन्या	15/11/2044	सिंह	02/11/2052
	00/00/0000	कुंभ	15/05/2022	कन्या	27/06/2035	सिंह	14/04/2045	कर्क	24/04/2055
	25/03/2015	कन्या	28/04/2023	सिंह	05/06/2036	कर्क	06/01/2047	मिथु	14/05/2056
कन्या	03/11/2015	सिंह	07/11/2023	कर्क	19/05/2040	मिथु	04/10/2047	वृष	02/04/2058
सिंह	27/01/2017	कर्क	27/01/2026	मिथु	27/01/2042	वृष	27/01/2049	मेष	28/01/2059

मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
28/01/2059		**28/01/2063**		**28/01/2067**		**28/01/2076**		**27/01/2081**	
28/01/2063		**28/01/2067**		**28/01/2076**		**27/01/2081**		**00/00/0000**	
मक	06/04/2059	कुंभ	06/04/2063	कन्या	11/01/2068	सिंह	14/05/2076	कर्क	06/04/2086
कुंभ	14/06/2059	कन्या	08/09/2063	सिंह	22/07/2068	कर्क	08/08/2077	मिथु	26/06/2088
कन्या	16/11/2059	सिंह	03/12/2063	कर्क	12/10/2070	मिथु	18/02/2078	वृष	09/06/2092
सिंह	10/02/2060	कर्क	28/11/2064	मिथु	25/09/2071	वृष	28/01/2079	मेष	03/03/2094
कर्क	05/02/2061	मिथु	02/05/2065	वृष	05/06/2073	मेष	27/06/2079	धनु	21/08/2096
मिथु	09/07/2061	वृष	01/02/2066	मेष	03/03/2074	धनु	28/01/2080	मक	17/08/2097
वृष	10/04/2062	मेष	01/06/2066	धनु	24/03/2075	मक	23/04/2080	कुंभ	13/08/2098
मेष	09/08/2062	धनु	20/11/2066	मक	26/08/2075	कुंभ	18/07/2080	कन्या	25/03/2100
धनु	28/01/2063	मक	28/01/2067	कुंभ	28/01/2076	कन्या	27/01/2081		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 5 वर्ष	
25/03/2015	
24/03/2020	
कन्या	24/08/2015
तुला	24/01/2016
वृश्चि	24/06/2016
धनु	23/11/2016
मक	24/04/2017
कुंभ	23/09/2017
मीन	22/02/2018
मेष	25/07/2018
वृष	24/12/2018
मिथु	25/05/2019
कर्क	24/10/2019
सिंह	24/03/2020

कन्या 7 वर्ष	
24/03/2020	
25/03/2027	
तुला	23/10/2020
वृश्चि	25/05/2021
धनु	24/12/2021
मक	25/07/2022
कुंभ	23/02/2023
मीन	24/09/2023
मेष	24/04/2024
वृष	23/11/2024
मिथु	24/06/2025
कर्क	23/01/2026
सिंह	24/08/2026
कन्या	25/03/2027

तुला 6 वर्ष	
25/03/2027	
25/03/2033	
वृश्चि	24/09/2027
धनु	24/03/2028
मक	23/09/2028
कुंभ	25/03/2029
मीन	23/09/2029
मेष	25/03/2030
वृष	24/09/2030
मिथु	25/03/2031
कर्क	24/09/2031
सिंह	24/03/2032
कन्या	23/09/2032
तुला	25/03/2033

वृश्चिक 4 वर्ष	
25/03/2033	
25/03/2037	
तुला	24/07/2033
कन्या	23/11/2033
सिंह	25/03/2034
कर्क	25/07/2034
मिथु	23/11/2034
वृष	25/03/2035
मेष	25/07/2035
मीन	24/11/2035
कुंभ	24/03/2036
मक	24/07/2036
धनु	23/11/2036
वृश्चि	25/03/2037

धनु 7 वर्ष	
25/03/2037	
24/03/2044	
वृश्चि	24/10/2037
तुला	25/05/2038
कन्या	24/12/2038
सिंह	25/07/2039
कर्क	23/02/2040
मिथु	23/09/2040
वृष	24/04/2041
मेष	23/11/2041
मीन	24/06/2042
कुंभ	23/01/2043
मक	24/08/2043
धनु	24/03/2044

मकर 2 वर्ष	
24/03/2044	
25/03/2046	
धनु	24/05/2044
वृश्चि	24/07/2044
तुला	23/09/2044
कन्या	23/11/2044
सिंह	23/01/2045
कर्क	25/03/2045
मिथु	25/05/2045
वृष	24/07/2045
मेष	23/09/2045
मीन	23/11/2045
कुंभ	23/01/2046
मक	25/03/2046

कुम्भ 5 वर्ष	
25/03/2046	
25/03/2051	
मीन	24/08/2046
मेष	23/01/2047
वृष	24/06/2047
मिथु	24/11/2047
कर्क	24/04/2048
सिंह	23/09/2048
कन्या	22/02/2049
तुला	24/07/2049
वृश्चि	24/12/2049
धनु	25/05/2050
मक	24/10/2050
कुंभ	25/03/2051

मीन 8 वर्ष	
25/03/2051	
25/03/2059	
मेष	24/11/2051
वृष	24/07/2052
मिथु	25/03/2053
कर्क	23/11/2053
सिंह	25/07/2054
कन्या	25/03/2055
तुला	24/11/2055
वृश्चि	24/07/2056
धनु	25/03/2057
मक	23/11/2057
कुंभ	25/07/2058
मीन	25/03/2059

मेष 12 वर्ष	
25/03/2059	
25/03/2071	
वृष	24/03/2060
मिथु	25/03/2061
कर्क	25/03/2062
सिंह	25/03/2063
कन्या	24/03/2064
तुला	25/03/2065
वृश्चि	25/03/2066
धनु	25/03/2067
मक	24/03/2068
कुंभ	25/03/2069
मीन	25/03/2070
मेष	25/03/2071

वृष 11 वर्ष	
25/03/2071	
25/03/2082	
मेष	23/02/2072
मीन	23/01/2073
कुंभ	24/12/2073
मक	23/11/2074
धनु	24/10/2075
वृश्चि	23/09/2076
तुला	24/08/2077
कन्या	25/07/2078
सिंह	24/06/2079
कर्क	24/05/2080
मिथु	24/04/2081
वृष	25/03/2082

मिथुन 8 वर्ष	
25/03/2082	
25/03/2090	
वृष	23/11/2082
मेष	25/07/2083
मीन	24/03/2084
कुंभ	23/11/2084
मक	24/07/2085
धनु	25/03/2086
वृश्चि	23/11/2086
तुला	25/07/2087
कन्या	24/03/2088
सिंह	23/11/2088
कर्क	24/07/2089
मिथु	25/03/2090

कर्क 2 वर्ष	
25/03/2090	
24/03/2092	
मिथु	25/05/2090
वृष	25/07/2090
मेष	24/09/2090
मीन	23/11/2090
कुंभ	23/01/2091
मक	25/03/2091
धनु	25/05/2091
वृश्चि	25/07/2091
तुला	24/09/2091
कन्या	24/11/2091
सिंह	24/01/2092
कर्क	24/03/2092

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	99%	भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	78%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	67%	दम्पति, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	64%	धन, दम्पति
माणिक्य	सूर्य	62%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
पुखराज	गुरु	50%	कम खर्च, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
नीलम	शनि	9%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, व्यय

रत्न की शुभता

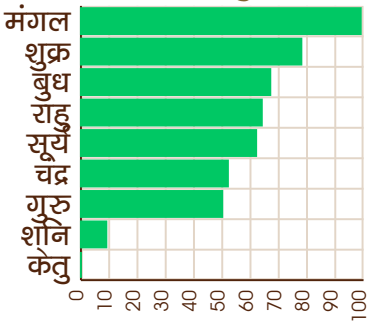

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	03/04/2019	69%	64%	99%	73%	50%	78%	9%	52%	0%
मंगल	03/04/2026	69%	58%	100%	55%	56%	78%	9%	52%	7%
राहु	03/04/2044	50%	29%	86%	67%	50%	84%	22%	77%	0%
गुरु	03/04/2060	69%	58%	100%	55%	62%	66%	9%	64%	0%
शनि	03/04/2079	50%	29%	86%	73%	50%	84%	34%	71%	0%
बुध	03/04/2096	69%	29%	99%	80%	50%	84%	9%	64%	0%
केतु	04/04/2103	50%	29%	100%	67%	50%	84%	0%	52%	19%
शुक्र	04/04/2123	50%	29%	99%	73%	50%	91%	22%	71%	7%
सूर्य	04/04/2129	75%	58%	100%	67%	56%	66%	0%	52%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, गोमेद, माणिक्य, मोती एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

नीलम व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः

आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध

मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रुप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको आर्थिक पक्ष को मजबूत करेगा। रत्न प्रभाव से आप धन

कमाने के साथ-साथ आप धन की बचत भी कर पाएंगे। आपको जीवन साथी के माध्यम से धनागमन होगा। माणिक्य रत्न आपको एक सुखी जीवन देगा। यह रत्न आपके धैर्य को बनाये रखेगा। यह रत्न आपको अधिक से अधिक धन संचय करने में सहयोग करेगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपके पिता से संबंध मधुर बनायेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश सूर्य के मित्र है। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न आपकी व्यय संबंधी चिन्ताओं का अंत कर सकता है। मोती रत्न को धारण कर आप अपनी व्यावसायिक कार्यों की परेशानियों में कमी कर सकते है। मोती रत्न आपके मानसिक सुखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हानियों से बचाव करने में आप सफल हो सकते है। विदेश प्रवास के लिए भी इस रत्न को आप धारण कर सकते है। साथ ही यह रत्न आपको ऋणों से मुक्ति प्राप्त कर अस्पताल, जेल, कारावास इत्यादि से बच सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। गुरु ग्रह का पुखराज रत्न आपके लिए शुभ रत्न रहेगा। पुखराज रत्न धारण कर आप धार्मिक आचरण करेंगे। आपकी परोपकार प्रवृत्ति देगा। रत्न शुभता से आप अप्रिय भाषण और व्यर्थ विषयों पर व्यय करने से बचेंगे। पुखराज शुभता आपको चिकित्सक, लोकसेवक सम्पादक, वेदज्ञानी, धर्मगुरु या सम्पादक बना सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको जीवन काल में धन, सम्पत्ति, सोना, वस्त्र आदि पर्याप्त मात्रा में देगा। साथ ही दूर प्रदेशों के प्रवास से आपको लाभ और कीर्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते है। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते है। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिश, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने से आपमें धैर्य की कमी और लोभ भावना जन्म ले सकती है है। रत्न प्रभाव से नौकरी, विवाह एवं संतान सुख में कमी हो सकती है। नीलम रत्न आपको शत्रुओं के द्वारा हानि करा सकता है। शारीरिक रुप से कम सुख मिल सकते है। आपकी संगति खराब लोगों के साथ हो सकती है। मानसिक चिंताएं या कष्ट आपको परेशान कर सकते है। यह नीलम रत्न आपके वैवाहिक जीवन में प्रतिकूल फल दे सकता है। जन्म स्थान से दूर रहने के योग अधिक बना सकता है। इस रत्न से माता को बीच-बीच में कष्ट रह सकता है। रत्न प्रभाव से आपको अपने पिता की संपत्ति से वंचित होना पड़ सकता है.

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यों से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र
(25/03/2015 - 03/04/2019)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, माणिक्य, मोती, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(03/04/2019 - 03/04/2026)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मोती, पुखराज, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(03/04/2026 - 03/04/2044)

राहु की दशा में आपका मूंगा, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(03/04/2044 - 03/04/2060)

गुरु की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, गोमेद, पुखराज, मोती व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(03/04/2060 - 03/04/2079)

शनि की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(03/04/2079 - 03/04/2096)

बुध की दशा में आपका मूंगा, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(03/04/2096 - 04/04/2103)

केतु की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(04/04/2103 - 04/04/2123)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(04/04/2123 - 04/04/2129)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, मोती, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको

परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता -पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 5, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है परन्तु शास्त्रानुसार आपका यह मांगलिक दोष भंग हो रहा है। अतः यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्यशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा आप शुभ कार्यों पर ही अधिक व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य सुख का उपभोग करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा तथापि इसके प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यंत ही शांत एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा । इसके अतिरिक्त आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा। अतः शत्रुओं से आपको किसी भी प्रकार परेशानी या असुविधा नहीं होगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में भाग्यशाली सिद्ध होंगे। मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि होने से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी। आत्मविश्वास एवं साहसपूर्वक आप अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। समाज में अपना प्रभाव भी स्थापित करने में सफल रहेंगे। भाई बहनों से भी आप जीवन में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से शत्रु

पक्ष प्रायः निर्बल रहेगा एवं आपका विरोध करने में सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए उत्तम रहेगी। अतः आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का समावेश होगा परन्तु आपके प्रति उनके मन में पूर्ण सहयोग तथा समर्पण की भावना रहेगी तथा परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यंत ही सुखी एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना वैवाहिक जीवन प्रारंभ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर के समाज में पूर्ण यश अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुंडली मिलान के समय यदि कन्या की कुंडली में भी द्वादश भाव में ही मंगल स्थित हो तो अत्यावश्यक होने पर विवाह करें अन्यथा उपेक्षा ही करें। क्यों कि समान भावों में मंगल होने से जीवन में अधिक व्यय होने के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन में तनाव या कटुता का वातावरण उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में मंगल स्थित होने से अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट हो जाएगा एवं शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझकर एवं सावधानी पूर्वक विवाह करने के लिए अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 25 है। दो और पाँच के योग से 7 आपका मूलांक होता है। मूलांक 7 का स्वामी भारतीय ज्योतिष में केतु को तथा पाश्चात्य विद्वानों ने नेपच्यून को माना है। अंक दो का स्वामी चन्द्र तथा अंक पाँच का स्वामी बुध ग्रह है। आपके जीवन पर इन तीनों ग्रहों का संयुक्त प्रभाव अंक ज्योतिषानुसार आयेगा।

मूलांक सात के प्रभाव से कल्पना शक्ति आपके अन्दर उच्चकोटि की रहेगी। आपकी रुचियों में गीत संगीत गद्य-पद्य, नाच-गान, ललित कलाएं, साहित्य, लेखन इत्यादि रहेगा। धनसंग्रह की ओर आप विशेष ध्यान नहीं देंगे। इससे कई बार आपको आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ेगा। घूमना-फिरना, दूरस्थ देशों की यात्रा करना आपको आनन्दित करेगा।

आपकी विचारधारा परिवर्तन शील, आधुनिक होगी एवं प्राचीन रीति-रिवाजों की आप विशेष परवाह नहीं करेंगे। अतीन्द्रिय ज्ञान आपमें अच्छा होने से आप सामने वाले व्यक्ति के मनोभावों को बड़ी आसानी से समझ जाया करेंगे। दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट करने का गुण आपमें अच्छा रहेगा। यात्राएं आपके लिए लाभप्रद रहेंगी एवं ऐसा क्षेत्र जिसमें यात्राएं अधिक रहती हों आपके लिये भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

देश-विदेश, भूमि- वाहन आपको विशेष लाभ देंगे। अंक दो चन्द्र का ऋणात्मक अंक होने से आपके अन्दर आशंका, असफलता के अवगुण आयेंगे। आपका जीवन चक्र ऊँचाईयों-निचाईयों से ओत-प्रोत रहेगा। अंक पांच के प्रभाव से आप एक बौद्धिक स्तर के व्यक्ति रहेंगे तथा शारीरिक श्रम की अपेक्षा बौद्धिक स्तर के कार्य करना अधिक पसन्द करेंगे। आपका भाग्योदय जन्म स्थान से अन्यत्र होगा।

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हूकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपका मूलांक 7 है तथा भाग्यांक 9 है। मूलांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा भाग्यांक 9 का स्वामी मंगल है। मूलांक 7 एवं भाग्यांक 9 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा और कभी-कभी

तो दोनों ही शुभ-अशुभ फल प्रदान करेंगे। संयुक्त रूप में मूलांक-भाग्यांक के प्रभाववश आप ऐसा ही रोजगार-व्यापार पसंद करेंगे, जिसमें आपकी हुकूमत चलती रहे। रोजगार के क्षेत्र में आप स्वतंत्र विचारधारा के तथा अपनी मर्जी के मालिक बनने की कोशिश करते रहेंगे। आप शीघ्रातिशीघ्र अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करना पसंद करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी रहेगी एवं अपनी मेहनत तथा लगन से आप युवावस्था से ही धन कमाना प्रारंभ कर देंगे। भौतिक सुख-साधन आपको काफी अच्छी मात्रा में प्राप्त होंगे तथा अपने साहस एवं मेहनत के द्वारा अच्छी संपत्ति एकत्रित करने में सफल होंगे। प्रारंभ में सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं होगी। लेकिन प्रौढ़ावस्था से आपका सामाजिक क्षेत्र सुदृढ़ होता चला जाएगा एवं वांछित मान-सम्मान प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 27 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 36 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 45 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 7 की 2 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में, 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन की कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके जीवन के मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 7 एवं भाग्यांक 9 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक होंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42 51 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे तथा इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में सिंह लग्नोदय काल में हुआ था। साथ ही कन्या नवमांश एवं धनु राशि के द्रेष्काण द्वारा एक शुभ आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भारत स्थित शहरी क्षेत्र के निवासियों के समान जो कार्य काल बसों की प्रतीक्षा और दौड़-धूप कर अपने कार्य पर पहुंचते है। उस प्रकार की दिक्कतें का सामना आपको नहीं करना होगा। अर्थात् जन्म के शुभ लक्षण से यह प्रतीत हो रहा है कि आपको जन्म से ही वाहन सुख प्राप्त होगा।

आपको कही भी यात्रा क्रम में सार्वजनिक यातायात के लिए गाड़ी बस ट्रान्सपोर्ट आदि प्रकार की सुविधा हेतु बिना संघर्ष के ही आपकी यात्रा के पथ प्रशस्त होंगे। कही भी बस आदि से यात्रा हेतु कतार में लगकर अपने समय का अपव्यय नहीं करना पड़ेगा। आपको अपनी यात्रा हेतु अपने पास कार-बस आदि उपलब्ध होने का लाभ एवं आनन्द प्राप्त करने का वरदान प्राप्त है। वास्तविकता तो यह है कि आपको अपने स्वयं के पास वाहनों की सुविधा युक्त समर्थ होने का सौभाग्य प्राप्त है।

आपका जीवन उत्तम प्रकार के वाहन सुखों से युक्त, आरामदायक एवं आनन्द से परिपूर्ण रहेगा। आप अपार धन, सम्पति से युक्त कुशाग्र बुद्धि के विद्वान एवं अनेक कलाओं में प्रवीण होंगे। आप सर्वोत्तम प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करेंगे। आप निम्नरूपेण उच्च श्रेणी की सेवा एवं कर्म से संबंधित रहेंगे। जो आपके लिए उपयुक्त एवं लाभप्रद प्रमाणित होगा।

आप व्यक्तिगत रूप से सतत कठिन श्रम करने वाले, उपव्यवसाय की खोज में लगे रहने वाले, दृढ़निश्चयी एवं प्रभावशाली प्राणी होंगे। आप सदा-सर्वदा कार्य विन्दु को निर्धारित समय से पूर्व संपन्न करने के पहले ही अन्य कार्य को हस्तगत करने के इच्छुक रहेंगे तथा आप निश्चित रूप से अपने अनुबंध में सफलता प्राप्त करेंगे।

आप भ्रमणप्रिय हैं। आप अपना अधिक समय घर से बाहर अन्यत्र बिताएंगे। किसी प्रकार विवश होकर कुछ समय अपने प्रिय परिवार के लिए बचाकर उनके साथ बिताएंगे। आप अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से सभी कार्यों को प्रसन्नतापूर्वक संपन्न कर लेंगे।

आपकी मित्र मण्डली बड़ी होगी। आपके मित्र आपको सहानुभूति पूर्वक मान-प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। आप अपने रास्ते से चलेंगे-वे मित्रगण आपका सहयोग करेंगे। मित्रगण आपका उच्चस्तरीय मूल्यांकन कर अपनी दिशा मोड़कर आपकी पंक्ति में खड़े होंगे अर्थात् आपको साथ देंगे।

आप मात्र अपने कर्म व्यवसाय से ही नहीं अच्छे लाभ प्राप्त करेंगे। आप तो सदैव भाग्यशाली समय अर्थात् मौके की तलाश में रहकर अपने भाग्य को दाव पर लगाकर लाभ प्राप्त करेंगे। इसका यह अर्थ नहीं कि आप सदैव ही जुआ खेलकर अपने भाग्योन्नति हेतु प्रयास करेंगे। परन्तु आप यदा-कदा पाशे फेंक कर आपने इस कर्म को लाभदायक प्रमाणित कर सकते हों।

आपकी महत्वपूर्ण आय प्रर्याप्त है, इसमें किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं है। आप बहुत धन संचय करने में समर्थ नहीं हैं क्योंकि आप जन सामान्य की नजरों में यह प्रदर्शित करेंगे कि आप अपने परिवार को एक धनाढ्य व्यक्ति की तरह भरण पोषण करते हैं। आप सदैव अपनी आय का कुछ अंश अपने घर में व्यय करेंगे।

यद्यपि आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तथापि बाद में कतिपय रोगादि के प्रति आपको थोड़ी सतर्कता बरतना आवश्यक है। क्योंकि आपका कार्यक्रम व्यस्ततम रहता है तथा लम्बे समय तक कार्यरत रहेंगे।

आपकी यह कार्यतंत्रियाँ अधिक समय तक कार्यरत रहने के लिए सक्षम नहीं भी हो सकता है। फलस्वरूप आपके हृदय पर एवं रीढ़ की हड्डियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतएव आपको इस व्यस्ततम कार्यक्रम का प्रतिकार कर शान्तिपूर्वक विश्राम ग्रहण करना चाहिए।

आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवन पर अनुकूल प्रभाव हेतु पूर्णिमा का व्रत रखना अच्छा होगा। इससे आपको विभिन्न प्रकार का अति सहयोग प्राप्त होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अनुकूल एवं प्रदोल्लित करने वाले अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक है। परन्तु अंक 2, 7 एवं 8 अंक आपके लिए प्रतिकूल हैं।

आपके लिए अनुकूल रंग नारंगी, लाल एवं हरा रंग है। रंग नीला, सफेद एवं काला रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय पुरूष होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगे। आपको स्वपुरूषार्थ से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगे तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगे। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करते रहेंगे। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते

हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आंमत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्य मान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी। साथ ही दीर्घकाल तक किसी वस्तु को याद रख सकेंगे तथा शीघ्र ही ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख सुविधाएं एवं आधुनिक उपकरणों से युक्त करने में हमेशा तत्पर रहेंगे परन्तु यदि वे आपकी अपेक्षा अनुसार व्यवहार नहीं करते है या कोई कार्य नहीं करते हैं तो आप शीघ्र उनपर उत्तेजित हो जाएंगे परन्तु पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए अपने पर नियंत्रण रखने में भी सफल रहेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा उत्तेजना में कभी भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगे। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगे तथा समाज में आदरणीय भी समझें जाएंगे। अपने सुख एवं वैभव पूर्ण जीवन के लिए आपको संचार संबन्धी उपकरण यथा दूर भाष दूरदर्शन या अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगे। आप रोमांटिक संगीत के प्रिय रहेंगे तथा समय समय पर संगीत से अपना तथा अन्य जनों का मनोरंजन करेंगे। आपकी आनन्ददायक यात्राएं होती रहेंगी तथा दूर समीप की यात्राओं से इच्छित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रा के मध्य नवीन मित्रों को बनाने में सफल रहेंगे तथा संबन्धियों से भी आप सहयोग प्राप्त करेंगे। आप सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे साथ ही अध्ययन में भी रुचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। परन्तु नौकरों तथा सेवकों की बहुलता रहेगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप भौतिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख-संसाधनों से भी युक्त रहेंगे। लेकिन शनि के प्रभाव से इनकी प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। चूंकि आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः अपने इन गुणों से सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे तथा आपका वांछित सामाजिक स्तर बना रहेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व आपको प्राप्त होगा तथा किसी बुजुर्ग व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति हो सकती है। लेकिन जीवन में आपको विवादित सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पडेगा। इसके अतिरिक्त चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति पर ही विशेष पूंजीनिवेश करना चाहिए।

आपको प्रारंभ में सामान्य घर में निवास करना पड़ेगा परंतु मध्यावस्था के बाद आपको अच्छे घर की प्राप्ति होगी। आपका यह घर आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप तत्पर होंगे। आपका घर मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु आपसी संबंधों में औपचारिक्ता अधिक होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आप पूर्ण रूपेण मध्यावस्था के बाद ही अर्जित करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी बुद्धिमान एवं भौतिकवादी महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट रखेंगी। आपकी उन्नति में उनका पूर्ण योगदान होगा तथा समयानुसार उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग मिलता रहेगा लेकिन आप दोनों के मध्य यदा कदा सैद्धांतिक मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः आप दोनों को चाहिए कि ऐसी स्थितियां उत्पन्न न हों।

अध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन प्रारंभिक परीक्षाओं में आपको अच्छे अंक मिल सकते है। लेकिन स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम करना पडेगा तभी आप इसमें इच्छित सफलता अर्जित कर सकते है। यदि आप तकनीकी शिक्षा में डिप्लोमा या अन्य पाठ्यक्रम में प्रवेश ले तो आपको इसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति हो सकती है क्यों कि आप तकनीकी कार्य करने में काफी सुविधा महसूस करते है। इससे आपके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य बनाने में समर्थ होंगे।

नैसर्गिक पापी ग्रह शनि की मंगल की राशि में स्थिति के कारण युवावस्था के बाद आप रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों की अनुभूति कर सकते है। अतः यदि आप प्रारंभ से ही ऐसे पदार्थो का सेवन न करे जिससे रक्त चाप या हृदय प्रभावित होता हो तो आप की उपरोक्त समस्याओं में कभी आएगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रखयाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रखयाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आपको मजबूत विपक्ष का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रहें हो या अपने व्यवसाय के कार्य में किसी साझेदार का चुनाव कर रहें हो तो इससे साझेदार या जिसके लिए कार्य कर रहे है शत्रुता का भाव आरंभ हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक व्यक्ति है तथा यत्नपूर्वक शत्रुता के भाव की उपेक्षा करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु आपके कार्य कलापों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य जन प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे तथा इसी सन्दर्भ में कोई मुकद्दमेबाजी प्रारंभ हो सकती है। आप अपने धैर्य शान्ति तथा प्रतिभा से अपने शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही कभी भी शत्रुपक्ष की गतिविधियों से विचलित नहीं होंगे।

आपकी उचित सेवा करने के लिए आपके पास अच्छे नौकर होंगे लेकिन अधिक होने पर उनमें से कोई एक यदा कदा आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः सेवकों का चुनाव करते समय सावधान तथा सतर्क रहें। आपके संबन्धी कार्य क्षेत्र में आपके लिए हानि कारक रहेंगे तथा वास्तव में वे ही आपके मुख्य शत्रु होंगे अतः सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें। आप सीमित एवं आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करेंगे। अतः ऋण आदि की आवश्यकता के अवसर बहुत कम आएंगे लेकिन युवास्था में यदा कदा ऐसी स्थिति आएगी परन्तु उसको संभालने में आप समर्थ रहेंगे। आपके मामा मामियों के प्रति पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक या अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। साथ ही मामियों का मामाओं पर प्रभाव रहेगा।

आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे यद्यपि आप मुकद्दमे बाजी की उपेक्षा करेंगे तथा कोर्ट से बाहर ही उसका समाधान चाहेंगे। यदि ऐसा नहीं होता तो तभी आप कोर्ट में जाएंगे। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं प्रभाव से शत्रु एवं विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करके अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बुध भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कुम्भ राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव पित प्रकृति कुल में श्रेष्ठ व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा बुध के प्रभाव से वह सुशील बुद्धिमान एवं सांसारिक कार्य कलापों में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की बुद्धिमान महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। वह अपने कुल में श्रेष्ठ होगी तथा बुध के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगी । इसके अतिरिक्त सहिष्णुता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा।

आपकी पत्नी सुंदर एवं गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी ऊंचा होगा। बुध के प्रभाव से उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत रहेंगी। इस प्रकार कला संगीत एवं सौन्दर्य का वह संगम होंगी।

आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप अपनी इच्छा से भी प्रेम विवाह सम्पन्न कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं परस्पर प्रेम आकर्षण तथा अपनत्व का भाव होगा साथ ही सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। आप दोनों बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा जीवन में मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी। अतः आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष धनवान एवं प्रभाशाली होगा। विवाह में आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं बहुमूल्य उपहार भी मिलेंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा वे भी आपको पुत्रवत स्नेह प्रदान करेंगे तथा भविष्य में भी उनसे आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का प्रबल सेवा भाव रहेगा तथा अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने मधुर स्वभाव तथा मृदुवाणी से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी तथा वे भी उन्हें वांछित सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको विशिष्ट लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। संबंधी वर्ग से साझेदारी करने पर अतिरिक्त लाभ प्राप्त होगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा ज्योतिष या तंत्र मंत्र का ज्ञान भी रहेगा। इस क्षेत्र में आपको इच्छित मान सम्मान एवं सफलता भी प्राप्त होगी तथा समय समय पर आप इससे लाभान्वित होते रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी या किसी वृद्ध संबन्धी की जमीन जायदाद भी आपको मिल सकती है। आप सर्वप्रकार से खुशहाल रहेंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे। साथ ही आपके एक से अधिक आवास स्थल हो सकते हैं। शादी से आपको लाभ होगा तथा आपकी पत्नी किसी धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होगी अथवा वे किसी कार्य क्षेत्र में रत हो सकती है। साथ ही आपके ससुराल वाले आपको अपेक्षा से अधिक धन एवं अन्य कीमती वस्तुएं प्रदान करेंगे ।

बीमा आदि करवाने से भी आपको समय समय पर लाभ हो सकता है लेकिन दीर्घावधि की अपेक्षा यदि आप लधुअवधि के बीमे करवाएं तो इसमें आपको शीघ्र एवं प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सम्बधित वस्तु या प्राणी की पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि के द्वारा कोई हानि नहीं है यद्यपि जीवन में एक बार चोर अवश्य आपके यहां आएंगे लेकिन वे कोई कीमती वस्तु को चुराने में असफल रहेंगे क्योंकि आप पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे तथा बहुमूल्य वस्तुओं की विशेष सुरक्षा करेंगे। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगे तथा धार्मिक एवं पारिवारिक रीति रिवाजों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप प्रतिदिन भगवान का ध्यान अवश्य करेंगे परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी । क्योंकि आपके विचार से यह पद्धति कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बनाई गई है। धार्मिक कार्यों पर व्यय करने में भी आप अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगे जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि या योगादि के भी इच्छुक रहेंगे तथा तंत्र मंत्र में भी यदा कदा रूचि का प्रदर्शन करेंगे। तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि करने में भी आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में आप भीड़ से तथा पूजा आदि संस्कारों से घबराहट की अनुभूति करते है। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा। साथ ही धार्मिक आध्यात्मिक, तंत्र मंत्र, ज्योतिष तथा इनसे सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करने में रूचिशील रहेंगे।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति रहेगी तथा भविष्यवाणी आदि करने में भी आप समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा इससे समाज में आपको आदर तथा ख्याति प्राप्त होगी । यदि आप कहीं विकट परिस्थितियों में फंसेंगे तो भाग्य बल से इससे सुरक्षित हो जाएंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं से आप लाभ तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करेंगे। पौत्रों से आपको खुशी एवं सुख प्राप्त होगा साथ ही समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपके पूर्वजन्म के पुण्य इस जन्म में आपको खुशहाली प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही स्वोच्चराशि में चन्द्रमा भी दशम भाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमि तत्व एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से भी युक्त होगा तथा आप समय समय पर इसमें वांछित परिवर्तन भी करते रहेंगे लेकिन इन परिवर्तनों से आपको इच्छित लाभ की भी प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जल से उत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल आदि के व्यापार से, मछली का व्यापार मिटटी के खिलौने, वालू, ईट आदि के कार्य से, इलैक्ट्रोनिक उपकरण, सफेद एवं आलंकारिक वस्त्रों का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध- धी-दही से वांछित लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही रेशमी कपड़ों के कार्य से भी इच्छित धनार्जन होगा। अतः इच्छित लाभ एवं उन्नति के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार प्रारंभ करना चाहिए। इससे आपके उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दशमभाव में उच्च राशि में चन्द्रमा के प्रभाव से आप जीवन में वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। साथ ही किसी उच्चपद को प्राप्त करने में भी समर्थ होंगे। अपने क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में दूर दूर तक आपका यश व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी कोई महत्वपूर्ण पदाधिकारी मनोनीत होंगे इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में समाज में माने जाएंगे।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त बुद्धिमान शिक्षित एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे। उनका स्वभाव शांत तथा गंभीर होगा तथा लोगों की भलाई के लिए कार्यो को करने में वे तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा तथा आपकी उन्नति एवं सफलता में वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही उनके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आप मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। आप भी अपने उत्तम एवं बुद्धिमतापूर्ण कार्यो से उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही परस्पर सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता भी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप उनकी आज्ञा का पालन करने में भी तत्पर होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म के समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन हमेशा उमंगो से युक्त रहेगा तथा आपकी मानसिक इच्छाएं समय समय पर आपके परिश्रम तथा योग्यता से पूर्ण होती रहेंगी। आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेंगे। आप सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही लेखन कमीशन संवाददाता, ज्यौतिष तथा व्यापार से इच्छित धन लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं क्षेत्रों में आपको लाभ होगा। आपका बड़ी बहनों के प्रति पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही भाइयों से भी नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली के आप सम्मानीय सदस्य समझे जाएंगे तथा आपके सभी मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे। मित्रों के बीच में आपको नवीन आनन्द की प्राप्ति होगी तथा आपस में विषय विशेष के प्रति भी तर्क होंगे जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही सामाजिक जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगे तथा उनके परोपकार संबन्धी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे एवं मानवता के आदर्श गुणों से भी युक्त रहेंगे। आप जिस क्षेत्र में रहते है वहां के लोगों तथा पड़ोसियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी लोगों के मध्य आप की प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। आपको समय समय पर विशेष सम्मान भी मिलते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगे तथा उनसे संबंध स्थापित करके आनन्द की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया भाग्यशाली होंगे तथा आर्थिक दृष्टि से आपके कई स्रोत होंगे जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आप किसी संस्था या सरकार में किसी उच्च पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा कम महत्वपूर्ण कार्यों को अपने सहायकों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे अपने आपको आपसे उपेक्षित न समझें।

आपका व्यय अधिक मात्रा में रहेगा फलतः अवस्था के साथ साथ यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं आप एक स्वच्छंद प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगे तथा बिना अपनी स्थिति देखे हुए कई बार अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि तो अवश्य होगी लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः आपको इस आदत पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए आप कभी कभी अनावश्यक व्यय करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे भी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी अतः आपको ऐसे व्ययों पर अंकुश रखना चाहिए। युवावस्था में आपको कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखने पड़ेगें लेकिन व्यय आप जो भी तथा जहां भी करेंगे वह अच्छे कार्य के लिए ही होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी। साथ ही इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या विभागीय के कार्य से होंगी साथ ही विदेश भ्रमण के भी योग बनते है तथा काफी समय तक आपका प्रवास हो सकता है। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका मनुष्य गण, वैश्यवर्ण, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा सर्प योनि है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का आधाक्षर "वि" या "वी" से प्रारम्भ होगा। यथा विनय, वीरेन्द्र आदि।

आप धर्म कर्म में तथा ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले आस्तिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा स्वभाव से सुशील होंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने की क्षमता आपके अन्दर विद्यमान होगी। जिससे देखने या सुनने वाले चकित रह जाएंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा किसी कठिन से कठिन विषय को सरलता पूर्वक समझाने की कला में आप निपुण होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। कभी भी आपको इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आप उस आदमी के प्रति अत्यन्त ही कृतज्ञता प्रकट करेंगे जो आपका थोड़ा सा भी कोई कार्य सम्पन्न कर देता है। मंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप प्रिय वाणी बोलने वाले होंगे जो सभी लोगों को प्रिय लगेगी। सत्य का अनुपालन आप अपने जीवन में करते रहेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

स्वास्थ आपका सामान्य रूप से उत्तम रहेगा। रोगग्रस्त कम ही रहेंगे। उत्साह से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जो भी कार्य आरम्भ करेंगे। उत्साह पूर्वक उसे सम्पन्न करेंगे। आपका चरित्र तथा आचरण उत्तम एवं प्रशसंनीय होगा।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप आत्मिक तथा शारीरिक पवित्रता दोनों का यत्नपूर्वक पालन करेंगे तथा प्रयत्न पूर्वक दोंनो की पवित्रता आजीवन बनाए रखेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी तथा जो भी कार्य करेंगे शीघ्रता से नहीं अपितु एकाग्रचित हो कर करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ होगा। तथा अन्य जनों के दोषों को जान लेने में आप चतुर होंगे। आप एक विद्वान पुरूष भी होंगे।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है अतः आप लालिमायुक्त गौर वर्ण के होंगे तथा आपके गाल भी स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े-बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का अंश भी स्वभाव से ही आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव निहित रहेगा। ब्राहमणों तथा गुरूजनों के भी आप परम आज्ञाकारी होंगे तथा श्रद्धा से उनका मान सम्मान करेंगे। आप अच्छी बुद्धि वाले होंगे तथा स्वभाव वात और कफ मिश्रित होगा।

आपका जीवन प्रायः सुखी रहेगा तथा आप दानशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आपके बाल भी घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

जीवन में आप सर्व प्रकार से सुखों से युक्त रहेंगे। शुद्धता तथा सफाई के प्रति आप प्रारम्भ से ही पूर्ण रूपेण सजग रहेंगे। समस्त कार्यों को सम्पन्न करने में आप पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगे। आप बलवान भी होंगे। धनागम पर्याप्त मात्रा में होने से आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से इन वस्तुओं पर व्यय करेंगे। तेजस्विता का भाव भी आपमे विद्यमान रहेगा। आप सद्गुणों से युक्त अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता भी दीर्घकालीन होगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुख तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण व्यतीत होंगे परन्तु अन्तिम दो भाग अत्यन्त ही सुख एवं आनन्द से व्यतीत होंगे। स्त्री वर्ग से आप विशेष आकृष्ट रहेंगे। क्षमाशीलता एवं त्याग की भावना आपके अन्तर्मन में निहित होगी। जिसका समयानुसार आप प्रदर्शन करते रहेंगे। प्रारम्भिकावस्था में आपको सामान्य रूप से कष्ट सहने पड़ेगे तथा परिश्रम भी अधिक करना पडेगा। आपके पीठ मुख तथा बगल में तिल, मस्सा या व्रणादि का निशान भी हो सकता है।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या सन्तति की संख्या पुत्र संतति से अधिक होगी। आपका व्यवहार तथा चरित्र प्रशंसनीय होगा। आप आजीवन धन का उपभोग करते हुए अपने यश को चारों तरफ फैलाएंगे।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने बालों से युक्त रहेंगे तथा आप न्याय प्रिय तथा

शुद्धाशुद्ध का ज्ञान करने में चतुर होंगे। आप सुन्दर गति से चलेंगे तथा शरीर तथा शरीर के अंग दीर्घ तथा सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना का समावेश स्वभाव से ही आपके मन में रहेगा तथा आप इसका प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। इसी प्रकार अपने सत्कार्यों तथा पुण्य के द्वारा जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमण्डल की आकृति थोडी बड़ी होगी तथा विलास सहित गमन प्रिय होंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की भी प्रबलता रहेगी। स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाले तथा शिव एवं विष्णु भगवान की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप धार्मिक प्रवृति एवं श्रद्धालु व्यक्ति होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम सेवा भावना युक्त श्रद्धा होगी। अभिमान का अंश भी आपके अन्दर व्याप्त रहेगा। आप बल से युक्त रहेंगे तथा दया तथा करूणा की भावना आपके हृदय में व्याप्त रहेगी। अतः दीन दुःखियों की आप यथा शक्ति सेवा तथा सहायता करेंगे। आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं के जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा इसको प्राप्त करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। साथ ही बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करेंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

धन तथा मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा इनका आपको आजीवन

अभाव नहीं रहेगा। आप निशाने बाजी की कला में अत्यन्त दक्ष होंगे। आप गौरवर्ण के होंगे तथा नगरवासियों को वश में करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे अर्थात् आप किसी नगर के प्रमुख व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी आँखें भी आकृति में बडी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप सर्प योनि में पैदा हुए हैं। अतः आप कभी कभी अत्यन्त क्रोध के भाव का प्रदर्शन करेंगे। प्रवृति में भी चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप अत्यन्त स्वाद लोलुप होंगे। खट्टा मीठा, तीखे स्वादों की आप हर समय इच्छा रखेंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको

सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष, मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्याराशि में चन्द्रमा यह समय सदैव अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण लेन-देन, क्रय-विक्रय आदि न करें। इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी कोई कार्य प्रारम्भ न करें। अन्यथा अशुभ फल ही अधिक मिलेंगे। इस प्रकार शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक कष्ट हो रहा हो व्यापार में हानि या नौकरी अथवा प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो ऐसे समय में आपको शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, कपूर, शहद इत्यादि पदार्थों का भी ध्यान रखना चाहिए। इससे मानसिक शक्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 20 हजार जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फल कम होंगे तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शिव या विष्णु की आराधना भी कर सकते हैं।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

वार्षिक फलादेश - 2019

इस वर्ष शनि धनु राशि में पंचम भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में पंचम भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा। दशम स्थान पर गुरु की दृष्टि से व्यवसायिक उन्नति का योग बन रहा है। समय-समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ भी प्राप्त होता रहेगा। पंचमस्थ शनि व केतु के प्रभाव से आपको सट्टा व शेयर मार्केट आदि से लाभ होने के संकेत हैं।

सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपको किसी बड़ी कम्पनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर भी प्राप्त होगा। आप दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे और कार्यक्षेत्र में अच्छा करते रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों कीपदोन्नतिहोगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष विशेष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी तथा इस वर्ष आपको बड़ी मात्रा में धन लाभ होने के प्रबल संकेत हैं। आप इस वर्ष कोई नया घर अथवा वाहन खरीदेंगे। अचानक धन लाभ होने के साथ-साथ रुके हुए पैसे की भी प्राप्ति होगीं यदि किसी भी व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा।

आपके अन्दर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी। निवेश करने के लिए समय उपयुक्त है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनाए रखेंगे। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। यह वर्ष संतान के जन्म का शुभ समाचार लेकर आयेगा।

आपके पिता जी के लिए बहुत अच्छा समय है। बच्चे के स्वास्थ्य संबंधी चिन्ताएं समाप्त होंगी। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपको बच्चों का सहयोग प्राप्त होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के लिए तथा गर्भाधान आदि के लिए समय उपयुक्त है।

इस वर्ष आपकी संतान को तकनीकि कार्यों, विज्ञान व प्रोद्योगिकी आदि में सफलता मिलेगी।आपकी संतान अपने कार्य क्षेत्र में दक्षता प्राप्त करके विश्वसनीयता हासिल करेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा तथा आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। आपकी योगासन के साथ-साथ व्यायाम सीखने में भीरुचि बढ़ेगी।

आपके घर का अच्छा वातावरण तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता व निरंतर धन लाभ आपको मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रखेगा क्योंकि आप पूर्णतया तनाव मुक्त रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। करियर में आसानी से सफलता प्राप्त होगी। आपके के लिए यह वर्ष रोजगार के नये अवसर भी पैदा कर सकता है।

यह वर्ष तकनीकि शिक्षा, प्रोद्योगिकी, मेडीकलव इंजीनियरिंग आदि के लिए श्रेष्ठ है। एकादश स्थान का राहु प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिला सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टिक से यह वर्ष अनुकूल है वर्षारंभ में द्वादश स्थान का राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहा है। नौकरी करने वालों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानांतरण होगा।

आप अपने जन्म भूमि की यात्रा करेंगे अथवा उस स्थान पर जायेंगे जहां आपकी माता का निवास स्थल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। पंचम भाव में केतु व शनि के प्रभाव से आप मंत्र जप आदि क्रियाओं में निष्णात होंगे। आपको मंत्र सिद्धि प्राप्त होगी। माता पिता व श्रेष्ठजनों का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को चढ़ाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी दुर्वा चढ़ाएं एवं ऊं गं गणपतये नमः मंत्र का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वबुद्धि बल से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे तथा पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके अधिकाशं शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभार्जन करने में सफल रहेंगे एवं समाज से भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। अतः मन से भी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा इसके लिए आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

फरवरी 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। फलतः शरीर में कमजोरी रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे वे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। फलतः आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको किसी भी प्रकार से दण्डित भी किया जा सकता है। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। आपके मित्रों एवं संबधियों से भी इस मास तनाव पूर्ण संबध रहेंगे तथा मनोकामनाएं भी अल्प मात्रा में पूर्ण होगी। इस समय मान हानि का भी योग बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

इसके साथ ही इस मास में आप वायुजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा आग के द्वारा भी आपको धन हानि हो सकती है। अतः आपको पूर्ण रूप से सतर्क होकर अपना समय व्यतीत करना चाहिए।

मार्च 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस समय आपमें उत्साह के भाव की अल्पता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक संकट भी प्राप्त कर सकते है। आपके मन में इस मास में लोभ के भाव की बहुलता रहेगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा मित्रों एवं बन्धु वर्ग से संबधों में इस समय तनाव रहेगा तथा मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। अतः हृदय से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य सामाजिक जनों से भी परस्पर वाद विवाद होते रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करना चाहिए जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं इनसे आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न रहेंगे।

अप्रैल 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा अतः इस समय शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी तथा अनावश्यक व्यय भी होगा एवं शुभ कार्यो में विध्न बाधाएं भी उत्पन्न होंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा इसके अनुपालन में भी उपेक्षा का भाव रखेंगे। आप इस समय शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं कई प्रकार से कष्ट भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। इस मास में आप दूर की किसी यात्रा को भी संम्पन्न कर सकते है। सांसारिक कार्यो में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा अतः मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोष से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है तथा अग्नि आदि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सतर्कता पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें जिससे अनावश्यक कष्ट तथा बाधाएं उत्पन्न न हों।

मई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप मात्रा में लाभार्जन करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग

आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय से सम्पन्न हो जाएंगे। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपका यश दूर दूर तक फैलेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य शीघ्र सम्पन्न होते रहेंगे। आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी करेंगे।साथ ही उच्चाधिकारियों से मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों से अत्यंत ही मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण मास विविध प्रकार के सुखों को उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगे तथा समाज से यश भी अर्जित करेंगे।

जून 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके अधिकारी तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप पदोन्नति के अधिक अवसर प्राप्त करेंगे। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपकी ख्याति भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकते है तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप अन्य प्रकार से सुख तथा ऐश्वर्य अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सुख पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

जुलाई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगे। साथ ही सरकार तथा उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ एवं सहयोग अर्जित करने

में सफल रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इसको प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से भी आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति करेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे संतति पक्ष से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। सामाजिक जनों के मध्य आप इस समय मान सम्मान प्राप्त करेंगे तथा आपके विलम्बित कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप धर्मानुपालन में भी प्रवृत रहेंगे एवं समाज में यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अगस्त 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः इस समय आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। आप का इस मास में व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अपने ही परिश्रम से सिद्ध हो सकेंगे फिर भी आपको पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिलेगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बनेंगे। मित्रों एवं संबधियों के मध्य आपके संबधों में तनाव रहेगा तथा इनसे आवश्यक सुख तथा सहयोग भी नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उसमें अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। शत्रुओं से भी आपके हृदय में नित्य चिन्ता तथा भय का वातावरण बना रहेगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो में भी मनोवांछित सिद्धि नहीं मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप अपने श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के अवसर बनेंगे। इस मास में आपकी यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे।

सितम्बर 2019 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे साथ ही आपके लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप इस मास में धनार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी

मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित होगा। इस समय सासारिक कार्यो को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं संतति से पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

अक्तूबर 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही समाज से भी आप उचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप मिष्ठान अधिक मात्रा में भ क्षण करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में वृद्धि होगी। इस समय आपके शत्रु क्षीण रहेंगे अतः उनका दमन करने में आप को सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इसके साथ ही व्यापार आदि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित होगी जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी अतः आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा।

नवम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी आप इस मास में कार्य करते रहेंगे। इस समय स्वास्थ्य भी सामान्य ही रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे

आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे।अतः आप गर्मी या पित्तादि से उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही किसी प्रकार से रूधिर विकार की संभावना भी हो सकती है अतः शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे कष्ट अल्प मात्रा में हों।

दिसम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करगें। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजिविका संबधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

वार्षिक फलादेश - 2020

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में षष्ठ भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में एकादश भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरू मकर राशि में षष्ठ भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में षष्ठ भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। कार्य व्यवसाय में निरन्तर सफलता, स्थिरता व धन लाभ के विशेष योग बने हुए हैं।

छठे स्थान में स्थित शनि नौकरी करने वालों की पदोन्नति के साथ साथ स्थानांतरण भी करा सकते हैं। यह स्थानांतरण उनके अनुकूल स्थान पर होगा। 19 सितम्बर के बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। एकादश स्थान का राहु धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। निवेश के मामलों में सफलता प्राप्त होगी। आय के स्रोत का सुदृढ़ीकरण होगा।

इस वर्ष अचानक उन्नति के चलते काफी धनागम होगा और आप अपने आगामी भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए निवेश भी करते रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। वर्षारम्भ में पंचमस्थ गुरू के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियो को संतान सुख की प्राप्ति होगी।

आपके भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपको समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। समाज में आपका सम्माान बढ़ेगा। 30 मार्च से जून पर्यन्त गुरू एवं शनि ग्रह का युति षष्ठ स्थान में होगी। इस समय आपको अपने शत्रु पक्ष व प्रतिद्वन्दियों पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा रहेगा। पंचमस्थ गुरू के प्रभाव से नव विवाहित व्यक्यिो को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम

संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

यदि आप का बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 30 माार्च से जून प्रयन्त संतान के लिए समय थोड़ा प्रभावित होगा। उसके बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी।

30 मार्च से जून पर्यन्त गुरू ग्रह का गोचर छठे स्थान में होगा। इस समय के अंतराल छोटी मोटी बीमारियों से आप का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो सावधानी की ज्यादा आवश्यकता है। 29 जून के बाद धीरे धीरे स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा और वर्ष भर अनुकूल रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप प्रतियोगी परीक्षओं मे सफलता प्राप्त करेंगे।

उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते है तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है। जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनको अच्छी सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपको रोजगार की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप छोटी मोटी यात्रा करते रहेगे। इस याात्रा से आपको काफी लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 30 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धर्म स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा। आप अपने गुरूजनो का संमान करेंगे उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2021

इस वर्ष शनि मकर राशि में षष्ठ भाव में और राहु वृष राशि में दशम भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में सप्तम भाव में आ जाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि कोण से यह वर्ष श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। दशमस्थ राहु के कारण आपको अपने व्यावसायिक जीवन में अचानक उन्नति प्राप्त होगी। आपके शत्रु व प्रतिद्वन्दी परास्त होंगे। आप सभी क्षेत्रों में विजयी होंगे। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में नया मुकाम हासिल करेंगे।

6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक सप्तम स्थान में गुरू का गोचर होगा। उसके प्रभाव से व्यापारिकरिश्ते सुदृढ़ होंगे व आपको अनेक नये लोगों के साथ साझेदारी के अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे।यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं अच्छा लाभ प्राप्त होगा। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति वर्ष भर सुदृढ़ रहेगी। व्यावसायिक जीवन में अचानक उन्नति होने से आय में बढ़ोतरी होगी।

6 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान में गुरू ग्रह का गोचर व्यापार या मित्रों, जीवनसाथी व साझेदारों के माध्यम से धन प्राप्ति के योग बन रह हैं। आप के जीवनसाथी से भी आपको धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्तर पर देखा जाए तो व्यावसायिक जीवन की व्यस्तता के बावजूद भी आप घर परिवार की सभी जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करेंगे।

आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके भाइयों की उन्नति होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। आपके शत्रु भी आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। इस वर्ष आपको अपने संतान को लेकर चिन्ताएं रह सकती हैं। परन्तु आपकी प्रथम सन्तान के करियर व धन वृद्धि के भी योग बने हुए हैं।

आपकी दूसरी सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा। उसे हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी परन्तु यदा-कदा शारीरिक कष्ट भी होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। छोटी मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को लेकर परेशान न होंक्योंकि कोई भी रोग दीर्घकालिक नहीं होगा।

मन में अच्छे व सकारात्मक विचार आएंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा कार्य क्षमताओं में निखार आयेगा और आपका व्यक्तित्व पूर्ण रूपेण विकसित होने लगेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए यह वर्ष विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उसके बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह पूर्णतः अनुकूल रहेगा। यदा-कदा यात्राएं होती ही रहेंगी। इन यात्राओं पर आप धन का काफी व्यय भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अचानक उन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आप अपने परिवार के साथ किसी सुरम्य पर्यटन स्थल की यात्रा करेंगे। विदेश यात्रा के प्रबल योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने जीवनसाथी के सहयोग से धार्मिक कृत्यों में संलग्न रहेंगे तथा नित्य प्रति सन्ध्या-वन्दन आदि क्रियाओं का सम्पादन करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें (ताँबे के लोटे मे रोली-चावल, लाल पुष्प डालकर सूर्य को जल दें।)
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें और वृहस्पतिवार का व्रत करें।
- विष्णुसहस्त्र नाम का पाठ करें एवं अपने घर में लड्डू गोपाल की मूर्ति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2022

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में अष्टम भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में षष्ठम भाव में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आमदनी के नये- नये स्रोत मिलने की संभावना है। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगें। नौकरी करने वालों को अपने कार्य स्थल पर ही मान सम्मान बढेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है। परन्तु षष्टस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उसका नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। 13 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि भवन वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा संबंधियों के, मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि के कारण आपको अनायास धन प्राप्ति के योग बनेंगे। ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप के पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो सकता है। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण समाजिक प्रतिष्ठा मे बढोतरी होगी।

13 अप्रैल के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। आपके ससुराल पक्ष के लोग आप से प्रसन्न रहेंगे और उनके साथ आपका संबंध मधुर बने रहेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम स्थान का गुरु आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि उत्पन्न करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय विशेष अनुकूल है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के स्वास्थ्य के मामले में सतर्क रहें। अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं जिससे उनकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित हो सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे व आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका समय प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। छठे स्थान में शनि के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए समय अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। यह वर्ष रोजगार प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। इस वर्ष आप अपने सारे प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष यात्राएं बहुत होंगी। 13 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगें।

यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा 29 मार्च के बाद नवम स्थान का राहु आपको लम्बी यात्रा भी करा सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा करेंगे। 13 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे। जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथशाला या गरीब बच्चे के पढाई-लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें या सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरू मेष राशि में नवम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में सप्तम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो यह वर्ष उत्तम फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ सकता है परन्तु 22 अप्रैल के बाद आप निश्चित रूप से अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। सप्तम स्थान में स्वगृहीशनि के प्रभाव से आपकोव्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

किसी के साथ साझेदारी में कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रु रुकावट डालने में असमर्थ रहेंगे। आप अपनी सूझ-बूझ से कार्य करते रहेंगे। नौकरी में मान सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में कुछ हद तक सफल रहेंगे परन्तु अनावश्यक धन व्यय के योग भी बने हुए हैं। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अप्रैल के बाद नवम स्थान का गुरू आपकी आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। गुरू ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप स्वजनों से मिलकर बांछित धन प्राप्ति हेतु प्रयास करेंगे। आपके घर पर मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे तथा साथ ही आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अष्टम स्थान का गुरुवर्षारम्भ में कुछ स्वास्थ्य व सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं उत्पन्न करेगा। 22 अप्रैल के बाद ये चिन्ताएं पूर्णतः समाप्त हो जायेंगी।

तृतीय स्थान पर गुरू की दृष्टि के कारण समाजिक प्रतिष्ठा मे बढोतरी होगी। आपको मित्रों, सम्बन्धियों एवं सहयोगियों व भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा। यह वर्ष आपके छोटे भाई-बहनों की उन्नति के लिए अत्यन्त शुभ है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढेंगे। वे अपनीसूझ-बूझ वआत्मविश्वास के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

22 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि होगी। उस समय आपके बच्चे का समय अनुकूल होगा। नव विवाहित व्यक्तियो को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे को शारीरिक कष्ट से मुक्ति मिलेगी। आपके दूसरी सन्तान के लिए भी यह वर्ष अनुकूल है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शिक्षण संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुऔर लग्न स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। अपने खान-पान के साथ साथ आपनी दिनचर्या पर भी ध्यान दें। सुबह-सुबह व्यायाम करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

22 अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना सुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से विशेष शुभ नहीं रहेगा।यदि आप उच्च शिक्षा हेतु उच्च संस्थान मे प्रवेश पाना चाहते हैं तो 22 अप्रैल के बाद आपका प्रवेश हो जाएगा।

जिन जातकों की नौकरी अभी नहीं लगी है उन लोगो को कुछ समय के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। व्यापारिक क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए आप नये प्रकार की योजनाएं बनाएंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा हो सकती है। जिस पर आपका अत्यधिक धन व्यय होगा।

22 अप्रैल के बाद हर प्रकार की जैसे छोटी, लम्बी, ऐतिहासिक स्थल, पर्यटन स्थलीय व प्रसिद्ध तीर्थ की यात्राएंहोने के साथ साथ भाग्यवर्धक विदेश यात्रा के भी योग बनेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगापरन्तु 22 अप्रैल के बाद आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा। आप अपने गुरूजनो का संमान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। कुछ समय के लिए आपके अन्दर वैराग्य का भाव भी उत्पन्न हो सकता है।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें, और उसके सामने लक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- लक्ष्मी जी का मन्त्रः-ऊँ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में सप्तम में और राहु मीन राशि में अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में गुरू नवम में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वन्दिओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं।

अप्रैल के बाद वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भुमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। व्यवसायिओं को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्षारम्भ में आप भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खर्च करेंगे। अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है।

परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो अनुभवी व्यक्तियों का परामर्श ले सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर निवेश के लिए अनुकूल नहीं है। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद पारिवार के लिए समय और अनुकूल हो रहा है। परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। आपको वरिष्ठ सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। आप प्रसन्न रहेंगे। परिवार के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पिता के लिए यह समय अच्छा है परन्तु ससुराल पक्ष के लिए समय विशेष अच्छा नहीं है।

संतान

संतान के लिए वर्षारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। बच्चों का भाग्य उदय होगा। वे उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। अप्रैल के बाद उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद अष्टम स्थान का राहु अचानक ही स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में सावधानी बरतें। कभी कभी शारीरिक कमजोरी महसूस होगी। व्यायाम व योगाभ्यास आपके लिए लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू के दृष्टि प्रभाव से शिक्षा के लिए अच्छा योग बन रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत रहेंगे।

अप्रैल के बाद षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को आत्मविश्वास बढ़ेगा। रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में तृतीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से लम्बी यात्रा भी होगी। ये यात्राएं आनन्ददायक व भाग्यवर्द्धक होंगी। यात्रा के दौरान अच्छे मित्र की प्राप्ति होगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर समस्या उत्पन्न कर सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। पंचम स्थान पर गुरू ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके मन में ईश्वर भक्ति का भाव उत्पन्न होगा।

- शनिवार के दिन नीली वस्तुओं का दान करें एवं राहु मन्त्र का जाप करें।
  (राहु मन्त्र -ओम् भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः)
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि अष्टम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुदशम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि एकादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि एकादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला परिणाम देने वाला रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए नई योजना भी बनाएंगे जिससे व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी तथा इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 मार्च के बाद अष्टम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्यों में कुछ रुकावटें आ सकती हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी संभाल लेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। एकादश स्थान के गुरुआय बढ़ा सकते है। आपको बड़े लोगों या वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न एवं आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा परन्तु आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

मई के बाद एकादश स्थान में गुरुके गोचरीय प्रभाव से रुका हुआ धन मिल सकता है, साथ ही आपके धनागम में भी वृद्धि होगी, जिससे आप उचित बचत करने में सफल रहेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद प्रेम प्रसंग में सफलता प्राप्त होगी। तृतीय स्थान में गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अत्यधिक परिश्रमी होंगे एवं अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य ही रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मानसिक चिंता जैसी छोटी मोटी परेशानियां होती रहेंगी।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आप का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

मई के बाद पंचम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्षारम्भ में आप जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। मई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। यात्रा के अंतराल में या वाहनादि चलते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे, परन्तु मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढेगा। आप भगवान की पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कार्य संपन्न करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार हनुमान जी को चोला चढाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरु हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(25/03/2015 - 03/04/2019)

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 25/03/2015 को आरंभ और 03/04/2019 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अध्यात्म की उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। आप पुराणों और आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन भी करेंगे।

अंर्तदशा :– चन्द्र – सूर्य
(03/10/2018 - 03/04/2019)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 25/03/2015 को प्रारंभ होगी और 03/04/2019 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 03/10/2018 से प्रारंभ होकर 03/04/2019 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य सर्वाधिक बली ग्रह है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। वाक्शक्ति प्रबल रहेगी, परंतु आर्थिक तंगी और निराशा की आशंका है। सट्टेबाजी या अन्य माध्यम से अचानक लाभ हो सकता है।

जीवन में कुछ अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं जो आपकी स्मृति पर अमिट छाप छोड़ेंगी। अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न टोटके लाभदायक हैं।

1. दूध और शहद का सेवन करें, अग्नि में दूध अर्पित करें।
2. गरीबों को आटा, गुड़ और तांबे का दान करें।
3. किसी नदी, नहर आदि में तांबे के सिक्के डालें और उन्हें प्रवाहित होते देखें।

महादशा :- मंगल
(03/04/2019 - 03/04/2026)

मंगल की महादशा 03/04/2019 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 03/04/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(03/04/2019 - 30/08/2019)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 03/04/2019 को प्रारंभ होकर 30/08/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं। सब सुख-सुविधाएं, धन उपलब्ध रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र से संबद्ध हो सकते हैं, बहुत से लोगों का भला करेंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। आप साहसी होंगे। घरेलू सुख में मामूली कमी आ सकती है। अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं। कुछ अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके अपने भाइयों से संबंध मधुर रहेंगे। आपके पिता सम्मानित होंगे, सुखी रहेंगे और धन प्राप्त करेंगे। माता में विरोधियों को परास्त करने की शक्ति मौजूद रहेगी। भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा। उनका कारोबार चमकेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो निवेश से लाभ प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्थिति मजबूत होगी। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को कुछ नुकसान हो सकता है या अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पैरों में मामूली चोट लग सकती है। यात्रा के समय सावधानी आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(30/08/2019 - 17/09/2020)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 30/08/2019 को प्रारंभ होकर 17/09/2020 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से भी आय होगी। कटुवचन से परिवार की या व्यापार की शांति भंग हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, व्याधि हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपकी माता के

सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों की यात्राएं हो सकती हैं, उनके खर्चे बढ़ेंगे, गुप्त शत्रु परास्त होंगे, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, निवास में परिवर्तन हो सकता है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर से सेवारत हैं तो तरक्की करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता धनार्जन करेंगे जबकि व्यापारियों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन और लाभ का संकेत है।

आपको खानपान का ख्याल रखना चाहिए। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे या मुख की मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(17/09/2020 - 24/08/2021)

आपकी मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/09/2020 को प्रारंभ होकर 24/08/2021 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपके शत्रु परास्त होंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं। धार्मिक स्थलों की यात्रा होगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; मातहतों और किरायेदारों से लाभ होगा। रोज़गार के नये अवसर मिलेंगे, कार्यालय में सुविधाएं बढ़ेंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। अच्छे मित्र बनेंगे। अचानक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी को चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे; उन्हें घरेलू सुख मिलेगा। माता की लंबी यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपके भाई-बहन कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, स्थान में परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं और मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर आंखों और पैरों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र और हल्दी का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(24/08/2021 - 03/10/2022)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/08/2021 को प्रारंभ होकर 03/10/2022 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धनी बनने का संकेत है। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। घर में सुख-शांति आपके प्रयास से बनी रहेगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। विदेश की यात्रा कर सकते हैं, वहां से लाभ होगा। तबादले और प्रोन्नति का संकेत है। सम्मान और धन में वृद्धि होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति मौजूद रहेगी।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। उनका जनसंपर्क बढ़ेगा। आपके भाई-बहनों की आय में वृद्धि होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी, विरोधियों को परास्त करने की क्षमता रहेगी।

आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उनके जीवन में कुछ परिवर्तन और यात्रा हो सकते हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारी अपने कार्य का विस्तार करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए पंचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(03/10/2022 - 30/09/2023)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 03/10/2022 को प्रारंभ होकर 30/09/2023 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में लाभ होगा। साझेदारों के साथ विचार-विनिमय बढ़ेगा। व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। विदेश भी जा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में उत्थान होगा। किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। घरेलू सुख मिलेगा। ज्योतिष, कविता, धर्म और गणित में रुचि बढ़ेगी। संचार माध्यम और व्यापार में सफल हो सकते हैं। प्रसन्नचित्त और स्थिर बुद्धि वाले होंगे; बहुत से मित्र रहेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपके पिता धन कमाएंगे। माता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। उन्हें पुस्तकों से प्रेम होगा। भाई-बहनों को निवेश से और शिक्षा से लाभ होगा। उनकी यात्राए हो सकती हैं, उच्चशिक्षा में रुचि होगी, धनी बनेंगे।

आपकी संतान को पत्र व्यवहार से लाभ होगा; जनता से संपर्क बढ़ेगा। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा, अनुबंध पर हस्ताक्षर, लेखन या प्रकाशन से लाभ का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं की समृद्धि बढ़ेगी। व्यापारियों को लाभ में बढ़ोत्तरी मिलेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को चारा खिलाएं।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(30/09/2023 - 26/02/2024)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/09/2023 को प्रारंभ होकर 26/02/2024 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में धन का संचय हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। आपकी अंतर्ज्ञान शक्ति उत्तम है। अध्यात्म में रुचि लेंगे। विरासत, वसीयत, उपहार आदि से धनागम हो सकता है। कटु वचन न बोलें, अन्यथा परिवार की शांति भंग हो सकती है। स्वास्थ्यवर्धक, शुद्ध भोजन ही ग्रहण करें। दूसरों पर निर्भरता में कमी करें।

आपके जीवनसाथी के धन का संचय होगा; जीवन में खुशियां मिलेंगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन समस्याओं के समाधान में दृढ़संकल्प का परिचय देंगे; उनके परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे, कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी; माता से संबंध उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता पाने के लिए परिश्रम करेंगे; संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। घाव, चोट आदि का ठीक से इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्तों को भोजन दें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(26/02/2024 - 27/04/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 26/02/2024 को प्रारंभ होकर 27/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप जीवनसाथी, संतान और मित्रों से सुख पाएंगे। प्रसिद्धि और धन का संकेत है। कुछ यात्राएं हो सकती हैं। सरकार से सहयोग मिलेगा। ज्ञानार्जन के लिए समय शुभ है। विज्ञापन जगत में सफलता मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। ललित कला, नाटक आदि में रुचि होगी। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चपद, धन और सुखद घरेलू जीवन का संकेत है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा ; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा, विवाह हो सकता है, विभिन्न साधनों से धनलाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी ; परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो धनी बनेंगे; निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो तरक्की करेंगे; सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(27/04/2025 - 02/09/2025)

आपकी मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 27/04/2025 को प्रारंभ होकर 02/09/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी अप्रत्याशित स्थान से धन प्राप्त हो सकता है। सेवानिवृत्त होने वालों को पेंशन, ग्रेच्युटी आदि प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी जिससे आपको भी लाभ पहुंचेगा। शिक्षा उत्तम होगी। धन प्राप्त हो सकता है। वाक्शक्ति से दूसरों को प्रभावित करने में सफल होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी, उच्चपद प्राप्त होगा। पिता के खर्चे बढ़ेंगे, शत्रुओं पर विजयी होंगे। भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन एवं उच्चपद प्राप्त होंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफलता, सरकार से लाभ, वाहन, अचल संपत्ति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो संचार माध्यम से लाभ होगा; लघु यात्राएं होंगी। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पाचन और प्रजनन तंत्रों के रोगों से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए गुड़, घी और तांबे का दान दें।

अंर्तदशा :- मंगल - चन्द्र
(02/09/2025 - 03/04/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2019 को प्रांरभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 02/09/2025 को प्रारंभ होकर

महादशा :- राहु
(03/04/2026 - 03/04/2044)

राहु की महादशा 03/04/2026 को आरम्भ और 03/04/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान् होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रैवेल एजेण्ट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर- विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़

आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन, समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अंतरदशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरू होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(03/04/2026 - 14/12/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/04/2026 को प्रारंभ होकर 03/04/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 03/04/2026 को प्रारंभ होकर 14/12/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। द्वितीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके झगड़े, या अदालत में खर्चे आदि का संकेत है। आप अधिकारियों को नाराज़ कर सकते हैं, जिससे धन की हानि होगी। कटु वचन के कारण परिवार में अशांति हो सकती है, जिस कारण आप घर से अधिकतर दूर रहना पसंद कर सकते हैं। आपकी भावमुद्रा बीमार व्यक्ति के समान हो सकती है। नेत्ररोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(14/12/2028 - 10/05/2031)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/04/2026 को प्रारंभ होकर 03/04/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 14/12/2028 को प्रारंभ होकर 10/05/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धर्म के आलोचक हो सकते हैं; पापकर्म में रुचि हो सकती है। अय्याशी का जीवन व्यतीत कर सकते हैं, जिससे बाद में पछताना पड़ सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000

जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

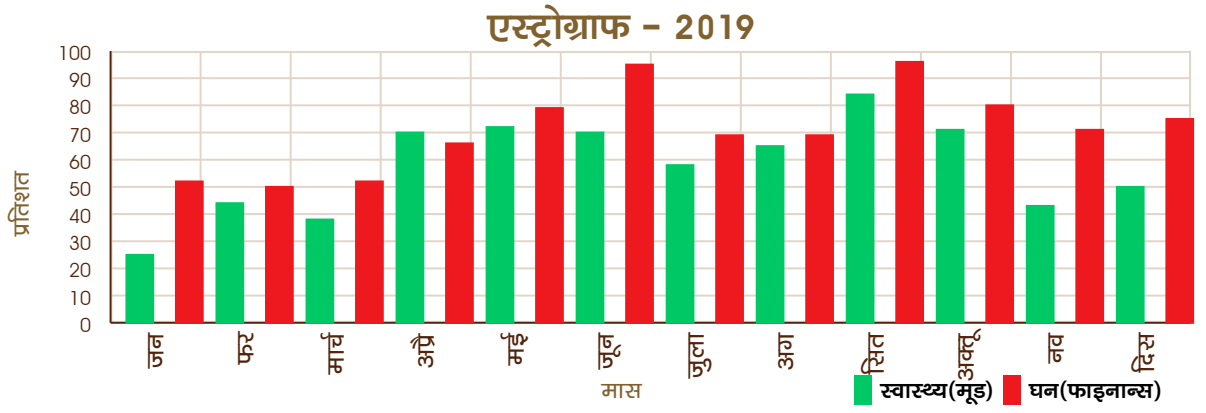

एस्ट्रोग्राफ - 2019

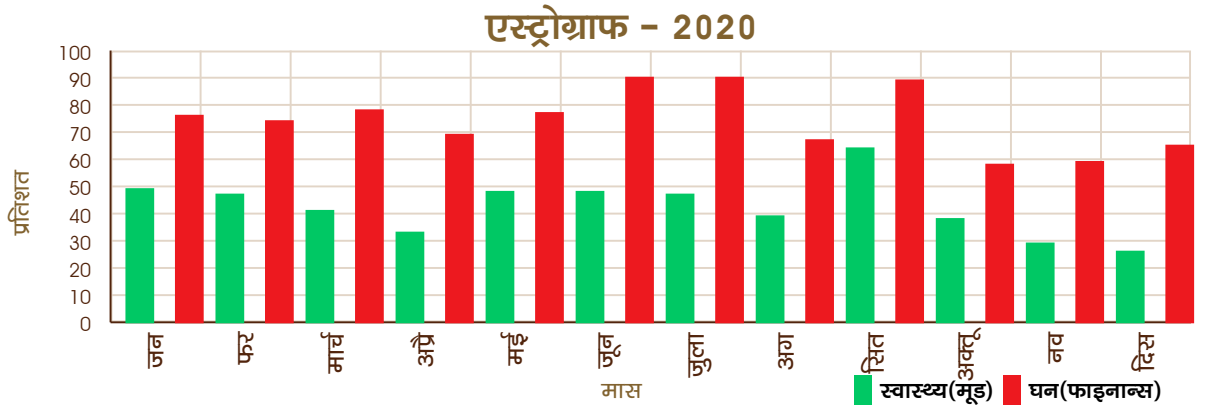

एस्ट्रोग्राफ - 2020

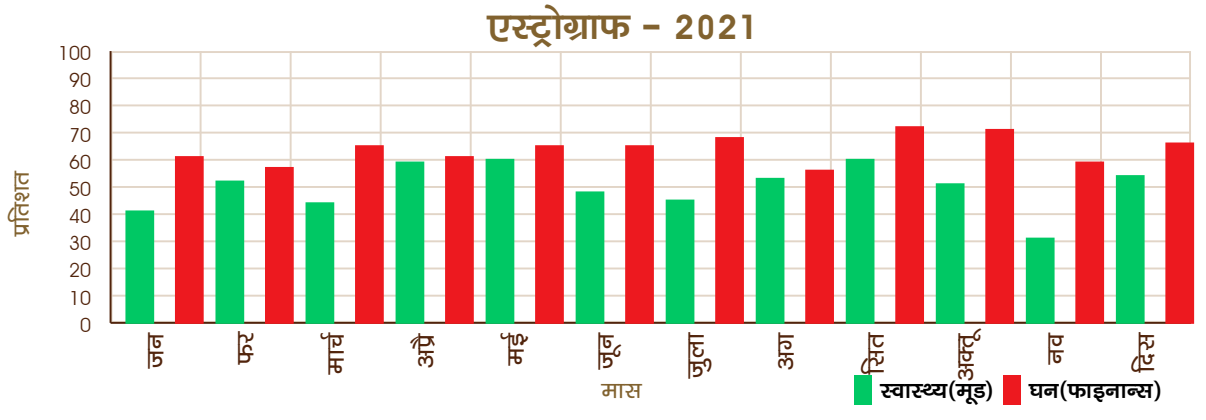

एस्ट्रोग्राफ - 2021

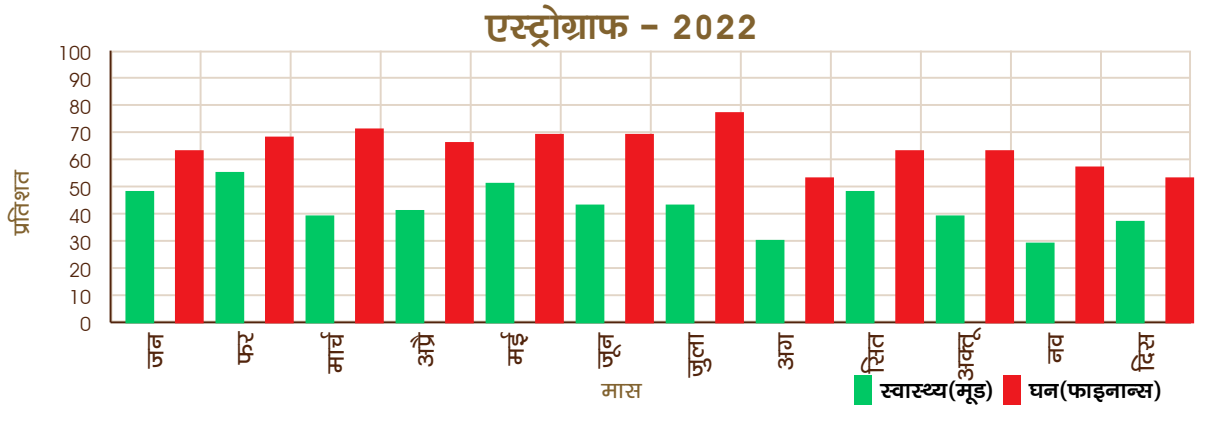

एस्ट्रोग्राफ - 2022

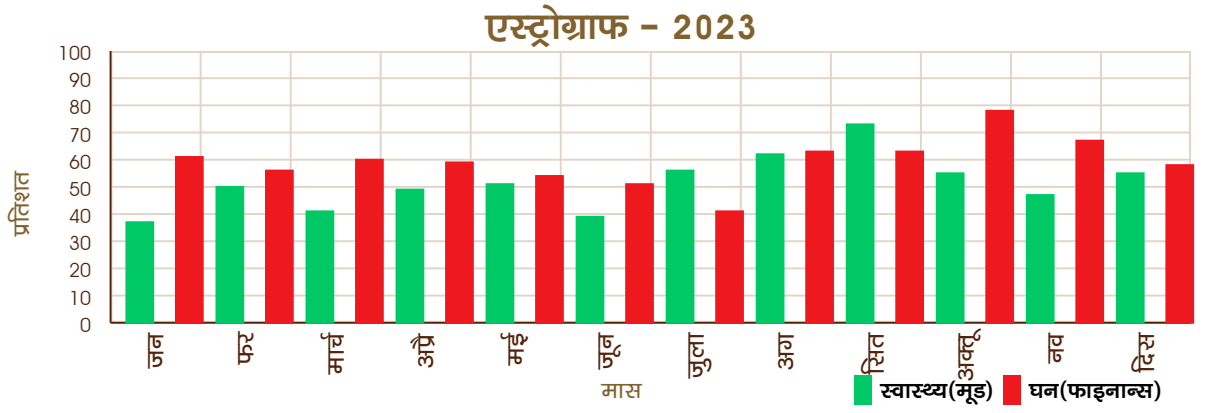

एस्ट्रोग्राफ - 2023

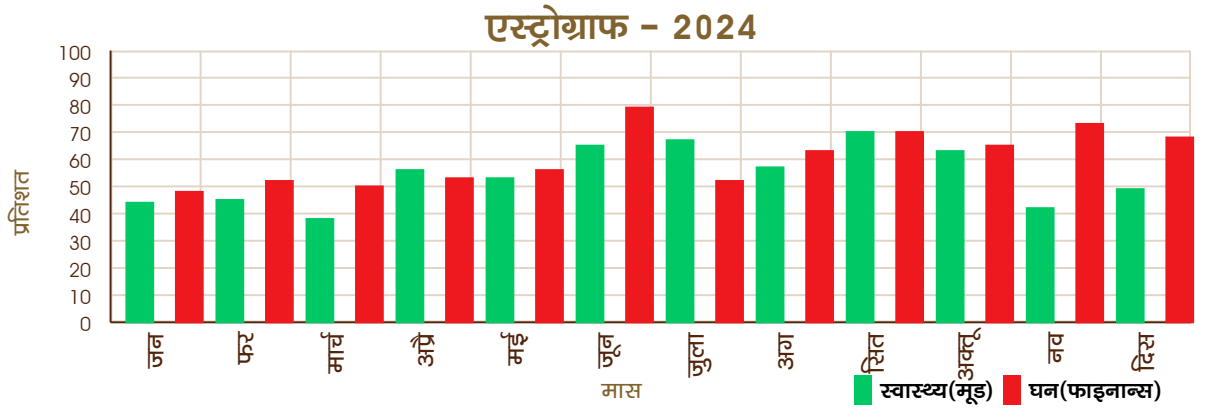

एस्ट्रोग्राफ - 2024

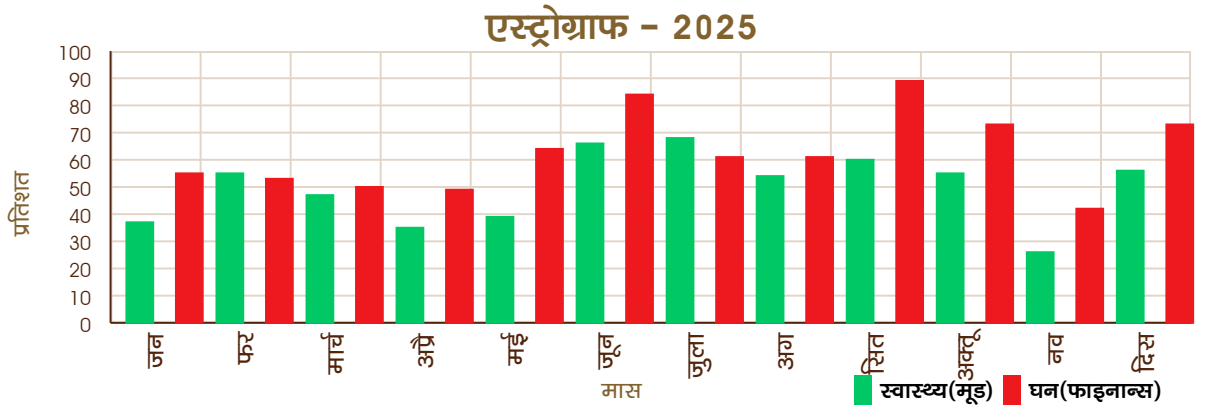

एस्ट्रोग्राफ - 2025

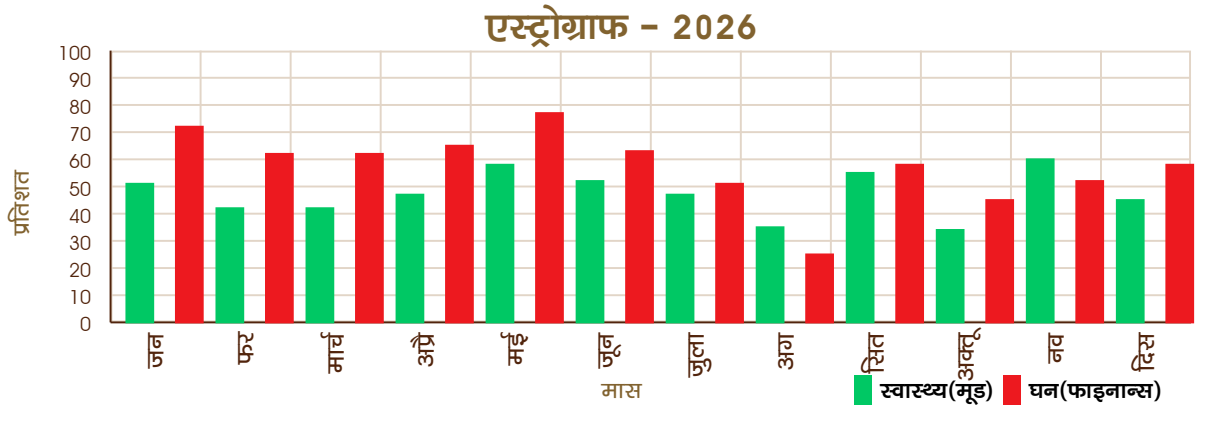

एस्ट्रोग्राफ - 2026

एस्ट्रोग्राफ – 2027

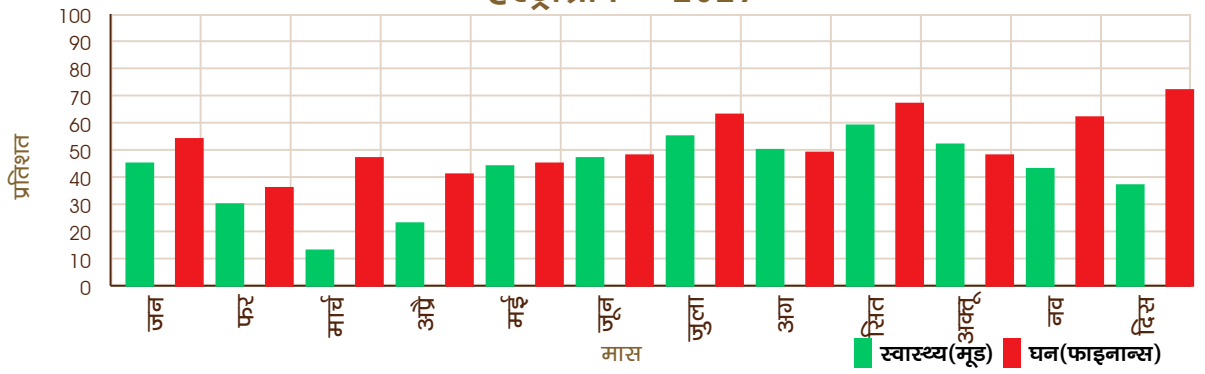

एस्ट्रोग्राफ – 2028

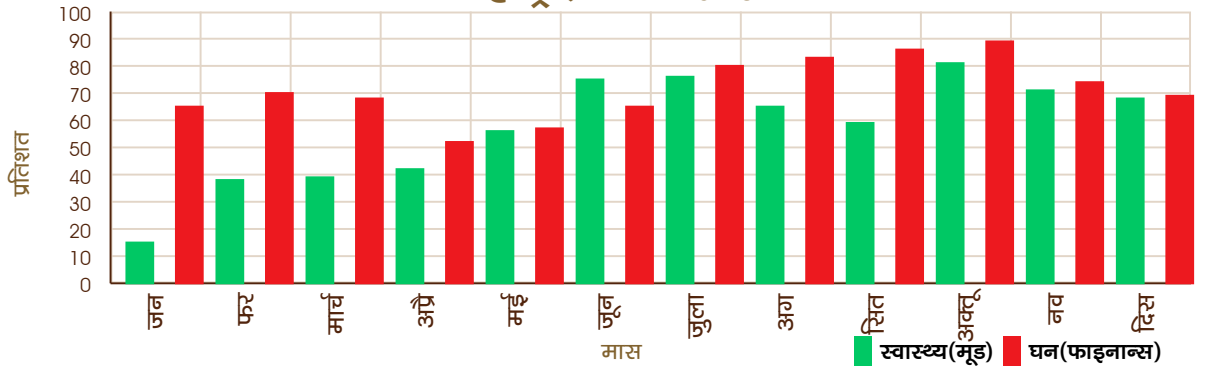

एस्ट्रोग्राफ – 2029

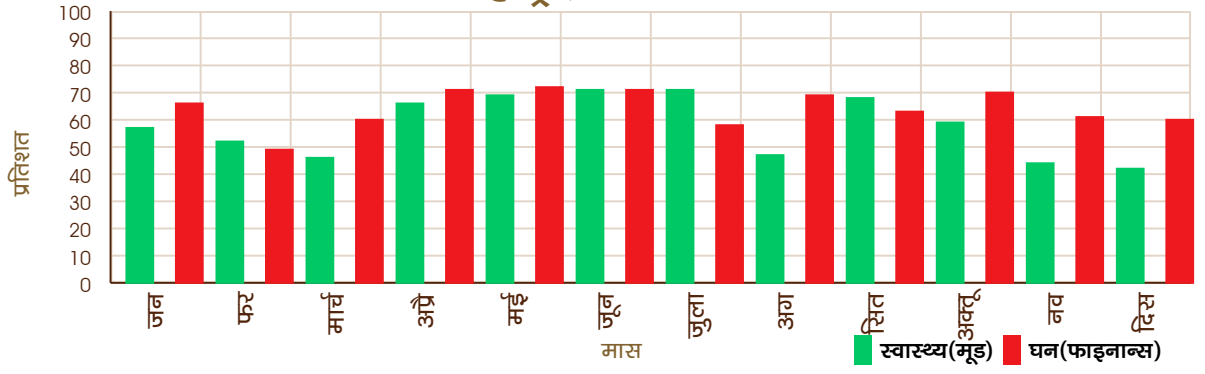

एस्ट्रोग्राफ – 2030

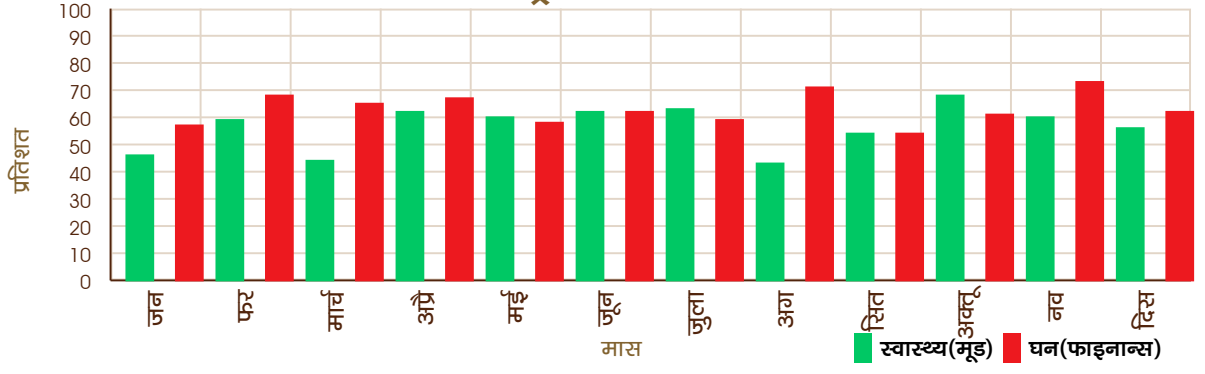

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल,गुरु,राहु,केतु योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

नीचकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
पंचादिभिर्जनपदप्रभवोऽपि सिद्धो
हीनैः क्षितीश्वरसमो न तु भूमिपालः।।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में पांच या उससे अधिक ग्रह स्वराशि, उच्चराशि, मूल त्रिकोण में हो, तो ऐसा व्यक्ति सामान्य कुल में उत्पन्न होकर भी राजा के समान सुखों का उपभोग

करता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल,गुरु,राहु,केतु योग की संभावना : 242 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह राजयोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। ज्योतिष शास्त्र में यह सर्वश्रेष्ठ राजयोग माना जाता है। इसके प्रभाव से जीवन में आप उच्च श्रेणी के सुखों का उपभोग करेंगे। समाज में आप प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। अपने परिश्रम, योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से आप सामान्य स्तर से उच्चस्तर प्राप्त करने में सफल होंगे। देश-विदेश में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा होगी।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।

सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्यातारव्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,बुध योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

उभयचारिक योग

''व्ययधनयुतखेटै दिनेशादुभयचारिकयोगः।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्म काल सूर्य से द्वादश और द्वितीय भाव में ग्रह स्थित हो तो "उभयचारिक" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "उभयचारिक" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप सहनशील, स्थिर बुद्धिवाले, समृद्धिशाली, बलशाली, एकहरा शरीरवाले, मध्यमकद के सीधी दृष्टिवाले, धन-धान्य एवं लक्ष्मी से युक्त होंगे।